

नववर्ष स्वागत विदेशींक

जनवरी - 2003

मूल्य : 18/-

NOT FOR SALE

# महातंत्र-यंत्र

विज्ञान

पुस्तकालय

जीवन का वरदान दीक्षा

वर्णाणशि श्रिवेद साथना

लक्ष्मी पुरुषचरिता



नववर्ष जय हो जय हो जय हो



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

आनंद भद्रा कल्याणी यन्त्र विशेष  
नववर्ष लोडन की सर्वतोन्मुखी उत्सव प्रगति और भारतीय गृह विद्याओं से सम्बद्ध मासिक प्रकाशन

# श्रीलक्ष्मीप्रकाश

॥ ॐ पदम् तत्वाय नादायणाय गुरुकृत्या तमः ॥



## साधना

गणपति साधना	37
आसुरी साधाकल्प	49
तारा साधना	55
बगलामुखी साधना	56
भूत साधना	57
सम्मोहन साधना	58
सौन्दर्य साधना	59



## सद गुरु देव

सदगुरु प्रवचन	5
गुरु वाणी	44
<b>स्तम्भ</b>	
शिष्य धर्म	43
नदीओं की वाणी	71
मेरे समय है	62
वराहामहीन	63
जीवन भासिता	69
इस मास दिल्ली में	80
एक दृष्टि में	86

वर्ष 23 अंक 1  
जनवरी 2003 पृष्ठ 88



## विशेष

साधना	66
शनु वाधा वाधा निवारण	66
साधना	67
लक्ष्मी पुरुचरण साधना	68
Sammohan	82
Sadhana	83
Vartali Sadhana	84
Rishikesh Sadhana	85
Ketu Sadhana	85



## स्तोत्र

शिव स्तोत्र 75

:: सम्पर्क ::

शिद्धाश्रम, 306 कलाट एन्ड लेव, पीलमदुर, विहारीगढ़, उत्तर प्रदेश 222216, फ़ोन: 011-7182246, 011-4391-011-7196700  
में त्र-त्र-यत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली नारा, हैडकॉट कोल्डनी, जलपुर, 24200 (उत्तर प्रदेश) फ़ोन: 0291-4322429, फैक्टरी: 0291-432910

WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [nityv@siddhashram.org](mailto:nityv@siddhashram.org)



प्रकाशक एवं स्वामित्व  
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली  
द्वारा  
ग्रन्थ आपाट फ़िल्म्स  
C-178 नवरात्रा इन्डस्ट्रीज़ एन्ड  
फ़िल्म्स केन्द्र 2, नई दिल्ली  
मेरे नाम पर  
पूर्व-नव-यत्र विज्ञान  
शाडकोट कालनी, जाह्नपुर मेरे  
प्रकाशित।

## मूल्य (भारत में)

एक प्रति : 18/-  
वार्षिक : 195/-

## नियम

पवित्र से प्रकाशित रही रघुनाथों का अधिकार पवित्र का है। इस 'मंत्र-नन्द-यंत्र निजान' पवित्र में प्रकाशित लेखों से सम्बद्ध कर सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तब-हुतवें करने वाले पाठक पवित्र के प्रकाशित पुरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, रघुनाथ या घटना का किसी तरे के केह सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाए, तो उसे संयोग समझें। पवित्र के लेखक मुख्यकड़ साधु-मंत्र भी हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पवित्र में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाच-विवाद या तर्क साम्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुख्यक या सम्बद्धक निष्पेक्ष होंगे। किसी भी सम्बद्धक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाच-विवाद में जीवयुग न्यायालय ही साम्य होगा। पवित्र में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कर्ता से भी प्राप्त कर सकते हैं। पवित्र कायात्तर्य से मंगाने पर हम अपनी तरफ से यामायिक और सभी सामग्री उच्चवाच यंत्र भी जाते हैं, पर किर भी उसके बारे में असती या नकली के बारे में अद्यता अभ्यास होने या न होने के बारे में उमारी निष्पेक्षारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पवित्र कायात्तर्य से मंगाने, सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाच-लेखक साम्य नहीं होता। पवित्र का वाक्यिक शुद्ध वर्णन में ९८२/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपुरिलायक करणों से पवित्र को वैमायिक या वैद करना पड़े, तो जिससे भी उक्त आपत्ति प्राप्त हो सकते हैं, उसी में वैमायिक सम्बन्धता जगवा दो वर्ष, तीन वर्ष या प्रबद्धीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इससे किसी भी प्रकार की आपत्ति या अलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पवित्र में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, साने-लाभ की निष्पेक्षारी साधक की सर्व की सेवी तथा साधक कोई भी ऐसी उपसना, जप-या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं क्रान्तिकारी क्षेत्रों के विषयों से। पवित्र के प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संवादी लेखकों के विवाद मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवश्यक पवित्र के कार्यालयियों की तरफ से देखा है। पाठकों की भाग पर इस अंक वे पवित्र के विष्ट से लेखों का भी ज्ञान का त्वयी सम्बन्ध किया जाया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सके। साधक या लेखक अपने यामायिक अनुभवों के अध्यार पर जो नैति, तात्त्व या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के हतर हो) बताते हैं, वे ही होंगे जो ज्ञान-हस तम्बन्ध में आलोचना करना चाहिए है। आवरण गुण पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, हस सम्बन्ध में सारी निष्पेक्षारी फोटो भेजने वाले कोई व्यक्ति उच्चकार अधिकार की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य वह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सके, यह तो धैर्यी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार वर्ती कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुणोंवाले या पवित्र कायात्तर इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की निष्पेक्षारी बहुत नहीं करें।

## प्रार्थना

यस्याशया जगत्सृष्टा  
विरचिः पातको हरिः  
संहता कातृदास्यो  
तस्मै श्री गुरवे नमः

निष्पक्षी आज्ञा से ब्रह्मा सुहि की रचना करता है, विष्णु इसका पालन करते में समर्थ होता है और महाकाल सद्गुर संहार करता है उस परम सत्ता का नाम गुरु तत्त्व है, उस सर्वोच्च सत्ता को मैं ब्राह्मवार नमन करता हूं।

## ★ सच्चा भक्त हनुमान ★

देवधर्म नारद एक दिन श्री कृष्ण के आवास पर चले गये। देखा कि स्विमणी अकेली बैठी है और श्री कृष्ण ध्यान में मग्न है। जैसे ही ध्यान से निष्पत हुए तो नारद ने पूछा - श्रीकृष्ण आप किसका ध्यान कर रहे थे? उत्तर था - जो मुझे अपने हृदय में बिटाये रखते हैं। परन्तु यह भी तो बताइए कि वे इस योग्य क्यों कर रहे हैं? नारद ने जैसे ही प्रश्न किया, श्रीकृष्ण ने देवधर्म से प्रश्न पूछने प्रारम्भ कर दिये। पहला प्रश्न था --

मवसे बड़ा कौन है?

नारद बोले - पृथ्वी!

श्रीकृष्ण - पृथ्वी कैसे बड़ी हुई? वह तो शेष नाग के कन पर टिकी है। नारद फिर शेषनाग। श्रीकृष्ण बोले - शेषनाग तो शिव के हाथों का कंगन है। नारद - तो फिर बड़े हुए, शिव श्रीकृष्ण बोले - शिव को तो कैलाश पर्वत ने रहने को स्थान दिया है। नारद तब फिर कैलाश पर्वत। श्री कृष्ण परन्तु कैलाश को तो रावण ने उठा लिया था।

नारद सकपकाये और पूछने लगे - तो फिर क्या रावण मवसे बड़ा था?

श्री कृष्ण-रावण को बालि अपनी कौख में दबाये रखा था। नारद - तब फिर बालि।

श्रीकृष्ण बोले - बालि को तो राम ने मार डाला था। नारद - फिर राम नहीं श्रीकृष्ण बोले - बालि को तो राम हनुमान की कृपा में मार देके थे। नारद बोले - तो क्या फिर हनुमान? श्रीकृष्ण बोले - जो हाँ वही मक्त शिरोमणि हनुमान जिन्होंने अपना हृदय चौर कर दिखाया था। इसी प्रकार मुझे भी उस मक्त का ध्यान रहता है जो मुझे लिन रात्रि अपने हृदय में बिटाये मेरा ही स्मरण करते रहते हैं।



सामाजिक कथो सूर्य की सत्ता

मनुष्य अपनी जीवन सत्ता में कितना विस्तार कर सकता है और अपने सूर्य को कैसे विश्राट बना सकता है। उसके लिए उसे सूर्य विज्ञान के मूल व्यवस्था को अपने भीतर उतारना आवश्यक है। सूर्य विज्ञान के सिद्धान्तों को नवीन विन्दन के साथ स्पष्ट करता हुआ सदगुस्वेच का यह नव वर्ष उपहार उन्हीं की विद्यवाणी में-

मनुष्य का शरीर अपने आप ने इन्हाँ विश्राट है कि उस विश्राट में एक सूर्य नहीं असंख्य सूर्य समाहित हो सकते हैं, एक सूर्य की कल्पना तो मामूली बात है, असंख्य सूर्य समाहित हो सकते हैं अगर मनुष्य के शरीर में एक प्राणोत्थान किया हो जहाँ तो आवश्यकता है प्राणोत्थान किया की। तो क्या प्राण हार्ट या हृदय से अलग है।

हृदय तो विलकुल अलग छोड़ देता है। हृदय का प्राणों से कोई संबंध ही नहीं। तो न मूलभूत तथ्य है-हृदय, प्राण और मन। केवल हृदय की सत्ता को ही विज्ञान समझ पाया हो मगर मन की सत्ता को तो समझ ही नहीं पाया कि शरीर में मन कहाँ पर है। पूरा चिकित्सा विज्ञान बहुत ऊँचाई पर बहुचरण के बाद भी, शरीर के पूर्व-पूर्व को खोलने के बाद भी वह वह नहीं बना पा रहा है कि मन कहाँ पर है, कौन सा मांस का पिछ है जिसे मन कहत है।

अब यह तो नहीं कह सकते कि मन होता ही नहीं मन तो है। मेरा मन है इस समय अचैतन्य जाने को और इस समय मेरा मन मिटाइ खाने का हो रहा है। आखिर कुछ न कुछ तो है जो हो रहा है। फिर वह मन है कहाँ और विज्ञान विज्ञान कहता है मन तो होता ही नहीं। लेकिन सब व्यक्ति कहते हैं कि मेरा मन आज बड़ा उत्तम है, आज कुछ अच्छा नहीं लग रहा है। आज मेरा मन कहीं बढ़ा चुम्ने का हो रहा है। तो वह जो किया हो रही है वह कहाँ से हो रही है?

और जिस प्रकार विज्ञान विज्ञान मन को समझ नहीं पाया है उसी प्रकार प्राणों को भी समझ नहीं पाया है। प्राण जीवन की धड़कन नहीं है वह नो हृदय है। हृदय धड़क रहा है तो जीवन चल रहा है।

मगर क्या जब हृदय धड़कना थेद कर देता है तो प्राण समाप्त हो जाते हैं? ऐसे तो नहीं समाप्त होते। इसलिए समाप्त नहीं होते क्योंकि परकाया प्रवेश में तो हृदय धड़कता ही नहीं और शरीर फिर भी जिंदा रहता है और प्राण भी जिंदा रहते हैं। इसलिए तीनों भी जैव अलग अलग हैं। हृदय अलग है, प्राण की जायति देने की किया से ही सूर्य की शरीर में समाहित करने की किया होती है। मैं बहुत सरल भाषा में आपको समझा रहा हूँ। क्योंकि विषय तो इतना गूढ़ है कि इसको संस्कृत में भी समझाया ही नहीं जा सकता।

ऐसी कोई युक्ति, ऐसा कोई मत्र, ऐसी कोई भी वेतना जिसके माध्यम से सूर्य को ज्योति शरीर में समाहित करेंगे तो शरीर में समाहित होने ही एक विस्फोट होने लगेगा। सूर्य तो जहाँ है वहाँ टुकड़े होते ही हैं।

यदि आप एक आत्मी शीणा लेकर सूर्य के सामने रख दें तो उस शीशे से छन कर जो कृष्ण किरणें पैदा होगी तो उस

आग से कागज का टुकड़ा जलने लग जाएगा। आप खड़े हो जाएं थोड़ा बाहर तो पाव जलने लग जाएंगे। यह जो आग की सत्ता है यह अपने आप में सूर्य का तेजस्वी रूप है। उस सूर्य की हम अपने प्राणों में इकट्ठा कर सके एकत्र कर सके। और ज्योहि ऐसा होगा तो प्राणों के अपने आप में टुकड़े होने नहींगे। प्राणों का विश्वदन शुरू हो जाएगा और जब प्राणों का विश्वदन होगा तो प्राण पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाएंगे। और पूरे ब्रह्माण्ड में फैलने की क्रिया परा विद्या कलाती है।

ब्रह्माण्ड की कोई भी इनचल, कीमती घटना घटी उस घटना को देख लेना, मुनना और समझना यह पराविद्या का मूलभूत ग्वरुप है। मगर इसके लिए जरूरी है कि सूर्य को शशीर में स्थापन करें, प्राणों में स्थापन करें और स्थापन करके प्राणों का विश्वदन शुरू करें।

क्या कोई ऐसी युक्ति है? क्या आम आदमी सूर्य मण्डल को अपने शशीर में समाहित कर सकता है?

और मैं कह रहा हूँ कि आग आदमी ही ऐसा कर सकता है। जो सरल है, बिनकुल सरल व्यक्ति ही सूर्य को अंदर, स्थापित कर सकता। जो एकदम सरल व्यक्ति है जिसे जान ही नहीं है कोई वह भी सहूँ धूमाकर रेडियो चला देगा। उसको चलाने के लिए उसे कोई रेडियो बनाने की पद्धति सीखने की ज़रूरत नहीं है। रेडियो पर जाना सुनने के लिए उसकी सारी मशीनरी को जोड़ना सीखने की ज़रूरत नहीं है। उसको तो केवल इतना ज्ञान है कि २२ पांडें पर नगने से यह स्टेशन लग जाता है।

यह पर लगाने से रेडियो सीलोन लग जाता है। और यही सीखना है बस। और हम यही सीखना है कि हम उस विशेष मंत्र से जिसे प्राणोन्यान मन्त्र कहा गया है प्राणश्वेतना मन्त्र कहा गया है, या दूसरे शब्दों में प्राण विश्वदन मन्त्र कहा गया है। हम प्राणों को विश्वदन करने की क्रिया प्रारंभ करे क्योंकि मन्त्रों के माध्यम से ही यह समव है।

मैंने बताया कि शब्द ही पूरे, संसार में व्याप है। और उन शब्दों का मंत्रों के माध्यम से ही पकड़ सकते हैं।

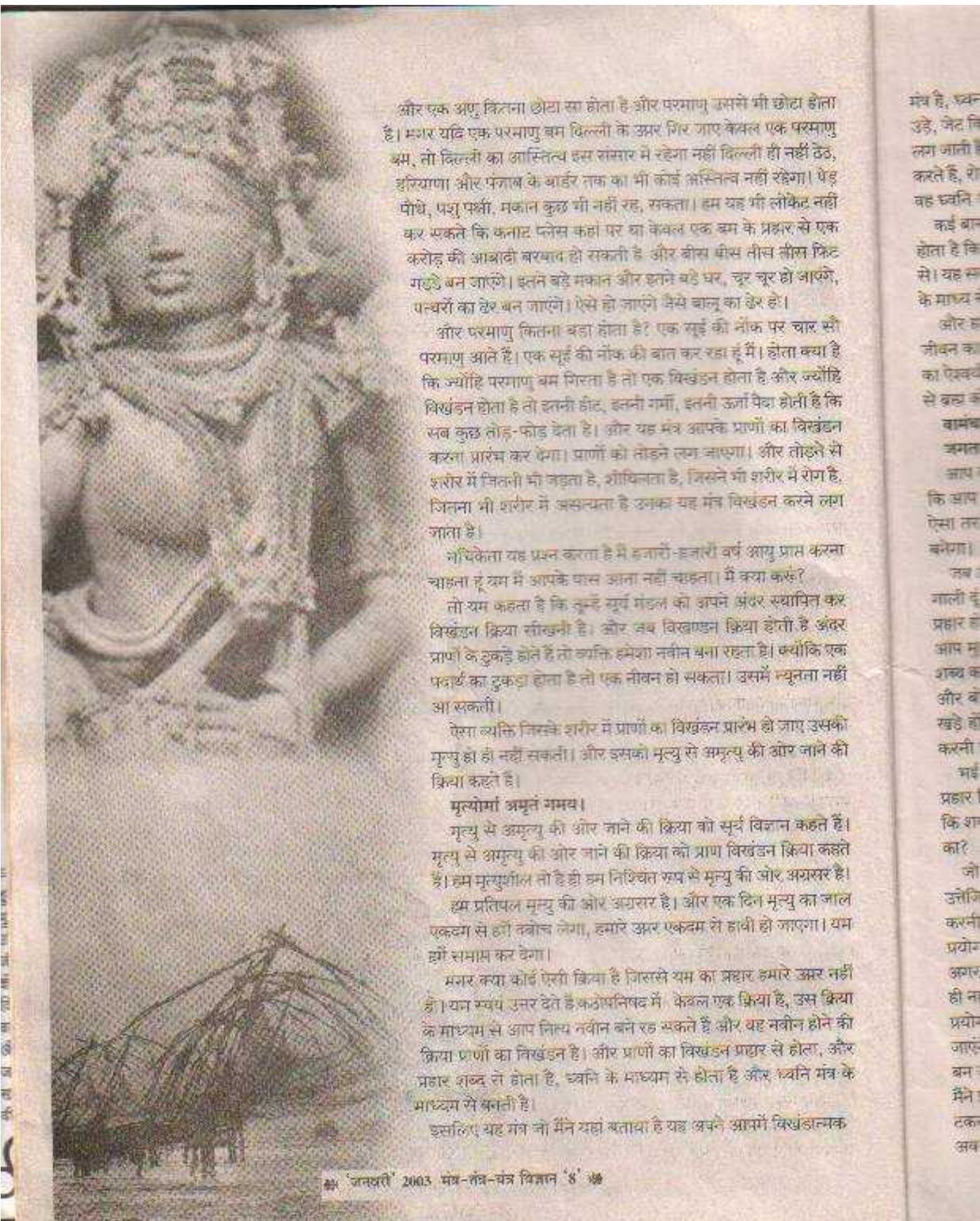
वह मंत्र है-

ॐ तत् चक्षुरेह वहितं पुरुषस्ता खुक्

मुच्य रतः ह फट ।

मैं अगर जीरो से मुक्तो मारता हूँ किसी चीज को तो उसके बिलकुल टुकड़े हो जाएंगे। एक टुकड़ा अलग ढूट के शिर जाएगा। दूसरा अलग गिर जाएगा और तीसरा अलग गिर जाएगा।

अगु बम का अविष्कार और अगु बम की छिपोरी कणाद के खिलान्त पर आधारित है जड़ा अगु के टुकड़े किए जाते हैं। कागाद ने नबरों पहले बताया कि अगु का विश्वदन समव है। अगु के टुकड़े ही सकते हैं और विज्ञान कह रहा था। सन १९४२ तक कि अगु के टुकड़े ही ही नहीं सकते। अगु तो अनिम सत्ता है पदार्थ की। आइस्टीन ने कहा-नहीं अगर भारत वर्ष कड़ रहा है कि अगु के टुकड़े ही सकते हैं तो अगु के टुकड़े जरूर ही सकते हैं। और आइस्टीन ने पहली बार अगु के टुकड़े करके परमाणु बना दिया।



और एक अणु वितना छाटा सा होता है और परमाणु उससे भी छोटा होता है। मगर यदि एक परमाणु बम छिल्ली के ऊपर पिंजर जाए तो वह एक परमाणु नहीं, तो छिल्ली का आस्तित्व हम समाज में रहना नहीं छिल्ली ही नहीं ठेठ, बल्कि याना भी पञ्चाल के बाहर नह का। भी कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। पैड पोथे, पशु पश्ची, मकान कुछ भी नहीं रह, सकता। हम यह भी लैकेट नहीं कर सकते कि कनाट द्वेष कहा पर या बेवल एक बम के प्रदाता से एक करोड़ की आश्रद्ध बरबाद हो सकती है और बीस की सीधे तीव्र तीव्र किंवद्दु बन जाएँ। इनसे बड़े मकान और इनसे बड़े घर, चुर चुर हो जाएं, पन्थरों का टुर बन जाएं। ऐसे हो जाएं जैसे बालू का ढेर हो।

और परमाणु किसना बढ़ा होता है? एक सूर्य की नींफ पर चार सौ परमाणु आते हैं। एक सूर्य की नींफ की बात कर रहा हूँ मैं। होता क्या है कि ज्योहि परमाणु बम बिस्ता है तो एक विशुद्धन होता है और ज्योहि विशुद्धन होता है तो इनसी ही, इनसी गम्भी, इनसी ऊर्जा पैदा होती है कि खब कुछ तोहँ-फोड़ बेता है। और यह मन्त्र आपके प्राणों का विशुद्धन बरसा प्रारंभ कर देता। प्राणों को नाड़ने लग जात्या। और तोहने से इरोर में चितनी भी जड़ता है, शौचितना है, जिसने भी शरीर में रोग है, जिसना भी शरीर में अस्तित्व है उनका यह मन्त्र विशुद्धन करने लग जाता है।

निचिकेता यह प्रश्न करता है मैं इनारी-इनारी वर्ष आगु प्राप करना चाहना हूँ यम में आपके पास आना नहीं चाहता। मैं क्या करूँ?

तो यम कहता है कि तूहँ सूर्य मठन को उपने अतः रसायनिक विशुद्धन किया रखना है। और नव विशुद्धन किया होता है अतः प्राणों के नुक़ड़ छाने हैं तो ज्योकि इमरा नवीन बना रहा है। ज्योकि इन पदार्थ का टुकड़ा होता है तो एक नीवन हो सकता। उसमें न्यूनता नहीं आ सकती।

ऐसा व्यक्ति जिसके शरीर में प्राणों का विशुद्धन प्रारंभ हो जाए उपको मृग्यु हो ही नहीं सकती। और इसका मृग्य से मम्म्यु की ओर जाने की किया करदे है।

#### मृत्युं अमृतं गमय-

मृत्यु में अमृत्यु की ओर जाने की किया वो भूर्य विज्ञान कहते हैं। मृत्यु में अमृत्यु की ओर जाने की किया वो प्राप्य विशुद्धन किया करते हैं। हम मनुष्यों ने हैं हम निश्चित रूप से मृत्यु की ओर अग्रसर हैं।

हम प्रतिपल मृत्यु की ओर अग्रसर हैं। और एक दिन मृत्यु का जाल पकड़ा स हो जाता लगा, हमारे ऊपर एकदम से हाथी हो जाएगा। यम ही समाप्त कर देगा।

मगर क्या कोई ऐसी किया है जिससे यम का प्रहार डमारे ऊपर नहीं हो। यम भव्य उमर देते हैं कठोरनिषद में कठल एक किया है, उस किया के माध्यम से आप निश्च नवीन बने रह रह करते हैं और यह नवीन होने की किया प्राणी का विशुद्धन है। और प्राणों का विशुद्धन प्रहार से होता, और प्रहार शब्द से होता है, ज्यवि के माध्यम से होता है और ज्यवि मन्त्र के माध्यम से होती है।

इसलिए यह गव जो मैंने यहाँ बताया है यह अबने आपमें विशुद्धान्तरक

में है, अन्त उड़े, जैत नि लग जाती। करते हैं, रो वह अविनि।

बड़े बाल होता है जिसे। यह से के माध्यम से।

और ही नीबन का का प्रस्तर से बछु क बाबंध जगत जाप। कि आप गेसा तर बनेगा।

तब। नाली दू प्रस्तर ही आप म शब्द क और ब खड़े हो करनी।

भड़ प्रहार। कि श का। जो उत्तेजि करनी। फ्योर अगल ही म प्रयोग जाएँ बन देन। दक अब

में है, ध्वन्यात्मक मंत्र है। आप देखेंगे कि अगर जोर से हवाएँ गहाज उमर से उड़े, जेट विमान जब अपर से उड़ता है तो काच की खिड़कियां खड़े खड़ाने लग जाती हैं। जिनके सांता कूण के पास मकान है वे इस बात का एहसास करते हैं, रोज उनको रिहाईया बजती ही है। और इसलिए बजती है कि वह ध्वनि अपने आपमें प्रहार करती है, विश्वेन करती है।

कई बार तो ऐसा होता है कि खिड़कियां ढूट जाती हैं, कई बार ऐसा होता है कि न भवति रिक्तियों के बचे गिर जाते हैं उस ध्वनि के आधार से। यह सब किया फोर्स से होती है फोर्स है ध्वनि का और ध्वनि शब्द के माध्यम से बनती है। अगर शब्द नहीं है तो नहीं बन सकती।

और हमारे शास्त्री में शब्द को ब्रह्म कहा गया है। ब्रह्म का तात्पर्य जीवन का विश्वहन है। ब्रह्म को जीवन का आगाम कहा गया है जीवन का ऐत्यर्थ कहा गया है, जीवन की पूर्णता कही गई है। शब्द के माध्यम से ब्रह्म को जाना जा सकता है।

**वार्षिक वि संवत्सो वार्षिक तिपत्ये**

**जगता पृथो वदे पार्वती परमेश्वरे**

आप ओलेंगे तो बोलते ही उपका अर्थ बनेगा ही ऐसा हो ही नहीं सकता कि आप बोले और अर्थ नहीं बने। मैं कहूँ पानी तो एकवाम जब बन गया कि ऐसा तरल पदाथ जिसको पाने से प्यास बुड़ाती है। बोलते ही अर्थ बनेगा।

जब अर्थ बनेगा वो उससे प्रहार बनेगा। अगर मैं आपको गाली दूँ तो ज्योहि शब्द बोलूँगा गाली का तो आप पर प्रहार होगा। मैं कोई आपको हाथ तो लगाऊँगा ही नहीं, आप मुझसे १० फौट दूर बैठ दूँ, मैं तो केवल यहाँ से शब्द का एक पत्थर पैकूँगा, एक गाली बोलूँगा जोर से और बोलते ही आपको गुस्सा आ जाएगा और आप खड़े होंगे जोर से और कहेंगे- आपको हाथ से बात करनी चाहिए। क्या समझ रखा है आपने।

इस मैंने तो आपके हाथ मी नहीं लगाया है, केवल प्रहार किया है शब्द के माध्यम से। इसका मतलब है कि शब्द का प्रदार बहुत नीबू देता है। कौन से शब्द का?

जो आपके प्राणों को तोड़ सके अगर आपको उत्तेजित करना है, एकदम से भाष्की आंखे लाल सूखे करनी हैं, आपका चेहरा तमसमाना है तो उस शब्द का प्रयोग करना पड़ेगा। जिसे गाली कहते हैं, अन्यथा अगर मैं कहूँगा-बकरी या, गाय तो आप उत्तेजित होंगे ही नहीं। जो आपके प्राणों को तोड़ सके उस शब्द का प्रयोग करना पड़ेगा और आप एकदम से कोशित हो जाएंगे, लाल सुखे हो जाएंगे, खड़े हो जाएंगे, मुटियां बन जाएंगी आपकी। यह सब किया इसलिए हुड़ है कि मैंने प्रहार किया है शब्द का और शब्द प्राणों से जाकर टकराया। और प्राणों से टकराते ही शरीर के सारे अवयवों को जागत कर दिया, पूरे शरीर को जगत कर

दिया इन्होंना जाशत कर दिया कि, पूरा शरीर उत्सवित हो गया लाल सुर्खे दो गया। गुप्ते में तमतमा गया, और ये लाल सुर्खे हो गई और मुहियां तन गई हैं।

संकेत के एक हजारवें हिस्से में यह सब हो गया। ऐसा नहीं कि मैं गानी देने वाले आप संचय कि अब मट्टी भी चानी है, अब आंखों में झोध लाना है, अब मुझे रुड़ा लाना है, कोई नाड़म नहीं लगाना उसमें। जैसे ही शब्द बोला, उसका अर्थ हुआ और अपेक्षा हुआ। अगर उर्थ नहीं होगा तो प्रदार भी नहीं होगा।

अगर डॉल्टन जाए गा अमेरिका जाए और आप मुस्कुलने हुए उसे जानियां देने वाले वह कहेगा है- यह, यह यू आर राइट। मैं जानियां दें रहा हूं और वह खुश हो जहा है। क्योंकि मैं मुस्कुला कर कह रहा हूं अगर मैं उत्सवित हो कर गुस्से से कहूं नब तो नाड़बढ़ हो जाएगी।

बात में कुछ अर्थ होना चाहिए अगर यह नहीं होगा तो प्रदार नहीं होगा। वह अर्थ समझता नहीं मैं बात तो कर रहा हूं अर्थ उसको समझ नहीं आ रहा है।

शब्द का अर्थ होना चाहिए, कालोंपाय, यही कह रहा है कि अर्थ होने ही प्रहार होता है। अगर मैं हास्य की कविता सुना रखा हूं आपको ना ज्योषि हो मैं बोलूंगा तो उसका अर्थ समझकर हमने लग जाएगा अपन। आप एकदम ने खुश हो जाएगे। क्योंकि आपने अर्थ समझा है।

वह जो मंत्र है यह अपने आपमें नहीं हो जो को लेकर के बह रहा है वाक, अर्थ और प्रहार। इसीलिए इसे प्राण विश्वेन मंत्र हो कहा गया है।

६०० पृष्ठों के बहुत बड़े गंध कण्ठ के चाक्षुषोपनिषद का यह मंत्र है। मगर यह मंत्र किसा है?

चाक्षुषोपनिषद को आप परा टटोन नेंगे तो भी यह मंत्र आपको निलेगा ही नहीं। और मैं कह रहा हूं कि उस शब्द में वह मंत्र है। और चाक्षुषोपनिषद का अर्थ ही यही है कि भूर्दे के उस विश्वेन को और प्रवृद्धन मंत्र को निकाला जाए। और पूरे उस चाक्षुषोपनिषद में या कण्ठ के पूरे सूत्र में और उसकी सूत्राकली में इस मंत्र को कही जाऊँ वर्णन नहीं है। उन्होंने उसके पहले अध्याय से लगा कर के अंतिम अध्याय तक जिसने भी श्लोक दिए हैं उन श्लोकों के पहले अक्षर को जोड़कर इस मंत्र की रचना की है। मंत्र की इतना गोपनीय बना दिया। सीधा मंत्र दिया ही नहीं। पहला श्लोक असे शुरू हुआ तो उसका अले लिया, दूसरा य से शुरू हुआ, तीसरा भी, चौथा र, पाचवा वे।

और हम पढ़ रहे हैं चाक्षुषोपनिषद और भाव रहे हैं कि जास्ती ने कहा है कि इसमें प्राण विश्वेन मंत्र को दिया हुआ है। उसमें देखे मंत्र को कोई ध्यनि है ही नहीं। उसमें प्रन्त्येक श्लोक के पहले अक्षर का आधार लेकर के इस प्रकार से मंत्र की रचना की तो मंत्र में यहां दिया है जिसको प्राण विश्वेन मंत्र कहते हैं। और प्राण विश्वेन का नाम है कि इस मंत्र का उत्तरण करते ही, कोई साधना करने की जरूरत नहीं, यह जल्दी नहीं कि आप स्वयं लाख जप करें वह तो कह रहा है कि आप आपने आपमें विराटता में बैठ जाएं और इस मंत्र का कबल उत्तरण करें। और विश्वेन का मतालब है प्रात, काल उठ करके स्नान करके चिन्हकूल उस समय आपका धर्म विश्वेन से निर्वाचित होता है। प्रात,

काल सूर्य उगत से पहले की जो स्थिति है वह अपने आप में विशेषता से संबंधित होने की स्थिति है। उस समय पुरा ब्रह्माण्ड विशेषता में रखा गिन होता है। यदि आप उस समय बेटने हैं तो आप एक ब्रह्मविनुभूत व्यक्ति नहीं रहते आप उस विशेषता का अंग बन जाते हैं और उस समय यदि आप इस मन्त्र का उच्चारण करते हैं, बार-बार रिपोट करते हैं तो पहली बार में की आपको ऐसी ध्वनियां सुनाहे दे भक्ती है जो कि आपने कभी सुनी ही नहीं है। आप कहेंगे कि यह क्या हो रहा है, यह कौन से ध्वनियां हैं। आपको ऐसे बिन्दु, ऐसे जशर ऐसे दृश्य दिखाइ देने जो आपने कभी नीचन में देखे नहीं हैं।

आप कभी स्मिलय में गए नहीं आपने कभी केदरनाथ देखा नहीं, और केदरनाथ देखा तो उसके पीछे बासुकी झील है उसमें तो कभी किंवद्दी में गए नहीं होंगे, मगर आपने सामने विश्व जागा और आप सोचेंगे कि यह विव कहाँ से आया। यह आवाज कहाँ घ आए, यह विनकुल एक नवीन तरह की आवाज कौन सी है? यह केसा आवाज है?

ही सकता है कि उस आवाज का अर्थ आप नहीं समझ पाएं। ही सकता है कि मैं आपके सामने मन्त्र का उच्चारण करूँ और आप उसका अर्थ समझ नहीं आए। मगर वह आपके लिए विनकुल नवीन ध्वनि है, वह कोई फिल्मी गीत तो नहीं, वह कोई भैरवी गीत भी नहीं किंव वह कोन सी ध्वनियां हैं। ऐसी ध्वनियां ऐसे दृश्य वाथ विवाहक रूप में आपको आंखों, कानों से टकराएंगे यदि आप इस प्राप्त विशुद्धन मन्त्र का उच्चारण करेंगे तो। चाहे एक बार उच्चारण करें, दो बार करें या पांच बार करें। ही नार बार उच्चारण करने की जरूरत नहीं। इतना उच्च कोटि का तेजनिवा पूर्ण यह मन्त्र है। अब यह अन्य बात है कि आप कन्कर्म न कर पाएं कि यह कहा का ध्वनि है।

यदि किसी गामोण व्यक्ति के प्रार में टेलीकोन नहीं है और मैं उस बुलाकर कहूँ कि तु इस पर बात सुन तो वह किसी भी बालन में बात नहीं समझ सकता। सामने बातो बात बताए तो उसके कान में स्वष्ट बात नहीं आ पाएँगी। वह कहना कोई कुछ बोल तो रहा है पर व्या बोल रहा है पना नहीं।

उस अभ्यास नहीं है, पर हफ्ते भर के अभ्यास के बाद वह शब्दों के अर्थ समझ सकता है। कल आप अभ्यास बते इसका तो कल आपको सेकड़ो दृश्य और सेकड़ो ध्वनियां आपकी आंखों और कानों में टकराएँगी हैं। इस मन्त्र की साधना होनी ही नहीं इस मन्त्र के भवा लाख जप की जरूरत होनी ही नहीं। यह तो सीधा प्रभवदुक्त और चेतना युक्त है, मगर उस समय जब आप नवय विशेष भजा में हों, तब गोती हो, विनकुल पीस आप मढ़द हों। अभ्यास के बावजूद आप बोधीस बटों में कभी भी प्राप्त विशुद्धन कर सकते हैं।

अभी तो जो ध्वनिया आ रही है उन्हें ही पकड़ पाएंगे, मगर किसी व्यक्ति विशेष की ध्वनि ही सुननी है वह आगे की बात है, वह आगे की किसी ही सकती है, कोइ भी विम्ब आ गकता है। आप चाहें कि कहीं विम्ब आए कि सेरे परदाद

की भूमि को से हुई कब हुई और ये कैसे ये तो वह बात की स्थिति है।

शारन तो कह रहा है कि एक बार जो विम्ब बन जाए वह खुन्नम नहीं हो सकता, ज्योंकि कहीं शुद्ध अगर कहीं हो रहा है तो हम यहाँ बैठे बैठे टाकी में देख लेगे। अमेरिका में अन्नर रेसन लोल रहा है तो हम यहाँ बैठे बैठे रेडियो पर सुन लेगे। हजारों मील दूर का डिल इम देख लेगे।

और शारन बह रहा है कि एक बार जो बिंब बन जाए वह मिट नहीं सकता। और आप उस बिंब की बास्ति देख सकते हैं, परे बिहार में उपने आप को रामाद्वित करने पर और प्राणों को उण विराट में समाधित करने के लिए, प्राणों का विश्वदृष्टि करने के लिए यह मौत है।

आप हसका एक्स्प्रेसिट करवे देखें, आपको सबसे पता चल जाएगा। अप मत्र का केवल पांच बार उच्चारण करिए और सब जाएं फिर और देखिए, क्या ध्वनियाँ आ रही हैं। आप दस बार मत्र को लिए और देखिए क्या दृश्य सुनने आ रहे हैं। वेस बिंब जो आपने कभी अनुमान नहीं लगाए। ऐसा बिंब कि आपने सोचा ही नहीं था। एक दूसरा से अपने का इतना बड़ा खड़, यह झील। वह सब क्या है। आप सोचें। मैं तो कभी यहाँ गया ही नहीं। यह कहा है?

वह चंगाह कहा है हसका आपको जाम नहीं हो सकता, ये ध्वनियाँ किसकी हैं यह भी शायद जान नहीं हो सकता, यह जानगा तो अगे की कित्या है, अज्ञ का जान है। फिलहाल तो यह भी बहुत बड़ी बात है कि हम विचित्र ध्वनियाँ सुन सकते हैं विचित्र दृश्य देख सकते हैं। बाद में तो कन्फर्म करना रहेगा। कि ये दृश्य, ये ध्वनियाँ कौन सी हैं। बाद में तो यह सामर्थ्य प्राप्त करना रह जाएगा कि जो मैं ध्वनि सुनना चाहूँ वह सुन रखूँ। मैं सुनना चाहूँ कि विंडिष्ट ऊपने शिष्टों को उपरेश उते समय कैसे बोलते थे तो ठीक वही दृश्य देख सकता हूँ वही ध्वनि सुन सकता हूँ।

गीता का बहलब ही यही है, गीता के पहले छलोक में यही कहा है कि संगम परे महा भारत युद्ध को देख रहा है अपनी आंखों से और बता रहा है। दृश्य भी उसे दिल्लाई दे रहा है, और ध्वनि भी सुनाई दे रही है। और संगम धृतराष्ट्र के, वही बैठे बैठे बता रहा है कि मैं यह देख रहा हूँ, मैं यह देख रहा हूँ।

बहुत दूर की घटना थी। और ऐसी स्थिति जो हमारे शास्त्रों में त्रिकाल दर्शिता कड़ा गया है। त्रिकाल दर्शिता का मतनन्त्र ही यही है कि पुल विश्वा के माध्यम से किसी भी लोक की किसी भी ध्वनि, किसी भी घटना का वह अनुमत कर सकता है। जिस भी घटना को देखना चाहे वह देख सकता है, समझ सकता है। और आप अध्यात्म करके देख सकते हैं, समझ सकते हैं।

और अध्यात्म से आप निश्चित दृश्य ही देख सकते हैं। आप चाहें तो अपने पूर्वों के भी दर्शन कर सकते हैं। आपके परदादा का नवरूप कैसा था, आपने पहले भी नहीं देखा आप उस बिंब का भी देख सकेंगे और आगर आप उनकी आवाज सुनना चाहते हों आवाज भी सुन सकेंगे।

और यह सुनना चाहते हैं दर्शन और कैकेयी का संवाद क्या हुआ क्या बातचीत हुई आप ठीक बड़ी ध्वनि सुन सकते हैं। उपरेके लिए एक निश्चित प्राण सवेदना किया करनी पड़ेगी, निश्चित उसी पाइंट की समझाना पड़ेगा। यह

बहुत बड़ी बात है, यह मामूली घटना नहीं है, आज से वस हजार साल पहले जो घटनाएँ घट गई, उनकी भी देख सकते हैं, सुन सकते हैं, और समझ सकते हैं।

अगर ऐसा है तो ये हमारे लिए कृष्ण भी अदृश्य था ग्रन्थ है ही नहीं, गोपनीय तो फिर ही नहीं कुछ भी। और जिसे प्राण विश्वदृष्टि किया का जान है उसके लिए अलाज कोई चीज रहती



ही नहीं। आप उन कियावों उन तथ्यों को समझे और उनको उपने हवय में उतारें।

जीवन में सर्वश्रेष्ठ विद्या के जानकार सूर्य जिनसे सबसे पहले बद्धा ने परा विद्या सीखने का प्रयत्न किया। और जिस परा विद्या को संसार की सर्वविद्वत् विद्या, समार का सर्वश्रेष्ठ आधार और जीवन का सर्वश्रेष्ठ चित्तन कड़ गया विद्यापि छायोग्योपनिषद् और चालुषोपनिषद् में परा विद्या के बारे में संकेत नो अवश्य दिए हैं।

यदि आप कर्मी उपनिषदों का अध्ययन करें तो मैं समझता हूँ कि उनमें सर्वश्रेष्ठ उपानिषद् कठोपनिषद् है जिसमें यम नचिकेता का प्रस्तुर संवाद है। नचिकेता, प्रश्न करता है और यम उनका उत्तर देते हैं और उसी प्रश्न-

उत्तर में नचिकेता एक महत्वपूर्ण प्रश्न करता है।

नचिकेता पूछते हैं:

अह पूर्व सेव मति वदेय  
मृत्योर्विव्यति पां पवित्रं सहेव

आत्मं च वेह वणन सहित  
सद्वावे

कि कारणं कूर्य सता सहित।

आप गुड़ो बद्ध विद्या का उपदेश तो के रहे हैं, यह मेरे जीवन का सीधारा तो है कि आपने गुड़े बद्ध विद्या की जानकारी दी आपने गुड़े एक अणु से विराट तक पहुँचने की क्षमता प्रदान की, आपने जीवन के गहराओं को प्रकट करने का प्रयत्न जिनके माध्यम से भृणी जीवन को, आत्मा को चेतना को, प्राण को और विराट की नामदा जा सकता है। मैं केवल आपसे परा विद्या के बारे में सीखना चाहता हूँ।

और ठीक ऐसा प्रश्न चतुर्मुख निनके चारों मुखों से चार देश उन्नरित होते रहते थे, ऐसे बद्धा ने सूर्य से पृथग् बद्धा स्वयं सूर्य के पास जाते हैं और प्रश्न करते हैं कि-पराया।

परा विद्या क्या है।

और सूर्य उत्तर देते हैं

एवीश्वरे प्राणश्चेतनायै स परा विद्या

जो जीवन की प्राणश्चेतना प्रदान कर सकता है वह परा विद्या है। मनुष्य का जीवन सर्वथा निर्जीव है। वह गतिशील तो है चलता फिरता तो है मगर निसी प्रकार से

उत्तरमें ज्ञान नहीं है, उत्तेजना नहीं है, उम्मेद नहीं है, जीव नहीं है और उससे भी बहुत बात यह है कि शास्त्रों के महासंग्रह में दुबकी लगाने का उनका अनुयाय नहीं है।

ऐसी स्थिति में केवल परा विद्या के माध्यम से ही सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञानकार हो सकता है। अब बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। बद्धा कहते हैं कि ज्ञानस्त्रय उपनिषद् है, १८ पुराण है, चार वेद हैं और इनके अलावा शास्त्र, मीमांसा और दर्शन हैं तो इन सब को अध्ययन करने में तो युग्म प्रयोग लग जाएगो और व्यक्ति समाप्त हो जाएगा। क्या कोइ ऐसी युक्ति नहीं है, जिसके माध्यम से व्यक्ति इन सम्पूर्ण शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त कर सके? और जब भी वह प्रवृत्तन करने लगे, जब भी बात करने लगे तो वे

जारी शास्त्र स्वयं संदेह आकर उसके भावने उपलब्ध हो जाएं।

वह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है और इससे परा विद्या की जानकारी प्राप्त होती है कि परा विद्या क्या है? परा विद्या में तात्पर्य यह है कि जब तक हमारा जीव और हमारे द्वयों जीवना उन समस्त शास्त्रों का उबलोकन नहीं कर लेगा, समस्त ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेगा तब तक हम उस सूर्य के चित्तन को नहीं समझ पाएगे जो कि तेजस्विता युत है। प्रकाश केवल ज्ञान का ही प्रकाश हो सकता है, और कोई प्रकाश नहीं हो सकता।

मन के उंधकार के दूर करने के लिए केवल ज्ञानक प्रकाश की जरूरत होती है। बाहरी उंधकार तो दीपक के प्रकाश के माध्यम से दूर करते हैं। मन चाला मन में उंधकार है वहाँ सूर्य को कह से समझ पाएंगे, उसकी किरणों का कहाँ से समझ पाएंगे, उसकी मूलभूत चेतना की कहाँ से समझ पाएंगे?

किस युक्ति से हम उन सारे शास्त्रों की सेंकड़ों हृजारें शास्त्रों को हवयंगम कर सकते हैं, सीख सकते हैं, आत्मसात कर सकते हैं और कुछ ही समय में सीख सकते हैं?

यदि किसी व्यक्ति की उम सी साल भी मानकर चले और यह वह चारों देशों का अध्ययन करे, पुराणों का अध्ययन करे शास्त्रों का अध्ययन करे, मीमांसा का अध्ययन करे, उपनिषदों का अध्ययन करे तो उसका तो पूरा जीवन बोल जाएगा। ऐसी ही स्थिति में सूर्य ने उच्च

ज्ञान की विद्या का नाम पर्यंत है कि हम अपने मन के अधिकार को दूर कर सकें, कृष्ण उसी युक्ति करे कि परा विद्या का ज्ञानकार यदि कानून पर बोलना चाहे तो भले ही उमने सूप्रीम कोर्ट के कानून वा अधियन नहीं किया हो, ही सलकता है उमने उन धाराओं का अधियन नहीं किया हो, ही सलकता है, उसने एनएफसी नहीं की हो, मगर वह बोलना, एक ऐसा उद्धरण देता हुआ यदि बोलना तो सामने थाले व्यक्ति को प्रभावित करना कि इसके कानून का अधिकार जान दे। यदि वह शिक्षा पर बोलना चाहे तो शिक्षा पर उस पर गंधी का हवाला दे सकेना जिन गंधों को उसने जीवन में देखा ही नहीं है। और वह भी प्रामाणिकता के साथ, शलोकों के साथ, सोमासा के साथ।

और यदि वह यह पर बोलना चाहे, उपनिषद पर बोलना चाहे, जीवन के किसी सिद्धान्त पर बोलना चाहे तो वे नमस्ता आख्य एकदम से सामने स्वयं सदैह उपस्थित ही सके ऐसी विद्या को पूरा विद्या कहते हैं। यह जीवन की बहुत बड़ी बात है। हम जीवन का आनन्द ले सकते हैं। हम जीवन के उन रहस्यों को जान सकते हैं जिनसे हमारे जीवन का नियंत्रण हो सकता है, हम सूर्य के रास्तरें जो जान सकते हैं उस व्याख्यापनिषद के माध्यम से।

और उस चालुयोग्यनिषद के प्रारंभ में सूर्य स्वयं बोलते हैं-

ब्रह्म स्वस्त्रं पश्यो पशेव पशीतां पशेषं  
परां पूर्णं पते पतालं पशीत यथेव

जाने बता च विता अद्वितीयं

दीर्घा परे सः प्राणो उत्थवा त्वं स्वं।

प्राणों के उत्थावान स्वं को प्राण की उत्थापन किया की परा विद्या कहते हैं। प्राणों के माध्यम से ही सूर्य को समझा जा सकता है। यदि आप सूर्य की अध्ययन करना चाहे, पदार्थ परिवर्तन की किया जाना चाहे, उसकी किरणों की जाना चाहे उन किरणों के परिवर्तन का जानना। यह उन योहे,

उन किरणों के माध्यम से घटाय परिवर्तन का फैला जाना चाहे, उसकी किरणों का जानना चाहे, उन किरणों के परिवर्तन का जानना चाहे, उन किरणों के माध्यम से पदार्थ के नियम का जानना चाहे ना। उपर्युक्त लिए परा विद्या का जानना नहीं है। और जब हम परा विद्या का जान लेंगे तो उन सभी शास्त्रों को भी जान लेंगे जिनको हमार शब्दों में आज वापिया, मूलिया ने रखा है। हाँ सकता है कि ऐसे मैकड़ी गंध विनुम हो गए हैं, हनारों गंध पेय है जिनका अविनाश ही नहीं है। रावण राहिण का नाम ही जान का उल्लेख है। रावण संहिता गंध ही समाप्त हो गया।

जब हम वापर पर गंध को पढ़ सकते हैं? क्या ऐसे गंध को बेग नहीं है?

और चाक्षुषोपनिषद में चिलकुल स्पष्ट रूप से बताया गया है कि ऐसा संघर है। उद्योगाश्रुषोपनिषद के उद्धरण को देने हुए अगवत् पाप शंकराचार्य ने बहुत सुंदर उंड कहा। उसने कहा- संसार में कोई भी वस्तु मिलती नहीं। जो कुछ आप बोल देते हैं, जो कुछ आपने उच्चारण किया है वह आश्वन है, वह मिट नहीं सकता। यदि मैं आपके सामने प्रवचन करता हूँ तो शंकर को भी मीमांसा के अनुसार वे शब्द कभी समाप्त नहीं हो सकते।

जब शंकर सूर्य के चित्र के बारे में समझाने हो तो वे उस व्याख्या को स्पष्ट करते हुए चाक्षुषोपनिषद के सूत्र की स्पष्ट करते हुए चाक्षुषोपनिषद के सूत्र का स्पष्ट कर रहे हैं। कथाव के उस चाक्षुषोपनिषद में कहा है-

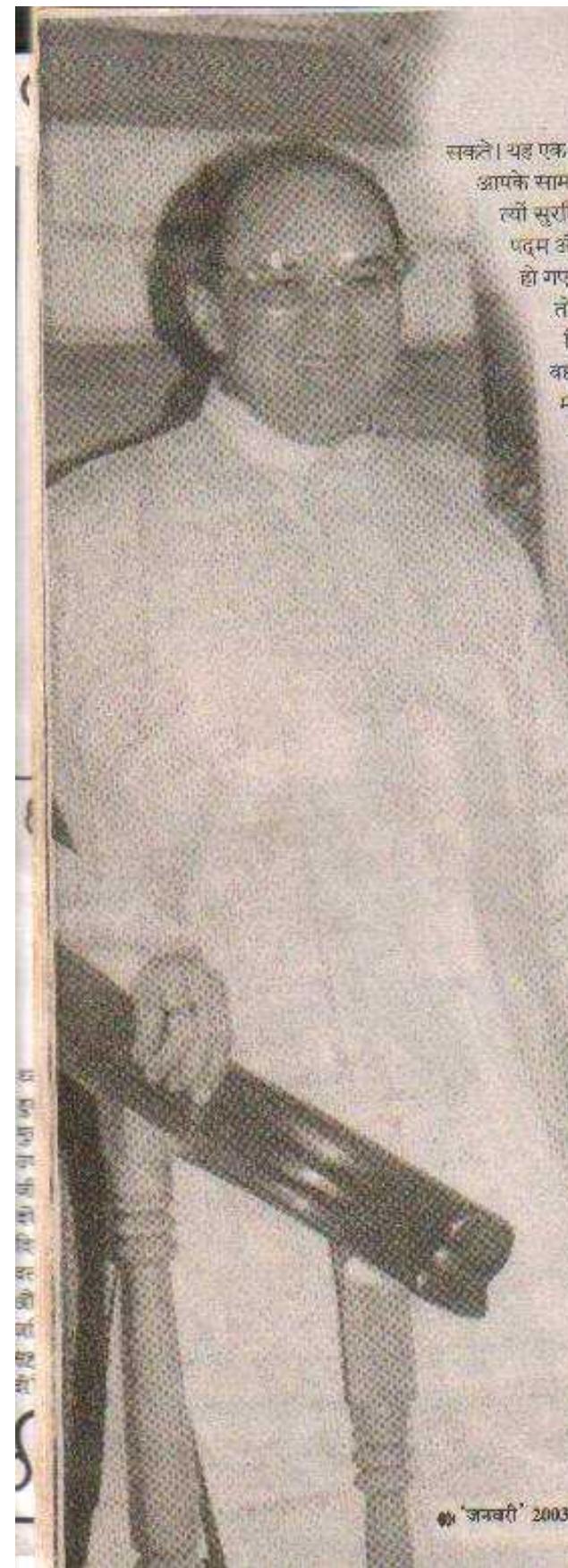
सः प्राणवै चक्षु वहिते सः यम

सः दहत् सः कुर्वत्

उप प्राण के उत्थापन की किया से छों परा अपने आपने अपस में और अपरा अपने आप में बदल जाती है। अब इस सूत्र को आम आदमी तो समझ नहीं पाएगा। यह तो ऐसा सूत्र, ऐसी गुल्मी है जिसके समझा नहीं जा सकता उक्तम से। अब इसका शंकराचार्य ने यहाँनी बार आश्रित्य किया और शंकर ने कहा- या अस्तित्व है जीवन में, एक अस्तित्व है ब्रह्म अन्यथा अस्ति सुदूर और दूसरा है पर्याप्तरा। जीवन में ये अस्तित्व हैं एक हम हैं और हम हैं नो पूरा दुनिया है, यह पूरा संसार है। अगर हम ही नहीं हैं तो इस राष्ट्र की उपयोगिता ही नहीं है, इस संसार का कोई मूल्य ही नहीं है।

ओह परि संसार है, मनुष्य नहीं है तो भी सब लग्जर्ह है। संसार के लिए को गढ़ उद्यम किए जाए हैं- भू और भूव। मूलेक और भूव लोक का नात्पर्य है कि ज्ञानी की शब्दात्मक सत्ता है। और वह सत्ता पूरी विश्व में नहीं है। यहाँ विश्व का नात्पर्य ब्रह्माण्ड से है, विश्व का नात्पर्य वेदवल क्षमेरिका, हन्तैंद और तीज महीं है। विश्व का नात्पर्य है ब्रह्माण्ड के बे नहीं लोक जिनके बग लोक, चुदांक कुर्वत् लोक वडा लोक, या अप्य कई लोक। या वे एकी लोक जिन्हें भू गुव, नव, मह जन तप, सत्यम। इन समस्त लोकों को यता मनुष्य में निहित है।

और शंकर समझाने हो जहते हैं कि शंकर मनुष्य पक बर कुछ कह देता है, तो वे शब्द दूरों यूंगों लोक उपर हो जाते हैं, समाप्त नहीं लोते, दृक्त होनहीं होते, उम्मो आप विभूति नहीं कर-



लकड़े। यह एक बहुत बड़ी बात है। इसका मतलब तो यह हुआ कि यदि मैंने आज आपके सामने कुछ बोला तो आप मेरे १०० वर्ष बाद भी यह प्रबन्धन ज्ञान का त्वयों सुरक्षित रहेगा शंकर के शब्दों का तो सार थहरा है। और शंकरको पाव एवं और अन्य शिष्य प्रश्न कर रहे हैं कि क्या जो शब्द एक बार उच्चरित हो गए वे शाश्वत हैं।

तो शंकर ने कहा - निश्चित!

निश्चय ही जो आदमी एक बार बोल देता है, उच्चरित कर देता है वह शब्द समाप्त नहीं हो सकता क्योंकि शब्द ही बह्य है। और इनको मारा नहीं जा सकता, लहर को तोड़ा नहीं जा सकता, लहर के टुकड़े भी नहीं किए जा सकते, लहर का समाप्तिकरण भी नहीं किया जा सकता।

इसी चित्तम पर शंकराचार्य के शिष्य मंडन मिश्र प्रश्न करते हैं कि मैं उसी परा विद्या को जानने की चेष्टा में हृगुरुदेव की जिसके माध्यम से मैं संसार के सभे शब्दों और रहस्यों को जान सके। इसका नात्पर्य तो यह हुआ कि द्वाषर युग में महाभारत युद्ध हुआ और अठठारह दिन तक वीरव और पोष्य लड़ते रहे, मंडन मिश्र प्रश्न कर रहे हैं शंकर से.....

महाभारत का युद्ध सबसे बड़ा अभिशाप रहा जीवन का जहाँ, करोड़ों व्यक्ति कट कर मर गए और जीवन का सबसे बड़ा सौभाग्य रहा कि उससे ब्रीमद् भगवत् गीता जैसा ग्रन्थ निकल सका। ये दोनों विलकृत विपरीत धूप जहाँ पर युद्ध, जहाँ पर छल जहाँ पर सब कुछ अपने आप में समाप्त होने की किया थी वहाँ पर भी श्रीकृष्ण ने अर्जुन को पूणि शान दिया।

और गीता के प्रथम श्लोक से लगा करके अद्वितीय अध्याय के अनिम श्लोक तक भगवान कृष्ण ने एक ही बात अर्जुन को कही- तु कायर है, बुजविल है, तू जो बैठा बैठा युद्ध नहीं लड़ने की बात सोच रहा है इससे ज्यादा कायरता कुछ नहीं हो सकती, तुझे केवल एक ही बात करनी है कि तुझे लड़ना है। और अगर तू नहीं लड़ेगा तो भी मेर जाएँगे। बचेंगे तो ये नहीं और लड़ेगा तो भी मर जाएँगे। तो नू विजय प्राप्त कर्यों नहीं कर लेता।

यह मंडन मिश्र का प्रश्न था कि महाभारत की सर्वोन्कृष्ट उपलब्धि थी कि भगवान् कृष्ण ने गीता जैसे उत्तम कोटि के ग्रन्थ को अपने मुख से उच्चरित किया। क्या भगवत् पाद शंकराचार्य हम उन शब्दों को जब तेरे बी नहीं शब्द, जब वे शब्द जीवित हैं तो क्या हम कृष्ण के ठीक उन्हीं इन्हों को बापस सुन

सकते हैं। आप वर रहे हैं कि भव्य नहीं मरे तो शब्द नो ही ही ब्रह्माण्ड में।  
और कृष्ण ने जो कुछ भी कहा जिस व्याप्ति ने उच्चारण किया ज्या हम श्री  
कृष्ण की वाणी में हो। उस उच्चारण को वापस सुन सकते हैं।

शंकराचार्य ने कहा- निश्चित रूप से सुन सकते हैं। यहीं नहीं हम ने  
यह भी सुन सकते हैं कि प्रारम्भ में जब आर्य आए और षिधु नदी के किनारे  
बैठकर उन्होंने जिन वेद की ऋचाओं का अध्ययन किया जिन वेद की  
ऋचा भी का निर्माण किया, पहली-पहली वार जिन वेद की ऋचाओं को  
उच्चारित किया, उन व्याप्ति उन अन्ती, उन कणाद, उन पुलसनाव उन  
विशिष्ट, विश्वामित्र के मुँह से उच्चारित शब्द भी वापस सुन सकते हैं।  
ऐसी किया को कि ब्रह्माण्ड में फैले हुए जो अन्त है उन शब्दों को  
पूर्णभूत करके वापस सुनने की जिया और उच्चारित करने की जिया  
परा विद्या कहनाती है।

आप शास्त्रों का काहं तक अध्ययन करेंगे, मगर शास्त्र जब भी  
रचा गया उच्चारण तो हुआ, होगा, वेद जब रचा गया तो वेदों  
का उच्चारण तो हुआ ही होगा, व्याप्ति ने विनिज्ज सूतों ने बिल्ले हुए  
मंत्रों को एकत्र करके उन छरों वेदों की रचना कर दी पुराणों का  
रचना कर दी, षिधु नदी, वे किनार किसी न बिल्ली कधि ने उन  
मंत्रों का सञ्चर, संधोष उच्चारण किया होगा और जब उच्चारण  
किया तो वे शब्द वायु मंडल में फैले और जब वे शब्द वायु मंडल में  
फैले तो इसका नातपर्य है कि वे शब्द वायु मंडल में हैं क्योंकि शब्द  
तो ब्रह्म है, शब्द मिट नहीं सकता, शब्द मर भी नहीं सकता,  
आवश्यकता है कि उस शब्द को वापस पकड़ सके। और उन्हीं  
शब्दों को पकड़ सके।

और साइम्प भी इसी बात को स्वीकार करता है कि यहि वाम्बर्द में  
लता मंगेशकर गाना गाती है तो हम रेडियो के माध्यम से उन शब्दों  
को सुन सकते हैं। यहां तो वायु मंडल में सेवडों आवाजें हैं, यहां पर  
एक ही आवाज नहीं है, यहां पर लता मंगेशकर का गाना भी चल  
रहा है, एक माषपण भी चल रहा है, एक शान्त्रय बर्नीत भी चल रहा  
है, और रीमन का भी एक रिकार्ड चल रहा है। ये सारे शब्द हैं, मेरे  
सामने हैं मैं रेडियो की सूई को धुमा आ तो ज्योंहि बंबई पर लगा आगा  
तो वह गाना सुनाई देगा थोड़ी और सूई धुमा देगा तो वह यत्र दूसरे  
प्रकार की ध्वनियों को पकड़ने लगेगा।

कोई भी ध्वनि गरी नहीं है सब ध्वनियों गिरा है, अगर मर सकती  
तो बंबई से यहां आते-आने विखर जाती ध्वनि। मगर उस यंत्र के  
माध्यम से हम उन ध्वनियों को पकड़ रहे हैं और सुन रहे हैं। बंबई लो  
बहुत दूर है और वहां से यहां तक कोई माध्यम नहीं है, कोई तार नहीं  
लगा हुआ है, और हम वहां ध्वनि पकड़ रहे हैं यद्यपि यहां पर वचास  
तरह की ध्वनियां वायु मंडल में हैं। हम देख नहीं पा रहे हैं। यह एक  
अलग बात है। ध्वनि को देखा नहीं जा सकता ध्वनि तो अनुभव  
करने की, अवण करने की पक्ष्यति है।

अगर, उस ध्वनि को पकड़ सकते हैं तो उन ध्वनियों को भी पकड़  
सकते हैं जो आज से एस हजार साल पहले उच्चारित हुई होंगी। ऐस-

शीत अमेलिका में हम पर्यावरण परीक्षण को रखे हैं, और परीक्षणों के आधार पर उन्होंने इस बान का निष्पत्रण किया है कि आज से हम हजार वर्ष पहले से कुछ ध्वनिया उत्तराखित हुए हैं तो उनको ज्ञान का न्यौ हम पकड़ सकते हैं, यह सबके हैं। और वही ऐसा ही गदा नहीं तो विश्व का बहुत बड़ा परिवर्तन हो गया है, ऐसिये और टीवीविजन ना आपके नाम पर है, इस परिवर्तन को साइट की भाषा में भी हम देख सकते हैं क्योंकि उस वर्ष पकड़ने को सौर व्यक्त करने की किया है।

गगर यथा हम प्राणी के माध्यम से भी उस आवाज को पकड़ सकते हैं वह तो केवल जीवन की ध्वनियों को पकड़ रहा है। जमीं में गाना गाँउओं वह सुनाई रहा, जमीं नहीं गाँऊ तो नहीं सुनाई रहा। तो या तो लता मेंशकर गाना गाए या टेप बन, बड़ा टेप बजेगा तो मैं यहाँ लुन सकूंगा, ऐसा नहीं हो सकता कि लता मेंशकर न हम साल पहले गाया तो और मैं रेडियो लगाऊँगा और सुन लूँ।

साइट के बतावर्तमान की ही ध्वनियों को पकड़ पा रहा है। और यहाँ विज्ञान कह रहा है कि वर्तमान की ही ध्वनियों नहीं कई हजार वर्ष पहले भी यथि ध्वनिया उत्पात थी है तो हम पकड़ सकते हैं। और हम पकड़ सकते हैं प्राणी के माध्यम से, प्राणी के माध्यम से क्या? क्योंकि सूर्य को जापा करा गया है।

और किसी प्रकार से हम प्राणी को जापन कर सकते हैं? यदि हम सूर्य को ही प्राणी में संचरित कर सके तो ऐसा संभव हो क्या? प्राणी को सूर्य से जोड़ सकते हैं? प्राण और सूर्य में तो अंतर है ही नहीं। जिस प्रकार चमड़ी में और रक्त में अपने भ्राता में संबंध है, उग्र चमड़ी को तोड़ने तो रक्त निकल गा ही।

उसी प्रकार सूर्य और प्राणी का संबंध है।  
उन प्राणी को विवरक और सवाहक बनाने के लिए एक ना ध्वनि प्रणाली की ओर एक ध्वनि पकड़ने की, दो प्रकार के यथों की सापेक्षता होती है। वो गत्ता है हमारे दृश्यमान में, एक को जीवन में प्राण कहा है, और एक को जीपन कहा है। प्राण जल्द का जल्द है उन ध्वनियों को पकड़ लेना और जीवन का अनुहृत उनको जाल करना।

और यथि हम इन पर्यावरण

विद्या की प्राण और अपने दोनों कियाओं को सीखते हैं तो उसका तत्पर्य यह हुआ कि आज सब इतार वर्षा पहले जो कुछ भी वेद जो कुछ भी मंत्र, जो कुछ भी, स्वर्ण वनों की पद्धति नागार्जुन ने, जो कुछ भी, कल्पी वास ने मध्यवृत्त के माध्यम से जितने भी काव्य, गंभीर उच्चारित विशेषणों के माध्यम से पकड़ कर अपने के माध्यम से रुग्न सकते हैं, व्यक्त कर सकते हैं।

और जब वे शब्द सुनना और उनको व्याख करने का किया आ जाती है तो फिर स्वतंत्र प्रवचन करते रहते किसी भी उपनिषद की व्याख्या को, उपनिषद के श्लोक को नुस्खा उच्चारित कर सकता है। फिर उसको धारा, करने की जरूरत नहीं कि उस व्याख्योपनिषद में तीसरे मंडल में दीया श्लोक क्या है। इसलिए जरूरत नहीं है कि उब प्राण को जोड़ दिया है, वह व्यूह द्यमानी है, प्राण, को धमाना है कि व्याख्योपनिषद के नीचरे मंडल का दीया श्लोक और नंतर वह श्लोक उच्चारित होता।

याकृ वतं च पवित्रां परमे सहित...

अब योगी की जरूरत नहीं पढ़ी बात करने की भी जरूरत नहीं पड़ी वह तो ज्योहि सूर्ज का उस गाँठ पर लगाया नहीं कि वही श्लोक उच्चारित होना है जो श्लोक आपने सोचा है। यह मान्मूली बात नहीं है, इसके माध्यम से तो यह ऐसा दायर जाता है कि इतिहास में गोवनीय बातें कथा क्या हुईं। इन्हें के इनिहास में जारी लघुप्रेरणा ने अपने प्रभाव के लिए लुकाया है। इन्हें के। यज्य की तो आखिर क्या जापस में जारी हुई कि इन्हास बड़ा त्यार कर दिया।

इसके भत्तलयनों यह हुआ कि उम्म यह भी जाप सकते हैं कि व्याख्यों ने आपस में क्या क्या बातें की। इस बात को भी सुन सकते हैं कि राम और गोता पर्ण जूठ में लौटे किस तरह में भलमन है। फिर तो कुछ भी असाध्य है ही नहीं। फिर तो हम उन उच्चनियों को दी जिन्हें वाल्मीकी नहीं बना बाप सुन सकते हैं और व्यूह कर सकते हैं।

ओपर दफ्तर के लिए उन दोनों कियाओं की प्राण और अपने को जापन करने को जरूरत है जिसका कहना है कि व्याख्यों ने आपस के भत्तलयन के अपने प्रभाव कहा है कि मनुष्य वह है जो बहा का भाषणकार करके अपने अपने भाषण करके।

सूर्य को कैसे प्रकार से समाहित करें? कैसे जगह नमाहित करें? कैसे जिन्दु पर समाहित करें?

इन्हास बड़ा तेजस्विना युक्त जो इन्हास बड़ा एक वाण का गोला है जिसका कहते हैं कि इन्हास प्रख्यर और तेजस्वी है क्या हम उसे प्राणों में रमाहित कर सकते हैं?

जौर द्या अवश्य हो उम्म ते वस्त्रिवता  
युक्त सूर्य को प्राणों में ले सकते हैं  
उस पर। विद्या की द्वी किया आगे  
चलकर के पूचार्जुनी साधना और

चोरी। छाते वान्य साथनाएं बर्नी करने पिशाचिनी साथनाएं बर्नी। वे सब जो क्षुद्र  
साधनाएं बर्नी ये प्रण आपान किया के बाइ प्रोटकट हैं।  
जब व्यक्ति काम में उँगली डाल कर कर्ण पिशाचिनी के माध्यम से पूछता है  
कि माल बड़ा हुई तो उसे तुरन्त जवाब मिल जाता है कि क्या हुआ। वह भात  
के जो दूध भाल पहले हुई होगी। घटना तो छ- माल पहले हुई होगी और  
उसके बहुत है क्या हुआ तो वह कहती है ऐसा हुआ। यह सब क्या है? उ-  
भाल पहले जो बठना हुई मूल कार्यालय कानो रो टकरा रहा है यह उस  
इच्छा कोटि की विद्या का निमा स्वस्य है। और ऐसे होटे मोटे कर्ण  
पिशाचीनी को पिछ छिप दृष्टि किया गाएं आपको हर गली  
के बीच में जो कि पहले की घटा हुई घटना का सुन सकते हैं। पिशाचुली  
धार्धना के माध्यम से या कच्चे गल्ले के माध्यम से, या छोटे मोटे  
टेस टोटों के माध्यम से इन योगों को सीखा जा सकता है।  
और आप प्रण आपान किया को यारें या न सोजके पर इन  
सबके माध्यम से आप तथाकथित पिछ योगों बन सकते हैं।  
एगर फॉकराचार्य कह रहे हैं तो चार छ- या दस रुप्त  
पहले ही नहीं बस छनार भाल पहले की भी घटनाओं की  
भी देख सकते हैं। संजय वहाँ लार्सेनपुर में बैठा बैठा  
कुलदेव की घटनाओं को देख रहा है। घृतराघ पृष्ठ  
रहे हैं कि हे संजय मेरे पुर कल्पेत्र में खुद-खुद  
क्या कर रहे हैं और भवय पूरी बात बताता  
जाता है कि आब अर्जुन अपे बढ़ा, अब  
उसने गांडीव से तीर चलाया,  
अब वह तीर भीष्म को  
लगा है। संजय सब  
बैठा-बैठा देख रहा है  
जबकि तीन सौ  
मील का हिस्टेंस है।

कला और अपना विद्या का नाम सर्व वृही है कि उन उन्नाओं  
को रुग्न सकते हैं दख्ख सकते हैं, और उन्हें ब्रह्म सकते हैं  
मैं चमचस्ता हूँ कि मैंने प्राण और अपना विद्या को स्पर्शन  
में व्यक्त बताने की कोशिश की है, जिसका तात्पर्य क्या  
है। अब प्रश्न यह है कि उमा प्राण अपने विद्या को सेव्य  
कैसे? क्या करे? किस प्रकार प्राण अपने विद्या को  
आवश्यकता क्यों?

बुधा कहते हैं सूर्य के मंडल को, सूर्य को नहीं क्योंकि  
सूर्य के साने मंडल है जिन्हें नाम दोड़े कहा है, सप्त अवृत्।  
उस सूर्य के मंडल को अपने शरीर में गमाछिया करने का  
जान होना चाहिए क्योंकि सूर्य का इरीर तो विशद है।

जब अनुन मान ही नहीं रहा था, अनुन बार बार विशद  
गहरा था, बहु कह रहा था कृष्ण ने सब तुम्हारी बात मान  
सकता हूँ। मार मैं अपने दादा को नहीं मार सकता था  
भीष्म पर लड़ा है। वे जो द्रोण भाष वेष्ट रहे हैं वे गरे  
गुरु हैं, मैंने इनके नाथ बेतुकर आनंदाम लिया  
है, राजनीति नीची है, आग कहने के द्रोण के  
मार के जूस को कैसे नार शकना है? वे  
भीष्म मेरे पितामह हैं, दादा हैं उनको गोदी  
में मैं बढ़ा हुआ हूँ, इनको मैं तीर कैसे  
गार दूँ।

कृष्ण कहते हैं-तुम उबोध हो, आद्यत  
तुमने भूमध्य के विशद स्वरूप को नहीं  
देखा।

और गीता के उस दसवें अध्याय में  
कृष्ण अपने विशद स्वरूप को उसके समान  
वह इते हैं और कहने हैं तू देख नू भया कर रहा  
है।

और अनुन देखता है कि सब कोरब अपने उप मर रहे

हैं स्पाम हा रहे हैं बड़ाशालत गृह उनके इरीर में डामट  
रहा है। अर्जन कहता है यह क्या हो रहा है?

कृष्ण कहते हैं- यहा सब होने वाला है, तू भल या  
नहीं गाह, गग्न तु नहीं मारता तो यहानय को कारण तु  
बन जाएगा, जौहन भर अपराध बोझ से गलन रहेगा,  
ये मरण तो जश्वर और अगर त इन्हें मरेगा तो विजयी  
कहलाएगा।

ऐसा कैसे कर पाए कृष्ण, कैसे लिया पाए, विशद  
स्वरूप को कैसे महामारत गृह विशद लिये? इसलिए  
लिखा खल कि उद्दीपन प्रथा अपने विद्या का आन्वचात  
किया हूँ। सूर्य के मंडल को अपने भीतर स्थापित किया,

स्थापित किया इसलिए वे कृष्ण कहनाएँ,

सद गुरु कहनाएँ, नगद गुरु  
कहनाएँ।

आप भी सद गुरु को  
पढ़वात लके, पर सूर्य  
मंडल के अपनी भीनर  
स्थापित कर सके सूर्य की  
प्राणी के साथ जोड़ सके,  
ऐसा हो मैं ब्राह्मका  
आशीर्वाद देता हूँ कल्याण  
कामना करता हूँ।

सदगुरु, ऐव वरमहस्य  
निष्ठिनश्वरणनन्द।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके यरियार का आगम है। इसके साधनात्मक सत्य को लोकान् के सभी सतरों में समान रूप से स्वीकार किया जया है, क्योंकि इससे प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का इल सरल ओर गहन रूप में समाधित है।

# वार्षिक विश्वापन

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

## सिद्ध चैतन्य माला

पूर्णता प्राप्त करना ही मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य है, वहे वह भौतिक या आध्यात्मिक पक्ष हो, चाहे वह व्यापार से सम्बद्धित हो या साधना से सम्बद्धित, चाहे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करनी हो, या सिद्धियों को हस्तगत करना हो, गृहस्थ जीवन का सुख हो या संन्यास जीवन का आनन्द, श्रेष्ठता, अद्वितीयता और सर्वोच्चता प्राप्त करनी ही चाहिए।

लेकिन सामान्य मानव शरीर अन्यन्त सामान्य है, गति, अस्थि आदि के सिवा कुछ ही नहीं, जबकि विव्यता और आनन्द की उपलब्धि तो किसी दिल्लि एवं चैतन्यता प्राप्त देह में ही सम्भव है। जिस प्रकार जल में ही जल का पूर्ण रूप से मिलन सम्भव है, तेल में नहीं, उसी प्रकार शरीर एवं मन को चैतन्यताकर बनाकर ही दृष्टि की चैतन्यता को समाप्ति किया जा सकता है।

यह माला गुरु कृपा का एक ऐसा ही श्रेष्ठ प्रसाद है, जो पूर्णता एवं पूर्ण चैतन्यता प्रदान करने वाले दिव्यतम मंत्रों से प्राप्त प्रतिष्ठित की गई है तथा जिसे पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास पूर्वक धारण करने पर इस सामान्य शरीर में भी विव्यता और चैतन्यता का संचार होने लगता है, कुण्डलिनी स्वतः ही स्पन्दित होने लगती है, समस्त साधनाओं में सफलता प्राप्त होने लगती है और पूर्णता की ओर अग्रसर होने की क्रिया प्रारंभ होती है।

जिस दिन आपको माला प्राप्त हो, उसके दूसरे दिन प्रातः, स्नानादि से निवृत होकर इसी माला से एक माला गुरु मंत्र का जप कर इसे धारण कर लें। सबा माह पञ्चांश इसे किसी मंदिर में रख दें या जल में प्रवाहित करें।

वह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य आपने तिक्की प्रिज, रिश्टोवार या रवजन को लानाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप रवतं भी सदस्य लानाकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. ४ रप्पर अक्षरों में अशक्तर हाथ से पास भेज दें, शेष कार्य हम रवतं करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at:

वार्षिक सदस्यता शुल्क-195/- छाक खर्च अतिरिक्त 45/- Annual Subscription 195/-+45/-postage  
क्रमांक

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान) Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India  
फोन (Phone) -0291-2432209, 2433623 टेलीफॉक्स (Telefax) - 0291-2432010

# गुरु महिमा तो अपार्थ है

कहते हैं भगवान् सदाशिव की गुरु ही माता है,  
पिता है, महेश्वर है, सबातब है

देवी पार्वती द्वाया यह पूछे जाने पर कि संसार में सब देवताओं में उच्च आप माने जाते हैं लेकिन आप नवस्या में खोए रहते हैं, क्या आपसे भी बढ़कर कोई देव है जिनकी पूजा साधना प्रत्येक प्राणी को करनी चाहिए इस पर भगवान् सदाशिव ने गुरु तंत्र अपने श्रीमुख से सुनाया वह गुरु तंत्र गुरु की महिमा, गुरु का ज्ञान तथा मंत्र सिद्धि प्रदान करने वाला है और किस प्रकार से शिष्य को गुरु पूजा तथा साधना करनी चाहिए। १५१ इलोकों का यह गुरु तंत्र शिवमुख

गुरुरित्यक्षरं देवि ! जहांगे यस्य वर्तते ।  
तस्य कि विद्यते मोहात पाते वदस्य कि वृथा ॥

से उच्चरित महाकाव्य है जिसका एक-एक श्लोक पर ग्रंथ लिखा जा सकता है।

पहले १६ श्लोकों में तो महेश्वरी द्वारा पूछे जाने पर भगवान् शिव ने कहा कि यह एक अत्यंत गुरु तंत्र है और उसके लियान सब तत्त्वों में उपर है। गुरु एक नाम नहीं है सप्तस्त जीवन की चेतना है एक स्पन्दन है, उच्चना है, दिव्यता है जहाँ भन्य देवता मनुष्य की कल्पना के प्रतीक है वहीं गुरु साक्षात् स्पन्दन धूत, चेतना धूत, विद्यतम् है। यदि पूर्णता

गकारोच्चारं मात्रेण ब्रह्म हस्या विनश्यति ॥  
उकारोच्चारतो देवि ! मुच्यते जन्म यातकाल ॥

शब्द किसी के साथ लग रहका है।

रेखों छवार मात्रण उकारो छवारणात् पूजः ॥

व शिव ह । नन्दनाथ ,  
क्रोधानन्दनाथ, सुखानन्दनाथ,  
ज्ञानानन्दनाथ और बोधानन्द

आगे भगवान शिव कहते हैं

कि सबसे पहले मैं धर्म और काम मोक्ष देने वाले नित्य पूज्य अभीष्ट फलदायक, गुरु भक्ति दाता अपने मुख से निकले श्री गुरु ध्यान को कहुंगा और प्रत्येक ज्ञानदान व्यक्ति को ब्रह्म मूर्हत में उठकर पदमासन में बैठकर भिर मैं स्थित अधोमुख सहस्रदल पद्म में अपने गुरु का ध्यान करना चाहिए।

### शिव रवित-स्वघुरु ध्यान मंत्र

शुद्ध-स्फटिक-संकांशं शुद्ध-क्षोम-विराजितम् ।

गन्धानुलेपनं शान्तं वराभय- कराम्बुजम् ॥१॥

मन्द-स्मितं निज-गुरुं कारुण्येनावत्तोकितम् ।

वामोरु-शक्ति-संयुक्तं शुद्धाभरण- धूपितम् ॥२॥

स्व-शक्तत्य दक्ष-हस्तेन धूत-चारु-कलेवरम् ॥

वामेनोत्पत्त-धारिण्या भु-रक्तया सु-शोभितम् ॥३॥

परानन्द-रसोल्लास-लोचन-द्वय- पंकजम् ॥

श्री सदगुरु देव की शरीर की आभा निमल सफटिक के समान है और वे मुन्दर स्वच्छ रेशमी वस्त्र धारण किये हुए हैं। चन्दन का लेप है तथा उज्ज्वल आमुड़ों से शोभायमान है। उनके करकमलों में वर और अभय मुद्रा है। सुन्दर देह और आनन्दवल्प पश्चर मुख्य मुख्यान द्वारा दशा पूर्वक शिष्यों को देख रहे हैं। गुरुदेव के राथ ही उनकी पत्नी जो शक्ति स्वरूपा है विराजमान है तथा बाएं द्वाय में लाल कमल धारण किये हुए हैं। गुरुदेव के दोनों नेत्र, परमानन्द के रसोल्लास से परिपूर्ण हैं।

इस इकार सदगुरु देव का मानस ध्यान पर शिष्य मनसोपचार पूजा करे, सरस्वती के बीज मंत्र 'ऐ' का जप करे और मलि पूर्वक अपने सब कुलगुरुओं का ध्यान करे।

यह यह ध्यान देने की बात है कि कुल गुरु से तात्पर्य अपने वंश में उन्मत्त हुए देवताओं को माना जाता है वास्तव में 'कुल' का तात्पर्य है, कुण्डलिनी शक्ति में मूलाधार से ब्रह्मानन्द तक जो गुरु रथापित है उन्हें कुल गुरु कहा जाता है, ये तीन प्रकार के गुरु होते हैं। विश्वीथ, सिद्धीथ और मानवीथ तथा इनके नाम हैं। गुरु सद्वा प्रकृताणी यस्तु मूल्यमवानुयात । हन्त्य तैसा पाप नष्ट हो जाता है, स मुक्तः सर्वं पापेभ्यः शिव लोक स गच्छति ॥

नाथ का अवतर कर 'कुल-मुख' अर्थात् कुण्डलिनी-मार्ग सुषुमा के ऊपरी छिद्र के अपर अर्थात् ब्रह्म-रन्ध्र में इन सब विविध गुरुओं का ध्यान करें।

इसका तात्पर्य यह है कि सारे कुल गुरु मनुष्य कुण्डलिनी शक्ति में ही विराजमान हैं और वे परमानन्द के रस से उल्लासित हुदय बाले हैं। कुल अर्थात् कुण्डलिनी के सम्पर्क में निःतर रहने से इनका तपोमाल नहीं हो जाता है तथा अपने शिष्यों की शोतर से घेरे हुए अंतकरण से कृपा करने के लिए उधन रहते हैं। वर और अभय मुद्रा धारण किए हुए यह कुल गुरु अपने शिष्य को कुल और धर्म का ज्ञान बताते रहते हैं। ऐसे कल गुरुओं को जागत रखना और उनका आशीर्वाद प्राप्त करना साधक का करित्य है। इनके ध्यान मात्र से ही साधक सब लिङ्गिया प्राप्त कर लेता है।

साधक को जो शक्ति का उपासक है उसे कौल मार्ग के जाता गुरु से दीक्षा प्राप्त करनी चाहिए। शक्ति से परिपूर्ण गुरु ही सभा मंत्रों को प्रदान करने का अधिकारी है। यह दीक्षा देने वाला वास्तविक गुरु है। भगवान शिव कहते हैं कि जो मोण और मोल दोनों प्रदान करा सके वही शेष गुरु है। वास्तव में गुरु 'एक' शिव ही है नाम और रूप भेद से ही वे अवश्य मिलते हैं। इसमें किसी भी प्रकार का भेद नहीं करना चाहिए। क्योंकि सब में 'शिव' ही गुरु रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।

श्री गुरु देव ही एक मात्र शिव कहे जाये हैं वह मैं ही हूँ इसमें कोई सन्देह नहीं है। इसके अलावा मत्र और देवता को भी गुरु कहा गया है। अतः मंत्र देवता और गुरुदेव में कोई अन्दर नहीं है। साधना करने समय पूजन करने समय गुरुदेव का ध्यान साहसार में स्थापित हुक्य दल कमल मध्य गुरुदेव का ध्यान करना चाहिए और कभी गुरु के प्रत्यक्ष उपर्युक्त होने पर अपनी धृष्टि द्वारा गुरुदेव का ध्यान किया जाता है।

जो अपनी जीव द्वारा 'गुरु' हन दो अश्रों का उच्चारण करता है। उसे भेद पाठ की क्या आवश्यकता है क्योंकि 'अ'

अश्र के मात्र उच्चारण से ब्रह्म

जन्म जन्मान्तर के पार्षी का नाम। गुरु सेवा गुरु धर्मानं गुरु सत्तोत्रं गुरुदेवायः। प्राप्ति करता है। मंत्र तथा गुरु  
हो जाता है। एवं अक्षर उसके में जो शेष नहीं करता उस पर  
बाद पुनः विसर्जन का उच्चारण। गुरोः पूजा गुरोस्तुमिः गुरोभीनिर्णया वदि ॥ शक्ति स्वरूपा भगवती अस्यत  
करने से सारे पाप दोष धूल जाते हैं। भगवान् शिव कहते हैं प्रसन्न होती है और उसे सब कुछ प्रदान करती है।  
कि ब्रह्म का भस्तक काटने से जो मुझे ब्रह्म हत्या का पाप शिव कहते हैं कि गुरु देव की सेवा करता हुआ जो मृत्युरूप  
लगा था उससे मुक्ति 'गुरु' मंत्र का जप करने से ही मिली करता है वह सब पाप दोषों से छूट कर शिवनोक में जाता  
ही। इसी प्रकार गुरु साधना से भगवान् परशुराम को मातृवध वी।  
तथा देवराज इन्द्र को अहो हत्या के पाप से मुक्ति प्राप्त दुर्व  
श्री।

ब्रह्म, विष्णु, महेश, परमेश्वरी पर्वती, इन्द्रादि देवता और उन्हें कल्याण प्राप्त नहीं हो पाता क्योंकि अज्ञान के  
कुबेरादि वक्ष, भिल, गंधर्व,  
गंगा इन्द्रादि नदियाँ, नागवि  
सरण, पर्वतादि रथ्याकर, जंगम  
और इनके अतिरिक्त अन्य सभी  
जीव गुरुदेव के शरीर में  
विद्यमान रहते हैं। अतः गुरु  
देव के संतुष्ट होने पर नभी  
देवता और अन्य उक्त लोग  
प्रसन्न हो जाते हैं।

गुरु से बढ़कर न शास्त्र है,  
न तपस्या, न मंत्र, न स्वर्णादि  
फल। गुरु से बढ़कर न देवी है  
और न शिव है, गुरु से बढ़कर  
न मोक्ष है, न जप है, श्रीगुरु  
देव ही सर्वश्रेष्ठ है।

गुरु ही पिता है, माता है  
और भगवान् महेश्वर है, देवता  
के रुप होने पर गुरु रक्षा करते  
हैं। लेकिन गुरुदेव के रुप होने  
पर कोई रक्षक नहीं होता। जन्म

दाना पिता और ब्रह्म जान याता गुरु में गुरु ही श्रेष्ठ है। अतः प्रार्थना और मन ले कुशल चिंता प्रतिक्रिया करनी चाहिए।  
सदैव गुरुदेव को पिता से अधिक पूज्य माना जाता है।

यदि कोई शिष्य गुरु को मनुष्य समझना है तो उसे जीवन में कभी भी सिद्धि नहीं मिल सकती। जानी शिष्य गुरु देव को लबा निश्चिन्त रूप से शिव

स्वरूप तथा गुरु पत्नी को महेश्वर। एकथा गुरु गेहरूः शिष्यो यदि जपेन्मनुष्म ॥ शिष्य के मन में सदैव यही  
नमङ्गता है और सभी सिद्धियाँ। गुरोनाम न वक्तव्य कदाचिद्विषि पार्वति ॥। विचार होना चाहिए कि, मने

प्राप्ति स्वरूपा भगवती अस्यत  
करने से सारे पाप दोष धूल जाते हैं। भगवान् शिव कहते हैं प्रसन्न होती है और उसे सब कुछ प्रदान करती है।  
कि ब्रह्म का भस्तक काटने से जो मुझे ब्रह्म हत्या का पाप करता है वह सब पाप दोषों से छूट कर शिवनोक में जाता  
ही। इसी प्रकार गुरु साधना से भगवान् परशुराम को मातृवध होता है।

भगवान् शिव कहते हैं कि तुम बार-बार पूछती हो कि मेरे वचन तथा मंत्रों पर लोग पूर्णरूप से विज्ञाप्त क्यों नहीं करते

कारण ससार के लोगों की बुद्धि बढ़ा में पड़ जाती है और वे गुरु देव की बातों पर विज्ञाप्त नहीं करते अपनी विज्ञाप्त वाणी आदि के अहंकार में तथा लोक जाति में पड़कर कभी मोहवड़ा, कभी वेश दोष के कारण गुरुदेव पर विश्वास नहीं करते तो उन्हें संसार में मेरे मन वचन तथा गुरु के वक्तव्य दोषों का भी नाप्राप्त नहीं होता है।

गुरुदेव की सेवा किये लिना जो शिष्य 'कृत धर्म' का पालन करते हैं उसमें मन और देवता कभी प्रसन्न नहीं होते अतः वाणी से, मन से, और शारीरिक काव्यों से सदा गुरुदेव के हित में लगे रहना चाहिए।

शारीरिक काव्यों से गुरुदेव की सेवा आदि, वाणी से स्तुति,

गुरुदेव की बातों की मंत्र के समान नित्य मानना चाहिए। और उनके समझ मृति के समान शात और अनुशासित भाव

से खट्टे रहना चाहिए। शगवान शिव कहते हैं कि

ही जानि बाले अलग रहे अपने। गुरोः स्थान कैलाशं गृह चिन्ता मणिरुद्रम् । लोग ही निन्दा करे भाई बन्धु। वृक्षाली कल्प वृक्षाली भावयेत् सर्ववा हृषि ॥

द्वादश द्वा जाएं, चाहे शरीर नष्ट हो। परन्तु किसी भी वश में गुरुदेव की दुर्लभ सेवा को नहीं छोड़ना हो। जब ऐसा विचार जान ध्यान में चेतना बुद्धि में लगा रहता है तब महामाया सन्तुष्ट होकर चारों ओर अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्रदान करती है।

यिव कहते हैं कि गुरुदेव सदगुरुदेव के शिष्य तो बहुत होते हैं लेकिन किसी किसी में ही निर्मल सद्भक्ति का उदय होता है, और जिस शिष्य के हृदय में मध्यवर्त स्वरूप गुरुदेव के प्रति भक्ति उत्पन्न नहीं होती तो उसका धर्म, धूल, कुल और कर्म सब व्यर्थ है।

यदि गुरुदेव में भक्ति है तो पत्नी, पुत्र, पौत्री, माता, पिता, भाई, बन्धुओं के साथ गुरु का ध्यान, गुरु सद्बन्ध, गुरु मंत्र जप और गुरु की पूजा अवश्य करनी चाहिए।

गुरु की पूजा करने से इष्ट देवता की पूजा हो जाती है, गुरु का नपीण करने से ही इष्ट देवता की तुष्टि हो जाती है गुरु के प्रति भक्ति करने से ही और बन्दना करने से ही इष्ट देवता की भक्ति बन्दना और स्नुति हो जाती है।

यिविव प्रकार के गंध, पृथिवी, धूप, धूप, धूप, माला, आभूषण, वस्त्र से नित्य गुरुदेव की पूजा करनी चाहिए और जो शिष्य गुरु तथा गुरु माता शक्ति की पूजा करता है उससे मैं सदेव सन्तुष्ट होता हूं, और जिस शिष्य में गुरुदेव प्रसन्न नहीं होने हैं उनके रूपान, दान, तप, होम और देव पूजा का क्रोई लाभ नहीं है सब व्यर्थ है।

संसार में वृक्षशब्दण की पांच विधियां जप, होम, नर्णण, अधिक्रत तथा ब्रह्मण भोजन हैं तथा इसके लिए उपयुक्त स्थान विल्व वक्ष, अमृगान भूमि, गूर्ज्य घर, देव मंदिर, नदी का तट, पर्वत, पर्वत की गुफा, एक लिंग, मुन्दर वन तथा कल्प तक गढ़ा जल माता जात है, लेकिन इन सब से अधिक गुरुदेव के निवास की महिमा मानी गई है, जहाँ गुरुदेव निवास करते हैं वहाँ बैठकर अभ्यरण पूजन, मंत्र जप करने से शोध ली सिद्धि प्राप्त होती है।

वाराणसी, प्रयाग आदि तीर्थों में जाने से जो पुण्य मिलता है उससे कोटि गुना पुण्य गुरु स्थान का दर्शन करने से। गुरु गेह चिन्तन, शिष्यो यदि यत् पुण्य समाचरेत् । उसे मंत्र सिद्धि का गुरु आशिवाद मिलता है।

तत् सर्वमक्षयं प्रोक्तं पुण्यं तीर्थं शताधिकम् ॥

शिष्य का सदैव यहीं चिंतन

दोना चाहिए कि गुरुदेव का

स्थान कैलाश है उनका घर

चिन्तामणी गृह है, उस स्थान के वृक्ष समुह कल्प वृक्ष है

लताएं कल्प लताएं हैं, जल धारा अमृत धार है तथा पुण्य

मणिपूष्य है।

गुरु के स्मीप शिष्य को सदा समय, ऋषि, आलस्य, परिहास, तर्क, चिंतक और वाद विवाद से दूर रहना चाहिए। और गुरु गृह में रहते समय शिष्य को सदा उनन्य भाव से सेवक से समान व्यवहार करना चाहिए जिससे सदगुरुदेव प्रसन्न हो।

सदैव यहीं भाव रखना चाहिए कि भले ही प्राण चले जाएं या सिर कट जाए किन्तु गुरु की बात की अवहेलना कभी भी न हो।

भगवान शिव कहते हैं कि गुरुसेवा के भी नियम हैं और उन नियमों का उसे पालन करना चाहिए वे नियम हैं -

गुरुदेव की देखकर अष्टांग रूप से भूमि पर लेटकर उन्हें समस्कार करे।

गुरुदेव की प्रणाम कर शिष्य प्रतिमा के समान चिन्ह रहे और फिर गुरु आज्ञा प्राप्त कर ऐसे के पास बैठना चाहिए।

गुरुगृह में रहते हुए शिष्य जो जो पुण्य कार्य करता है उन सबका उसे सैकड़ों पुण्य तीर्थों से अधिक अक्षय फल प्राप्त होता है।

श्री गुरुदेव के चरण कमलों से अर्चित पवित्र जल में बहा, विष्णु, सूर्य तथा सभी पितृ देवताओं का वास रहता है ऐसे गुरु पदोन्नत को जो गृहण करता है वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का स्वामी हो जाता है, गुरुदेव का अन्न, प्रसाद रूप में जो गृहण करता है उसके कोटि जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

गुरु सबा का विधि पूर्वक पालन करने से पुरुशब्दण का कल मिलता है क्योंकि श्री गुरुदेव की सेवा पुरुशब्दर्पा ही है।

गुरुदेव के जागने के पहले ही शिष्य को निद्रा त्यागकर आज्ञा पालन के लिए तत्पर हो जाना चाहिए और अपने स्नान, पूजा, तपेण आदि का विचार छोड़कर गुरुदेव की सेवा में ही बराबर लगा रहे गुरुदेव के शयन के पश्चात ही शयन करना चाहिए जो शिष्य गुरु की इस प्रकार सेवा करता है उसके मंत्र सिद्ध होते हैं और तभी

# जीवन प्रकाशित होता है जिससे उसे कहते हैं

## दीक्षा

जीवन का वह पर्व जिसके साथ ही मनुष्य अपने जीवन में क्रान्ति लाता है और स्वयं अपना भारच लेखन प्रारम्भ करता है।

दीक्षा के सम्बन्ध में कई प्रकार के मत-मतान्तर हैं लेकिन दीक्षा तो जीवन में आवश्यक है और बुद्धि द्वारा लिया गया कोई भी कार्य परितया समझा कर ही करना चाहिए। दीक्षा के सम्बन्ध में इस महत्वपूर्ण विवेचन में सदगुरदेव द्वारा यह व्यक्त किया गया है कि वास्तव में दीक्षा संस्कार क्या है और दीक्षा के उपरान्त जीवन किस प्रकार परिवर्तित होता है। शास्त्र दीक्षा के सम्बन्ध क्या कहते हैं दीक्षा के द्वारा जीवन में किस प्रकार से तुवृत्तियों का नाश होता है। इस महत्वपूर्ण विवेचन की स्वयं समझ कर वृसरों का समझाना अत्यन्त आवश्यक है जिससे इस संस्कार पूर्ण विकास हो सके-

शास्त्रों में और जीवन में हम यह देखते हैं कि मनुष्य के लिया गया है। तीन प्रत्यक्ष देव हैं ये तीन प्रत्यक्ष देव हैं-माता, पिता और गुरु। इन तीनों को बहा, विष्णु तथा महेश की उपाधि से विभूषित किया गया है। सृष्टि के जन्म दाता बहा है, बालक को जन्म माता देती है इसलिए उसे बहा कहा गया है। सृष्टि के पालन करता भगवान श्री विष्णु है उसी प्रकार, एक बालक के पालन करता उसके पिता होते हैं इसलिए पिता को विष्णु का स्वाम दिया गया है। ग्राहणों का संहार कर जगत की रक्षा करना, भगवान वाकर कार्य है। ठीक उसी प्रकार गुरु भी व्यक्ति के जीवन में कुसरकारों का नाश करता है। इसलिए गुरु को शिव के उपाधि से विभूषित है तो वह व्यक्ति असंलकारिक ही कहलाएगा। व्यक्ति को जीवन में यह धूप सत्य है कि बोई यह नहीं कह सकता है कि मैं बिना माना-पिता के उत्पत्त हुआ हूँ क्योंकि यह असंभव है। व्यक्ति को जन्म लेने के लिए यहां तक की भगवान को भी विभिन्न अवतारों के रूप में जन्म लेने के लिए किसी ना किसी माता के गर्भ का चयन करना पड़ा। इसी प्रकार यदि कोई व्यक्ति कड़े की से बिना पिता के उत्पत्त हुआ तो यह बात भी असंभव है। क्योंकि निस व्यक्ति को जपने पिता का नाम नहीं गालूम होता है, वह आलक वर्पसंकर कहलाता है। ठीक इसी प्रकार कोई व्यक्ति कहता है कि मेरा कोई गुरु नहीं करता है। इसलिए गुरु को शिव के उपाधि से विभूषित है तो वह व्यक्ति असंलकारिक ही कहलाएगा। व्यक्ति का



शारिरीक स्वास्थ्य वह अपने नियन्त्रण में रख सकता है लेकिन मानसिक स्वास्थ्य का पूर्ण निर्माण गुरु ही करते हैं। गुरु दूरदर्शी व्यक्ति के रूप में उसके मस्तिष्क पर विचार स्वभाव, ज्ञान गुण, कर्म आदि द्वारा उसके मानसिक स्वास्थ्य का निर्माण विकास और नियन्त्रण करते हैं। जिन व्यक्ति के गुरु नहीं होते उन्हे 'निपुरा' कहा जाता है।

मनुष्य की यह कल्पनोरी है कि वह दूसरों से ही सब कुछ सीखता है और डस भीखुने में सामान्य समाज में भले तत्वों की अपेक्षा बुरे तत्व अधिक होते हैं। इन बुरे तत्वों का आकर्षण इनमा अधिक प्रबल होता है कि छोटी आदि में विकास के समय इन बुरी आवृत्तों बुरे संस्कारों की ओर आसानी से खिल जाता है। मां-बाप पूर्ण रूप से ध्यान नहीं दे पाते हैं कि बालक किन संस्कारों को अपनी मनोभूमि में जमा रहा है। जब वह बड़ा होता है तो ये संस्कार और स्वभाव इनसे

अधिक दृढ़ हो जाते हैं कि उन्हें हठाना कठिन हो जाता है। जन्म से ही कोई बालक चौर, डाकु, अस्त्यवाकी, थोखेबाज नहीं होता है। वह जीवन की प्रारम्भिक अवस्था में जिन संस्कारों को प्राप्त करता है। और जिस बातवरण में पलता-बढ़ता है वही उसके जीवन में आगे चल कर उसके व्यक्तिव का निर्माण करते हैं।

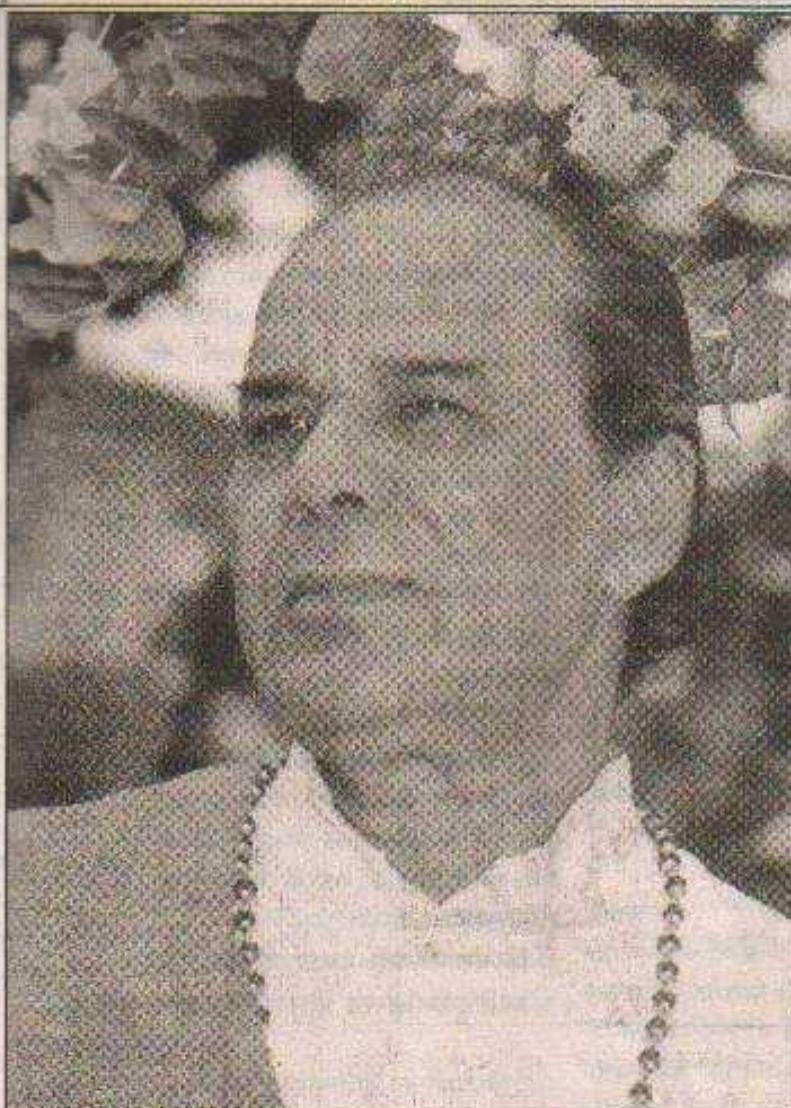
हमारे प्राचीन आदि ऋथियों ने इस लिखित को देखकर एक महत्वपूर्ण उपाय निश्चित किया कि प्रत्येक बालक पर उसके माता पिता के अनिरिक्त ऐसे व्यक्ति का भी नियन्त्रण होना आवश्यक है जो मनोविज्ञान की सूक्ष्मताओं को समझता हो, जो दूरदर्शी तत्व जानी और पारदर्शी हो जो बालक के मन में वहने वाले संस्कारों को देख सके और इन अधिक मानसिक सुदृढ़ हो की वह उन संस्कारों में सुधार ला सके। ऐसे मानसिक नियन्त्रण कर्ता को गुरु की उपाधि से विभूषित किया गया है। जीवन की इस यात्रा में हर व्यक्ति को सहारे की आवश्यकता रहती है। और वह पथप्रदर्शक गुरु ही हो सकते हैं। इसीलिये गुरु को हमारे समाज में प्रमुख स्थान दिया गया है। कोई भी व्यक्ति स्वयं का आत्म निरीक्षण नहीं कर सकता है। वह दूसरों कि

आत्मेत्यना कर सकता है उन्हें उचित सलाह दे सकता है लेकिन वैसी ही सलाह अपने स्वयं के लिए नहीं कर पाता है। स्वयं के सम्बन्ध में अपने आप निर्जय करना अत्यन्त कठिन होता है। आत्म निर्माण का कार्य भी ऐसा ही है। जिसके लिए स्योग्य सहायक और गुरु की आवश्यकता होती है।

मनुष्य के पूर्ण बोलिक और मानसिक विकास के लिए गुरु परम तत्व है। क्योंकि शेष गुरु द्वारा ही वह निश्चित हो सकता है कि मनुष्य की विचारधारा, स्वभाव, संस्कार, गुण, प्रकृति, जादते, इच्छाएं, महत्वकांशों, कार्यप्रयत्नि उचित दिशा में जा सकेंगी। और मनुष्य अपने आप में प्रसन्न, समृद्ध, पवित्र और परिश्रमी बन सकेगा, इसलिये गुरु अन्यना आवश्यक है।

### गुरु की आवश्यकता

गुरु के बहुत मार्गदर्शन ही नहीं करते हैं, वरन् वह समय की



गुरु के पूर्ण प्रताप से कुण्डलिनी देवी का जगरण हो गया, तो मन्त्र, तन्त्र, पाठ, पञ्चन जप, तप, ज्ञान, ध्यान जो कहु भी बन पड़ेगा, यह सभी सिद्धि को प्राप्त होंगे। इससे पूर्ण शिष्य दुरुमय जगत् को नियमा और नरक माना जाना या यही सत्य और स्वर्ग बन जाएगा, क्योंकि शक्ति के जगरण से हर क्षेत्र में सफलता से स्तम्भ स्वापित किए जाने सम्भव होंगे। आनन्दशक्ति के विकास से समर्प्त मन-व्याधियों का परिष्कार हो जाएगा।<sup>11</sup>

### दीक्षा की आवश्यकता

“श्री गुरुर्वेद की कृपा और शिष्य की शक्ति, इन दो पवित्र धाराओं का संगम ही दीक्षा है। गुरु का आत्मदान और शिष्य का आत्मसमर्पण, एक की कृपा और दूसरे की शक्ति के अन्तरेक रे ही यह सम्पर्क होता है।

दीक्षा एक दृष्टि से गुरु की ओर से आत्मदान, ज्ञान-संचार, अध्यवाशक्तिपाल है, तो दूसरी दृष्टि से शिष्य में सुशृङ्ख जान और शक्तियों का उद्बोधन है। दीक्षा से ही शरीर की समर्प्त आशुद्धियां मिट जाती हैं और वेद शुद्ध होने से वेद-पूजा का ऋचिकार मिल जाता है। गुरु एक है और उन्होंने चारों ओर शक्ति का विस्तार हो

दीर्घा को कम करते हैं और उसे बहुत ही कम समय में अर्थोद्ध लाभ की सिद्धि में सहायक होते हैं। इस जगत् में मानव अपूर्ण रूप से आता है। उसे पूर्णता की पूर्ति की अभिनाशा रहती है। इसकी पूर्ति के लिए गुरु ही एकमात्र सहारा होते हैं।

**मूलपद्मे कुण्डलिनी यावत् सा निद्रिता प्रभा।**

**तावत् किञ्चित् सिद्धयेत् मन्त्रयतार्थनाकिदक्षम्॥**

**जागर्ति यदि सा देवि बहुभिः पूर्णसञ्चयैः।**

**तदा प्रसादमायान्ति मंत्रं यंत्रार्च्चनादयः।**

“मूलाधार में जब तक कुण्डलिनी शक्ति सोई लुई है, तब तक मन्त्र, यन्त्र, अर्चन आदि कर्म सफल नहीं होते। यदि

रहा है। यदि परम्परा की दृष्टि से देखें तो मूल वुक्ष मरमात्मा से ही बद्धा, रुद्र आदि के क्रम से जान की परम्परा बत्तो आई है और एक शिष्य से दूसरे शिष्य में संक्रान्त होकर वही वर्तमान गुरु में भी है। इसी का नाम सम्प्रदाय है और गुरु के द्वारा उसी अविच्छिन्न साम्प्रदायिक ज्ञान की प्राप्ति होती है, क्योंकि मूलशक्ति ही क्रमशः प्रकाशित होती आई है। इससे हृदयस्थ सुप्रशंसित के जागरण में बड़ी सहायता मिलती है और यही कालण है कि कर्म-कर्मी तो यिनके चित्त में बड़ी भक्ति है, व्याकुलता और सरल विश्वास है, वे भी मगवत्कृपा का उत्तमा अनुभव नहीं कर पाते, मिटना कि शिष्यों को दीक्षा से होता है।”

**दीक्षा लक्ष्मार दोषक का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार है जहाँ वह मात्रसिक रूप से एक विशेष शक्ति से पुढ़ जाता है जो उसके जीवन में जिसलए मार्गदर्शन देती है। पुरुष दीक्षा के द्वाया ही शिष्य पर एक विशेष लियत्रया रखते हए यह जगति प्रदान करता है जिससे वह अपने जीवन में भहो विशेष की ओर चलता रहे। युरु द्वारा दीक्षा के पश्चात ही शिष्य में एक शक्ति कर उत्पन्न होता है और इस लिए दीक्षा को श्री पुरुष देव की कृपा और शिष्य की श्रद्धा ही वह प्रवित्र धाराओं का संज्ञम कहा गया है। युरु का ऊर्ध्वदात्र और शिष्य अत्म समर्पण युरु को कृपा और शिष्य की श्रद्धा के अन्तर्क से ही दीक्षा संस्कार सम्पूर्ण होता है।**

इसका कारण यह है कि दीक्षा देने समय युरु को अपने शरीर में गुरुत्व शक्ति की स्थापना करनी पड़ती है तभी वह युरु दीक्षा देने के बाह्य होता है। सहस्रल कमल में निवास करने वाले परम शिव की प्राणशक्ति ही गुरुत्व शक्ति कही जाती है। इस महाशक्ति के संचार से ही युरु शिष्य की आत्मा के ब्रह्म मलों का संरक्षार कर पाता है।

दीक्षा एक कोई सामान्य संस्कार नहीं है जिसे सामान्य रूप से सम्पन्न किया जा सके, दीक्षा जीवन का वह अध्याय है जहाँ व्यापिक अशुद्धता से शुद्धता की यात्रा प्रारम्भ करता है। इसलिये शास्त्रों ने दीक्षा की जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार कहा है। जिसके बिना व्यापिक मनुष्य नहीं बन सकता केवल और केवल दीक्षा के माध्यम से ही वह पशुभाव, गुद्रभाव से मुक्त होकर मनुष्यभाव, द्विजभाव को शहण करता है।

दीक्षा के सम्बन्ध में शास्त्रों के महत्वपूर्ण सूत्र निम्न हैं-

**दीयते ज्ञान सद्भाव क्षीयते पशुवासना।**

**दानक्षण्य संयुक्ता दीक्षा तेनेह कीर्तिया॥**

“जो ज्ञान देती है और पशु-वासना का क्षय करती है, ऐसी दान और क्षणशुद्धि किया को दीक्षा कहा जाता है।”

**दीयते ज्ञानमन्यर्थं क्षीयते पाशबन्धनम्।**

**अतोदीक्षेति देवेशि कथिता तत्त्वचिन्तकैः॥**

**मनसा कर्मणा वाचा वत्पापं समुपार्जितम्।**

**तेषां विशेषा करणी परमज्ञानदायतः॥**

तस्मात् दीक्षेति लोकेऽस्मिन् गीयते शस्त्र वेदकैः।  
विज्ञान फलवा मैव द्वितीया लयकारिणी।  
ततीयामुक्तिदा चैव तस्माद्दीक्षेतिधीयते॥  
“जो ब्रह्मज्ञान को प्रदान करने वाली और पाश व कर्म-बन्धनों का क्षय करने वाली है। तत्त्व-चिन्तकों ने उसे दीक्षा नाम दिया है।

मनसा, वाचा, कर्मणा जो पाप किये जाते हैं, उनकी नशकार्ता और परम ज्ञान प्रदाता होने के कारण शास्त्रज्ञों ने इसे दीक्षा कहा है। प्रथम विज्ञान फल देने वाली, द्वितीय लय भोग मिहू द्वाया होने वाली और तृतीय मोक्षदाता होने के कारण इसे दीक्षा कहते हैं।”

**दीयते परमं ज्ञानं क्षीयते पापं पद्धतिः।**

**तेन दीक्षोच्यते यन्त्रे स्वागमार्थवलबालात्॥**

लघु वल्पस्त्र

“जो परम ज्ञान की दाता और पापों का नाश करती है, आगम शास्त्रों में उसी को दीक्षा के नाम से सम्बोधित किया गया है।”

**ददाति शिवतादात्म्यं क्षिणेति च मलत्रयम्।**

**अतो दीक्षेति सप्रोक्ता दीक्षात्तदार्थवेदभिः॥**

“जो शिव की नद्रपता-समाधि को प्रदान करती है और तीन मलों (आणव, कर्मठ और मायिक) का क्षय करती है। अतः दीक्षा तत्त्व के अर्थ के जानकार मुनियों ने इसका नामकरण दीक्षा किया।”

**दिव्यज्ञानं यतो दद्यात् कुर्यात् पापक्षयं ततः।**

**तस्माद्दीक्षति सा ग्रोक्ता सर्वतन्त्रस्य सम्मता॥**

विश्वसार तन्त्र

“जो पापों का नाश करके विद्य ज्ञान प्रदान करती है, उसे दीक्षा कहा जाता है। सभी तन्त्रों का यही मत है।”

**ददातिव्यभवञ्चेत् क्षिण्यात् पापसन्ततिम्।**

**तेन दीक्षेति विद्याता मुनिभिस्तन्त्रपारणे॥**

गोतमीय तन्त्र अंक ७

“जिससे दिव्य भाव की उपलब्धि और पाप-नाश होता है, तंत्र में विश्वात मुनियों ने उसी को दीक्षा कहा है।”

### दीक्षा के स्वरूप

दीक्षा का तत्पर्य केवल श्रीगुरु के सामने बैठकर कोई मन्त्र लेना ही नहीं है, यह तो एक कमबद्ध श्रृंखला है, जिसके पहुंचने की पहली सीढ़ी है, जिससे आगे की दीदियां, मार्ग निरन्तर मिला ही रहता है, दीक्षा तो शिव और इसकी का मिलन कर शिष्य में प्रवाहित करना है।

मूल रूप से दीक्षा के तीन भेद हैं- १-शास्त्र दीक्षा, २-जांभवी दीक्षा, ३-मांत्री दीक्षा। आगे चल कर मांत्री जिसे आणवी दीक्षा भी कहा गया है, और अधिक भेद हो जाते हैं-

### १-शास्त्र दीक्षा

शास्त्र दीक्षा में शिष्य अपनी ओर से कुछ भी नहीं करता, गुरु, शिष्य के अनन्दित में प्रवेश कर कुण्डलिनी शक्ति को जागृत कर, अपनी शक्ति का निलन करा देते हैं, यह दीक्षा तो गुरुदेव अपने परम शिष्यों को ही प्रदान करते हैं, जो शिष्य साधना के पथ पर बढ़ते आगे बढ़ गया हो।

### २-जांभवी दीक्षा

इसमें गुरु एवं शिष्य आपने-सामने बैठते हैं, गुरु अपनी प्रसन्न दृष्टि से शिष्य को स्पर्श करते हुए उसके भोतर विष और शक्ति के चरण रिथर कर देते हैं, शिष्य समाइरश रहते हुए समाधिष्य हो जाता है और उसकी कुण्डलिनी जागृत हो जाती है, यह दीक्षा श्रीगुरु अपने शिष्य के स्तर को परवर्त कर ही प्रदान करते हैं।

### ३-मांत्री (आणवी) दीक्षा

मांत्री दीक्षा ही सामान्य साधक के लिए आवश्यक दीक्षा है, जिसमें गुरुदेव शिष्य को मंत्र प्रदान करते हैं। शिष्य को अनुष्ठान पूजन दृग्यादि सम्पन्न करना होता है, इस दीक्षा से ही साधक को शक्तिपात्र की पावता प्राप्त होती है और उसके द्वारा किये गये मंत्र नप, अनुष्ठान उसे उचित सिद्धि दिलाते हैं, गुरुदेव अपने भावनात्मक शिष्यों को प्रथम रूप में यही दीक्षा दे लें उसकी साधना का श्रीगणेश करते हैं, और यह आवश्यक भी है।

आणवी दीक्षा का विस्तार बहुत अधिक है, और इस दीक्षा के दस भेद हैं, जिन्हें समझना प्रत्येक शिष्य के लिए आवश्यक है, यह दस भेद हैं-

१-स्मार्ती, २-मानसी, ३-योगी, ४-चाकूपी, ५-स्पाशिंकी, ६-वचिकी, ७-मांत्रिकी, ८-होत्री, ९-शास्त्री, १०-अभिषेचिका।

### १-स्मार्ती दीक्षा

जब गुरु और शिष्य विन्न-विन्न स्थान पर स्थित हों, तो यह दीक्षा सम्पन्न की जाती है, निवित्त समय पर शिष्य रनान कर अपने स्थान पर बैठता है और गुरुदेव अपने स्थान पर शिष्य का स्मरण करते हुए उसके दोषों का विश्लेषण करते हुए उन को भस्म कर, सिद्धि के मार्ग पर उसे स्थित कर देते हैं।

### २-मानसी दीक्षा

इसमें गुरु और शिष्य एक ही स्थान पर स्थित रहते हैं

लटरत्तोश्वर में कहा है कि सभी तरह की दीक्षा से मोक्ष की उपलब्धि होती है और घोम की प्राप्त होती है। यादों का नाश होता है। गुरु से दीक्षा न लेकर जो केवल पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर साधना करता है, वह राहस्य मञ्चवातर में श्री मद्भासि नहीं पाता। जो व्यक्ति दीक्षा नहीं होता, उसके व्याप, विवाह, तप और तीर्थ यात्रा कुछ भी सफल नहीं होता। ऐसे व्यक्ति द्वारा या ऐसे के लिए किया भास्त्र मान्य नहीं होता। इसलिए सद्गुरु से दीक्षा लेना अत्यन्त आवश्यक माना गया है।

तत्त्व का मत है कि दीक्षा से अपूर्णता का नाश और अत्मा की स्पृह क्षुद्र होती है। इससे आण्टमल की निवृत्ति होती है। जो आगा पश्चात्य में स्थित है, वह दीक्षा के प्रभाव से ऊपर उक्त विद्या को प्राप्त होता है।

और स्मार्ती दीक्षा के अनुरूप ही श्रीगुरु शिष्य का स्परण करते हुए उसे दीक्षा प्रदान करते हुए उसे शिव और शक्ति तत्व से मानसिक रूप से परिचित करते हैं।

### ३-दोत्री दीक्षा

इस दीक्षा में गुरु योग पद्धनि से शिष्य के शारीर में प्रवेश करते हुए उसे दीक्षा प्रदान करते हुए उसे शिव और शक्ति तत्व से योगियों के लिए ही है।

### ४-दाक्षुषी दीक्षा

इसमें श्रीगुरुदेव आपने शिव भाव की जागृत कर कर्त्तव्य दृष्टि से दीक्षा के समय शिष्य को देखते हुए उसके दोषों को मस्मीभूत करते हैं।

### ५-स्पाशिंकी दीक्षा

इसमें गुरुदेव अपने इस्त पर शिव नडल बन कर शिव स्थित कर, शिव स्वरूप जागृत कर, इस शिव हस्त का स्पर्श कर, शक्ति जागृत करते हैं।

### ६-वाचिकी दीक्षा

इस दीक्षा में गुरुदेव सर्वप्रथम अपने गुरु का ध्यान कर, आपने भीतर अपने गुरु को स्थित कर, शिष्य को विधि-विधान सहित मंत्रदान प्रदान करते हैं।



#### ७-तांत्रिकी दीक्षा

इस दीक्षा में गुरुदेव स्वयं व्याल इत्यादि विशेष मंत्र कियाएं रखना कर भन्नात्मक होकर अपने शरीर से शिव के शरीर में मन्त्र का संकल्पन करते हैं, जिस भव का पालन शिव के लिए आवश्यक होता है।

#### ८-हुक्त्री दीक्षा

इसमें यज्ञ-स्थान पर बैठ कर अभिने प्राच्छवलित कर यज्ञ आहुति देते हुए शिव को दीक्षा प्रदान की जाती है।

#### ९- शास्त्री दीक्षा

इसमें किसी प्रकार की सामग्री की आवश्यकता नहीं होती।

श्रीजूस अपने शिष्य की भक्ति भवना सेवा, समर्पण, वोन्यता को देखते हुए, शिष्य को शास्त्रीय वान प्रदान करते हुए दीक्षा देते हैं।

#### १०-अभिषेकिका

##### दीक्षा

इसमें सर्वधृथम गुरुदेव एक घट पात्र में जल भर कर शिव और शक्ति की पूजा करते हैं, और उस जल से शिष्य के सिर पर अभिषेक सम्पन्न करते हैं यह भी एक उच्चकोटि की विशिष्ट दीक्षा है।

शास्त्रों में तो आगे दीक्षा के संबंध में और कई वर्णन देव आते हैं लेकिन मूल स्वरूप इन्हीं दीक्षाओं से निकला है, तन्त्र शास्त्रों में दीक्षा स्तर के संबंध में भी लिखा है, जो गुरुदेव अपने शिष्य को उसकी साधना स्तर के अनुरूप प्रदान करते हैं।

दीक्षा को केवल एक प्रथा मानना उचित नहीं है, इसे तो मर्यादा पालन का मार्ग मानते हुए उपरे जीवन को ऐसा मोड़ देना है, जिसमें धोष और दुःखों का मार्जन है, पञ्चशक्तियों का विकास है, कण्डलिनी जागरण प्रक्रिया है, दिव्य भाव जागृत करना है।

दीक्षा के इन स्वरूपों में यह स्पष्ट होता है कि दीक्षा जीवन का आवश्यक तत्व है और इसकी महिमा विशाल है जो इस रहस्य को समझ जाता है। वही जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकता है। आइये देखते हैं हमारे शास्त्र दीक्षा की महिमा के संबंध में क्या कहते हैं-

##### दीक्षा की महिमा

दीक्षवै मोचयत्यूदर्धवै शेषधाम नयत्यपि।

अर्थात् 'दीक्षा से मुक्ति होती है और वह ऊपर के शिवधाम में पहुँचती है।'

दीक्षया पाशमोक्षस्तु शुद्धभावाद् विवेकजम्।

'दीक्षा से पाशों का मोक्ष होता है और उसके बाद



विवेकनन्दजीन की उत्पत्ति होती है।

पिंचला तंत्र के अनुसार-

दीक्षा बिना न मोक्षः स्यात्प्राणिना शिवशासनात्।

सा च न स्याद् बिनाचार्यं भित्याचार्यं परम्परा॥

उपानाशतेनापि य बिना नैव भिन्न यति।

तां दीक्षामाश्रयेद यत्नात् श्रीगुरोर्मन्त्रसिद्धये॥

“ शिल्व का अनुशासन यही है कि दीक्षा के बना विभी को मुक्ति प्राप्त नहीं होती है। आचार्य-परम्परा बिना दीक्षा नहीं होती। ऐकड़ों प्रकार की उपासना-पद्धतियाँ प्रचलित हैं, परन्तु दीक्षा के बिना सिल्व प्राप्त नहीं होती। गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करके ही मुक्ति प्राप्त करना सम्भव है।”

रसेन्द्रण यथा विद्मधः  
सुवर्णं तां द्वजेत।  
दीक्षाविद्वस्तथैवात्मा  
शिवत्वं लभते प्रिये ॥  
दीक्षाऽनिनदग्धवर्मासी  
यायाद्विद्विव्यवन्धनः।  
गतस्तस्य कर्मवन्धो  
निर्जीवश्च शिवो भवेत्॥

अर्थात् ‘रसेन्द्र (पारद भस्म) से विद्व होकर लोहा सुवर्ण बन जाया करता है। उसी भाँति दीक्षा से भली भाँति विद्व हुआ आत्मा है प्रिये’ शिल्व के स्वरूपता को प्राप्त हो जाया करता है। दीक्षा स्वर्ण अग्नि से बग्ध हुए कर्मों वाला यह मनुष्य विच्छिन्न बन्धन बाला हो जाया करता है। इसके कर्मों का बन्धन तो निःशैष हो जाया करता है। पिर जब यह मृत होता है तो शिव के स्वरूप वाला हो जाया करता है।”

दनाश्रिय यामल के अनुसार-  
अनीश्वरस्य मत्यस्य  
नास्ति त्राता यथा भुति।  
तथा दीक्षाविहीनस्य  
स्वामी परत्र च॥

अर्थात् ‘जो मनुष्य बिना ईश्वर वाला होता है, जिस तरह से भूमण्डल में उस अनीश्वरवादी का कोई ब्राण करने वाला नहीं होता है, वेळे ही दीक्षा से विद्वान् पुरुष का भी यहाँ और परलोक में कोई रक्षक नहीं होता।’

विष्णु यामल में लिखा है-

अतः गुरु प्रणम्यैव सर्वस्वं विनिवेद्य च।

गृहीयाद्विष्णवं मन्त्रं दीक्षापूर्वं विधानतः ॥

अर्थात् ‘इसीलिए इस प्रकार से गुरु को प्रणाम करके जो भी कुछ अपने पास हो उस सब कुछ को उनकी लेवा में समर्पित करके मन्त्र का ग्रहण करे, जो कि विधान से दीक्षापूर्वक ही होना चाहिए।’

पुरश्वरण रसाल्लासा (प्रथम पटल) के अनुभाव दीक्षा से बहुकर न कोई जान है, न तप है। अतः यह सर्वश्रेष्ठ है।

नवरत्नेश्वर में कहा है कि सभी तरह की दीक्षा से मोक्ष की उपलब्धि होती है और योग की प्राप्ति होती है। पाँचों का नाश होता है। गुरु से दीक्षा न लेकर जो केवल पुस्तकोंय ज्ञान के आधार पर साधना करता है, वह सहज मन्वनतार में भी सद्गति नहीं पाता। जो व्यक्ति दीक्षा नहीं लेता, उसके बत, नियम, तप और नीर्थ यात्रा कुछ भी सफल नहीं होता। ऐसे व्यक्ति द्वारा या ऐसे के लिए किया शाहद मान्य नहीं होता।

इसलिए सद्गुरु से दीक्षा लेना अत्यन्त आवश्यक माना गया है।

तन्त्र का मत है कि दीक्षा से आर्प्तिना का नाश और आत्मा की साधनक शुद्धि होती है। इससे आपावन्न की निवृति होती होती है। जो आत्मा पशुभाव में स्थित है, वह दीक्षा के प्रभाव से ऊपर उठकर शिव को प्राप्त होता है।

### वर्तमान द्युग और दीक्षा

भौतिक वादी दर्तगान युग में मनुष्य जिस प्रकार की शिक्षा इन्द्राचि ग्रहण कर रहा है। उससे उसका भौतिकता का बाब्द विकास तो ही रहा है लेकिन अन्वर ही अन्वर वह खाली होता जा रहा है। आनंदल मनुष्य का व्यक्तिगत बाह्य चक्र वमक से तो परीपूर्ण है लेकिन मीलतर सी भीतर वह कलान्त तथा उशान्त अनुभव करता है। इसलिए उसकी आयु भी कम होती जा रही है और युवावस्था में ही अलड प्रेशर, मधुमेह आदि वीमारीय बढ़ती जा रही है। ये सब आनंदरिक शक्ति के कारण हैं। इस कारण उसे आध्यात्मिक गुरु की विशेष आवश्यकता है। जो उसके भीतर के अनुभवों को दूर कर सके। भीतर का अनुभवों दूर होने की मनुष्य आनंदित होता है और यदि जीवन में आनन्द नहीं है तो बाह्य रूप से प्राप्त हजार सुख भी उसके लिए खोखले हैं।

यह मही है कि आनंद गुरु आवश्यकता से अधिक है गए है और व्यक्ति किससे जीक्षा प्राप्त कर अपने जीवन को एक आनंद की राह दें। यह निश्चित करना उसके लिये अत्यन्त कठिन हो गया है। इसके साथ वह भी निश्चित है कि जहाँ उसे सद्गुरु अर्थात् यास्तविक गुरु प्राप्त होते हैं। वहीं बुद्धि से नहीं अपितु आत्मा ने एक आवाज अपने आप आ जाती है। यहीं मेरे गुरु हैं जहाँ मृग्य पूर्ण शान्ति प्राप्त हो सकती है।

इसलिए शास्त्रों का आदेश है कि दीक्षा शहित ज्ञान निष्ठा होता है।

विना दीक्षा फलं नस्यादयमिनां शिवशासने ।

सा च न स्याद्विनाचार्यं पुरःसरम् ॥

वेदिं दीक्षाविहीनस्य न भिद्विनं सदगतिः ।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन गुरुणा दीक्षितो भवेत् ॥

अधीत् “विना दीक्षा के कोई भी फल नहीं होता है, जो शिव के शासन में अपरहित होते हैं। उनको फल नहीं मिलता है।

यह दीक्षा भी आचार्य के विना नहीं होती है, अतएव आचार्य के पुरस्सर ही होते हैं। हे देवि! जो दीक्षा से विहीन पुरुष है, उसे न तो बिद्धि होती है और न उसको सद्गति ही। इससे सभी द्वयलों से गुरु के द्वारा दीक्षित होना चाहिये।”

तन्त्र की भाषा में कहें तो यों कहा जा सकता है कि दीक्षा का उद्देश्य समस्त प्रकार के पश्चों का नाश करके ईश्वर-भाव का विकास करना है। इसके दो मुख्य अङ्ग माने जाते हैं— एक, पाँचों का नाश करना और दूसरा, शिवरत्न के साथ शिष्य का योग कराना। इसमें गुरु-शक्ति ही प्रधान कार्य करती है।

इसलिए गुरु को सामर्थ्यवान होना आवश्यक बताया गया है। सामर्थ्यवान गुरु से दीक्षा लेने वे शिष्य को भी उसके निष अधिकतर सिल करना आवश्यक है।

गुरु की प्रथम और प्रमुख भूमिका शिष्य जीवन में यह है कि उसे सभी प्रकार के प्रलोभनों, वासनाओं से बुत कराकर शुद्ध व एकाकार भावना के राय पूर्ण समर्पण के बिन्दु तक लाना। वृत्तरी और शिष्य की विद्युती हुई चेतना को एक केन्द्र बिन्दु दिया जाता है जिसका कि वह अनुभरण करता है। आनंदरिक जीवन के उत्थान के लिये उसे समय-समय पर वोगम्याल का मार्गदर्शन दिया जाता है। अत में गुरु की भूमिका होती है कि वह शिष्य की पूरी तरह से सुरक्षा और अभय की स्थिति प्रदान करे विद्युती युगों-युगों से मनुष्य जिन्दा रहने के लिये संघर्ष कर रहा है। अप्स्तिकास रूप से अर्थ, शाश्वत, सता और हृषियार सभी जीवित रहने के लिए प्रयुक्त हैं।

पुराने इनिहासों से यह प्रमाणित होता है कि मनुष्य जदा से ही बहुन असुखित रहा है। लेकिन यदि कुछ व्यक्ति भी विर्भूत, सन्तुष्ट, सत्यान्वेषी होकर गुरु-शरण में आ जाये तो वे जीवन का सही मनवन्ब समझ सकते हैं और अनेकों के लिए विद्युती गेहानी बन सकते हैं। इस प्रकार गुरु हमें आत्मिक पथ के उप पदाव तक पहुंचा देता है जहाँ विवलित या पतित होने का छिल्कूल पथ नहीं रहता है।

ऐसे गुरु और ऐसे शिष्य की आवश्यकता दुनिया को द्येश रहनी रही है और रहती रहेगी।

# हे देवेश गणपति!

शान् शत्रू विज्द्वाप्

सर्वीकामना सिद्धि-प्रिया प्रिणाशक-देव

त्रि-गणेश साधना विधानम्

गणपति साधना के नियमों के सम्बन्ध में बड़ी ही भान्ति है और जब प्रत्येक साधक यह जानता है कि कोई भी पूजा साधना अथवा शुभ्र कार्य गणपति पूजा के बिना संभव नहीं है तो यह कार्य क्यों नहीं उही रूप से ही सम्पन्न किया जाय।

प्रत्युत है, गणपति साधना के विशेष लियम्, उभ, इत्यादि नियमों विशेष व्याल में साधना आवश्यक है।

गणपति साधना साधकों को चाहिए कि वे शास्त्र की मर्मांकों के उनकूल कार्य और साधना करें नियमसे कि उन्हें शीघ्र और पूर्ण सफलता प्राप्त हो सके, इसके लिए निम्न तथ्यों का ध्यान साधकों और गृहस्थ ल्यक्तियों के लिए आवश्यक है।

१. सभी कार्यों की स्थिति के लिए गणपति के साथ श्री सूर्य, श्री दुर्गा, श्री शिव और श्री विष्णु की पूजा भी करनी चाहिए।

२. गृहस्थ ल्यक्तियों को केवल एक ही देवता की पूजा

नहीं करनी चाहिए अपितु अनेक लिए एक से अधिक देवताओं का पूजा उनकूल रहती है।

३. पूजा में साधक को चाहिए कि सर्वत्रथम सूर्य फिर शणपति फिर दुर्गा, शिव और विष्णु को पूजा करें, क्रम इसी प्रकार रहना चाहिए।

४. कभी-कभी घर में या पूजा स्थान में अधिक मूर्तियां या चित्र हो जाते हैं, अतः साधकों को इनकी संरक्षण का जान होना आवश्यक है।

घर में दो शिवलिंग, दो शंख, दो नूर्च प्रतिमाएं, दो



सालिग्राम, दो गोमती चक्र तथा तीन देवी प्रतिमाएं सर्वथा बर्जित हैं, इस प्रकार की संख्या दरिज़ा लाती है।

५. गणपति पूजा या साधना प्रारम्भ करने के लिए चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, माघ एवं फाल्गुन महीने के शुक्रल पक्ष मान्य हैं।

६. सोमवार से गणपति साधना नहीं सम्पन्न करनी चाहिए। इसकी प्रकार किसी भी पक्ष की तृतीया, नवमी और छात्सरी भी वर्जित हैं।

७. मल्ल्य पुराज के अनुसार गणपति की मूर्ति साधक के बारह अंगूष्ठ परिमाण की ढोनी चाहिए, इससे बढ़ी त्याज्य है पर इससे छोटी ग्राद्ध है।

८. गणपति आदि देवताओं का मन्दिर घर के ईशान कोण में होना चाहिए तथा देवताओं का मुख परिचम की तरफ रहे।

(अ) ऐश्वर्य देवमन्तिरम्।

(आ) वेवाना हि मुखं कार्यं परिचमार्थं  
सवायुधे :।

(तार्क वृत्ताण)

९. गणपति का अधिष्ठक ताम्र पात्र पर रखे हुए जल से करना चाहिए।

१०. लालवर्ण वाली सुरभित पुष्पों के साथ दुवाकुर (दूब) गणेश जी को अपित किये जाते हैं।

११. तुलसीवल का प्रयोग गणपति के लिए सर्वथा निषिद्ध है 'न तुलस्या गणश्चिपम्'।

१२. गणपति के मन्दिर की मात्र एक परिक्रमा करनी चाहिए, इससे ज्यादा परिक्रमा वरिद्रता देने वाली मानी गई है।

१३. गणपति को बढ़ाया हुआ नैवेद्य या प्रसाद सबसे पहले गणपति सेवकों को देना चाहिए इसके बाद ही साधक उस प्रसाद को ग्रहण करें। गणपति के पांच सेवकों के नाम १-गणेश, २-गालव, ३-गण्यी, ४-मंगल और ५-सुधाकर हैं।

१४. गणपति उपनिषद में कहा गया है कि गणपति पूजन से पूर्व गुरु एवं आवश्यक है।

१५. गणेश गायत्री मन्त्र इस प्रकार है -  
एकदन्ताय विदमहे वक्रतुण्डाय धीमहि तत्रो दन्ती प्रचोदयात्।

(गणपति उपनिषद)

१६. गणेश नाम का अर्थ इस प्रकार है -  
ज्ञानार्थवाचको गश्च गश्च निपवाया वाचकः।  
तयोरोशं परं ब्रह्म गणेशं प्रणमाम्यहम् ॥  
अर्थात् 'ग' ज्ञानार्थ वाचक और 'ण' निवण वाचक है।  
अतः गणेश नाम भौतिक सूख और मोक्ष प्राप्ति के समान रूप में संहायक है।

साधनात्मक दृष्टि से विषयक कार्यों के गणपति के अलग-अलग स्वरूपों की साधन की जाती है, और इस सम्बन्ध में नन्द सार शन्थ में लिखा है कि-

पीतं स्परेत् स्तम्भन कार्यं एवं वशयाय मन्त्रे हास्तणं  
स्परेत् तम् कृष्ण स्परेन्मारण कर्मणीशमुच्याटने

धूमनिभं स्मरेत तम् ॥

बन्धुकपुष्यविनिभं च कृष्टो स्मरेद व्रवार्थं किल  
पुष्टिकार्ये ।

स्मरेद धनार्थी हरिवण्यितं मुत्तो च शुक्लं मनुवित्  
स्मरेत तम् एवं प्रकाशेण गण त्रिकालं ध्यायन्जपन  
सिद्धियुतो भवेत् सः ।

अथान् साधकों को चाहिए कि वे स्तम्भन कार्य में गणेश  
जी के दील कान्ति वाले स्वरूप का ध्यान करें, वशीकरण  
उद्दि कार्य में गणेश जी का अस्त्रण कान्तिमय स्वरूप का  
चिन्तन अनुकूल रहता है। मारण कार्य में कृष्ण कान्ति का  
ध्यान फलदायक माना गया है, इसी प्रकार उच्चाटन कार्य में  
धूम वर्ण वाले गणपति का स्मरण करना चाहिए, आकर्णण  
कार्य में बंधुक पूष्य के समान लाल वर्ण वाले गणपति का  
चिन्तन करना चाहिए, बल एवं पुष्टि कार्य के लिए शान्त  
गणपति का ध्यान अनुकूल माना गया है, धूम प्राप्ति के  
इच्छुक साधकों को हरित वर्ण वाले गणपति का ध्यान करना  
चाहिए तथा मोक्ष प्राप्ति के लिए शुक्ल वर्ण वाले गणपति का  
ध्यान पूर्ण फलदायक माना गया है।

शास्त्रोत्क कथन है कि जो साधक नित्य गणपति के १२  
नामों का स्मरण करता है उन्हें भक्ति पूर्वक नमनकार करता  
है, उसकी कामानाएं अवश्य पूर्ण होती है। गणपति के १२  
नाम निम्न प्रकार से हैं -

१-सुमुखाय नमः, २-एकदन्ताय नमः, ३-कपिलाय नमः,  
४-गणकर्णकाय नमः, ५-लम्बोवराय नमः, ६-विकटाय नमः,  
७-विघ्ननाशाय नमः, ८-विनायकाय नमः, ९-भूषकेतवे नमः,  
१०-गणाध्यक्षाय नमः, ११-भालवन्द्राय नमः, १२-  
गजाननाय नमः।

गणवान् गणपति की साधन श्रेष्ठतम साधनाओं में मानी  
जाती है। महर्षि विश्वामित्र, भगवत्पाद शंकराचार्य तथा  
गुरु गोरखनाथ ने इस साधना की जीवन के लिए पूर्ण  
सैभाग्यदायक प्रयोग माना है। मात्र इस साधना से जीवन में  
सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, जिसे हम अपना प्राप्तव्य  
मानते हैं। जो भी मन में अभीसिस हो वह इस प्रयोग के द्वारा  
आसानी से पाया जा सकता है। वास्तव में यह प्रयोग अति  
महत्वपूर्ण तथा दिव्य है। जब आपले लहसी रुठने लगी हो,  
आप का व्याप्रार या करोबार बन्द होने लगे, ऐसे जैसे व्रस्त  
होकर जीवन से आप निराश होने लगे हों, या कर्ज के बोझ से  
दबते चले जा रहे हों या जीवन के किसी भी लेत्र में असफल

होने लगे हों तो आपके लिए यह प्रयोग साध ब्राह्म है। भगवान्  
गणेश ऐसे ही विघ्नहरण करने वाले संगवदायक देवता के  
रूप में प्रसिद्ध है, उनके उपासक कभी भी निश्चय या व्रस्तकले  
नहीं होते हैं।

इस भावना के लिए प्राण प्रतिष्ठित 'महागणपति वंत्र'  
कुंकुम, जलपात्र, मीलि, यज्ञोपवीत, पान, सुपारी, लौंग,  
डनायची, अबीर, गुलाल, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य,  
श्री फल, मूँग की माला एवं गणेश गुटिका आवश्यक है।

### पूजन विधि

#### ध्यान

ॐ गणनां त्वा गणपति (गृ) हवामहे प्रियाणां त्वा  
प्रियपति (गृ) हवामहे

निधीनां त्वा निधिपति (गृ) हवामहे वसो मम  
आहमजानि गर्भधमा त्वम् जासि गर्भधम् ।

ॐ गं गणपते नमः ध्यान । समर्पयामि ।

### आवाहन

नाशस्य नागहार त्वं गणनाथ चतुर्भुज ।

भूषितः स्वामुवैर्दिव्यः पाशकुश परश्ववैः ।

आवाहयामि पूजार्थं च मम क्रतोः । इहगत्य

गृहाण त्वं पूजां यार्ज च रक्ष मे ॥

ॐ गणपते नमः आवाहनं समर्पयामि ।

(आवाहन के लिये पुष्प अर्पण करें)

### आसन

अनेक रत्न खचितं मुक्तामणि विभूषितम् ।

विव्यसिहासनं चारु गणेश प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ गणपतये नमः आसनं समर्पयामि ।

(आसन के लिए पुष्प समर्पित करें)

### पाद्यम्

गोरी पुत्र नमस्तेऽस्तु वूर्यापदमादि संयुतम् ।

भक्त्या पादं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

अर्ध्यं गृहाण देवेश गन्धपूष्पाक्षतैः सह ।

करुणाकर में देव गृहाण अर्ध्यं नमोऽस्तु ॥

ॐ गं गणपतये नमः अर्ध्यं समर्पयामि ।

### आचनम्

सर्वतीर्थं समानीतं सुगन्धिं निर्मलं जलं ।

आचम्यतां मया दत्तां गृहाण शिवनन्यन ॥

ॐ गणपतये नमः आचमनीयम् समर्पयामि ।

## स्नानम्

गंगासरस्वती रेवा पश्चोष्णि नर्मदाजले।  
स्नापितोऽसिमया देव। तथा शन्ति कुरुत्व म।  
ॐ गणपतये स्नानं समर्पयामि।

## पंचामृत स्नानम्

पश्चो दधि धूत चैव पशु च शक्तरा युतम।  
पंचामृतं मया वत्ते स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम।  
ॐ गणपतये पंचामृतं स्नानं समर्पयामि।

## शुद्धोदक स्नानम्

मन्दाकिन्यास्तु यदवारि सर्वपापहरं शुभम।  
तविदं कलिपतं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम।  
ॐ गणपतये शुद्धोदकं स्नानं समर्पयामि।

## वस्त्रम्

सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे।  
मयोपवादिने तु धृतं गृह्यतां पदमेश्वर।  
ॐ गणपतये वस्त्रोपवस्त्रं स्नानं समर्पयामि।

## द्यक्षीपवीतम्

राजतं ब्रह्मस्त्रं च कांचनं चोत्तरीषकम।  
गृह्याण देव सर्वज्ञ गीर्वाणसुरं पूजितं।  
ॐ गणपतये यजोपवीतं समर्पयामि।

## अन्दनम्

श्रीखण्डं चन्दनं विद्यं गन्धारयं सुमनोहरं।  
विलेपनं सुरश्रेष्ठं चन्दनं प्रतिगृह्यताम।  
ॐ गणपतये चन्दनं समर्पयामि।

## अक्षत

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठं कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।  
मया निवेदिता भक्त्या गृह्याण परमेश्वर।  
ॐ गणपतये अक्षतानं समर्पयामि।

## पुष्पाणि

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्या दीनि वे प्रभो।  
मयोपनीतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम।  
ॐ गं गणपतये पुष्पाणि समर्पयामि।

## बिल्वपत्राणि

त्रिशाखे: बिल्वपत्रे: त्वां पूजायामि गजानन।  
अच्छित्रे: कोपलैर्नित्यं गृह्याण गणनारक।  
ॐ गं गणपतये बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

## दूर्वा

दूर्वाकुरान् समुहरितान् अमृतान् मंगलप्रदान।  
आर्नीतास्वतं पूजार्थं गृह्याण परमेश्वर॥  
ॐ गं गणपतये दूर्वाकुरान् समर्पयामि।

## सीधीभाजय द्रव्याणि

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितं।  
नाना परिमलं द्रव्यं गृह्याण मज्जनायक॥  
ॐ गं गणपतये सीधीभाजय द्रव्याणि समर्पयामि।

## धूप

वनस्पति रसीदभूतः गन्धारयः सुमनोहरः।  
आधेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम।  
ॐ गं गणपतये धूपम् आधपश्यामि।  
दीपः साज्यं च वर्तिसयुक्तं वहिना योजितं मया।  
दीपं गृह्याण देवेश वैलोक्य तिमिरापहा॥  
ॐ गं गणपतये दीपं दश्यामि।

## नैवेद्य

गणेश गायत्री बोले।  
ॐ एकदन्ताय विदमहे वक्रतुष्टाय धीमहि  
तत्त्वो दन्ति प्रशोदयात्।  
ॐ गं गणपतये नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

## फल

हडं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।  
तेन मे सफलावास्मिः भवेजन्मनि जन्मनि।  
ॐ गणपतये नमः फलानि समर्पयामि।  
फिर शाल मुद्रा दिखाकर आचमन करावे।  
ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा,  
ॐ ब्रह्मानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा,  
ॐ समानाय स्वाहा, ॐ गं गणपतये नमः  
आचमनीयं समर्पयामि।

## ताम्बूल

पूर्णीफलं महदिव्यं नागवल्ली दलैर्युक्तम्।  
एताचूर्णादि संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम।  
ॐ गणपतये नमः मुखं शुद्धयर्थं ताम्बूलं समर्पयामि।

## दक्षिणा

हिरण्यगर्भस्थं हेमवीजं विभावसो।  
अनन्तपुण्यफलदम् अतः शांतिप्रपञ्च मे।

## तीराजन (आरती)

ॐ वं (गु) लघि: प्रजननं ये अस्तु कश्चीर (गु) सर्वमण (गु) स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोक सन्न्यभिसनि: अन्नि: प्रजा यहुल्म में करोत्यनं पयोरेतो अस्मासु धनः न तत्र सूर्यो भाति न तारकं नैवा विद्यते, कुतो यमन्नि: समेन भान्तम् अनुभाति सर्वं तस्या भासा सर्वं गिरं विभाति ।

नीराजनं नीरजकं कपूरेण कृतं मया ।

गृहाण कर्त्त्वाराशे गणेश्वरं नमोऽस्तुते ॥

ॐ गं गणपतये नमः नीराजनं समर्पयामि ।

## जल आरती

ॐ श्वीः शान्तिरन्तरिक्ष (गु) शान्ति:, पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोधयः शान्ति । वनस्पतयः शान्ति विश्वेदेवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति: सर्वं (गु) शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सामा शान्तिरेति ।

## प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापनि जन्मान्तर कृतानि च ।  
तानि तानि प्रणस्यचन्तु प्रदक्षिणाय पदे पदे ॥

ॐ गणपतये नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

## पूष्पान्तरिणि -

नाना सुगन्धिं पुष्पाणि यथाकालोद् भवानि च  
पुष्पान्तरिणि भवा दत्तं गृहाण यरमेश्वर ।

ॐ गं गणपतये नमः पुष्पाणि समर्पयामि ।

इसके बाद साथक मूर्ति की नाला से निम्न मंत्र का ५३ माला मंत्र नप करें। प्रयोग समाप्ति के बाद ये तो नारियल की अपने पूजा स्थान में रख दें तथा गणेश गुटिका को अपने पेसे बाले स्थान में रख दें किसी विशेष कार्य में जाते समय अपने साथ रखने से आपका कार्य पूर्ण होगा।

## मंत्र

“ ॐ गं गणपतये नमः ॥ ”

गणपति साधना के इस क्रम को नित्य पूजन के क्रम में सम्मिलित कर देना चाहिए और यह संभव नहीं हो तो महीने में एक बार उपरोक्त विधिविधान सहित गणपति पूजन अवश्य संपन्न करना चाहिए। इससे घर में सुख शान्ति का आनंदरण तथा लक्ष्यों का आगमन होता रहता है।

साधना भास्त्री न्योछावर- ३००/-

इसी उच्छ्वास में आगे पाठकों के लिए कुछ विशेष गणपति साधनाएं दी जा रही हैं अपनी कामना के अनुसार साधक को विवेचन कर साधना करनी चाहिए-

## १- उच्छ्वास गणपति प्रथीज

बाद विवाद, भुक्तमा, लडाई, शत्रु बाधा शनि, भद्र नाश जूँ में जीत इत्यादि कार्यों के लिए उच्छ्वास गणपति की साधना सम्बन्ध की जाती है।

## विनियोग

ॐ अस्योच्छ्वास गणपति मन्त्रस्य कंकाल व्रष्टि:

विराट छन्दः उच्छ्वास गणपति देवता

सर्वाभिष्टसिद्धये जपे विनियोगः ।

इस प्रकार संकल्प लेकर चार भुजा बाले, रक्त वर्ण, तीन नेत्र, कमल दल पर विरागमान, दाढ़िने हाथ में पाश एवं दल धारण किये हुए, उनसे मुद्रा स्थिर उच्छ्वास गणपति का ध्यान करना चाहिए। इसके पश्चात् आठ मातृकाएँ आदी, महेश्वरी, कौमारी, देवियाँ, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा एवं लक्ष्मी। इनका आठ दिशाओं में रथापना कर पूजन करना चाहिए। पूजन हेतु उच्छ्वास गणपति चित्र, उच्छ्वास गणपति यन्त्र अष्टमानुका प्रतीक की स्थापना कर विधिवत् पूजा होनी चाहिए। प्रसाद स्वस्थ में लड़ू का अपूर्ण करना चाहिए।

तत्प्रथात् निम्न उच्छ्वास गणपति मन्त्र का जप भ्यारह दिन तक करना चाहिए।

## मन्त्र

॥ श्री गं हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा ॥

मन्त्र अनुष्ठान के पश्चात् साधक की हवन अवश्य करना चाहिए, हवन में धी, शहद, शक्कर तथा खील (लाजा) से वशीकरण किया सम्पन्न होती है, पूष्प एवं लक्ष्मी के तेल का हवन करने से शत्रुओं का विद्रोषण होता है।

साधना भास्त्री न्योछावर- २४०/-

## २- शक्ति विनायक गणपति अनुष्ठान

लक्ष्मी, धी, सुन्दर पत्नी प्राप्ति, शक्ति प्राप्ति, एवं कार्य सिद्धि हेतु, शक्ति विनायक गणपति की साधना करनी चाहिए।

## विनियोग

अस्य शक्तिगणाधिप मन्त्रस्य भार्गव व्रष्टि: विराट

छन्दः शक्तिगणाधिपो देवता हीं शक्ति: श्री बीजं

ममअभिष्ट सिद्धये विनियोगः ।

अंगनद्यास

ॐ ध्वा हृष्याय नमः ।  
ॐ श्री शिरसे स्वाहा ।  
ॐ गृ शिखाय व्रषट् ।  
ॐ श्री कवचाय हु ।  
ॐ श्री नेत्र प्रयाय वीरगट् ।  
ॐ य अस्त्राय फट् ।

३४८

विष्णांकुश वक्षसूत्रं च पाणं दधानं करेमोदकं पृष्ठरेण।  
स्वपत्न्यायुतं हेमभूषाभराद्यगणेशं समुद्दिनेशभीडे॥

दहिने हाथ में अंकुश एवं आक्षसूत्र तथा बाए हाथों में वन्दन  
एवं पाण धारण किये हुए, सूल में मोदक लिये हुए, अपनी  
पत्नी के साथ स्वर्ण के आभूषणों से अलकृत तथा उठीपमान  
सूर्य जैसी आमा वाले भगवान गणेश जी की मैं वन्दन

साक्षी

शक्ति विनायक शंख. शक्ति विनायक बन्द्र !

३५०

बुधवार के विन प्रातः स्तन कर शुद्ध बद्ध धारण कर हल्दी जैसी आभा बाले, तीन नेत्र बाले, पील बरस धारण आपने सामने शक्ति विनायक यन्त्र तथा गणपति स्वरूप शक्तिमय करने वाले हरिद्रा गणपति की बन्दना करता है। शख की पीला बस्त्र बिछा कर स्थापना करें, सर्वप्रथम सूर्य मन्त्र ॥ ३५ ॥

पूजन कर गंगा एवं शख का पूजन सम्पन्न करें, तत्पश्चात् निम्न मन्त्र का जप सम्पन्न करें, इस मन्त्र का सबा लाख भय करने से ही पर्ण सफलता प्राप्त होती है।

२५८

九萬英里的旅行

सब लाख मन्त्र जप साधक अपने समय के अनुसार ज्याहे अथवा इनकीम हिन में सम्पन्न कर सकता है, इसके पश्चात् डवन करना चाहिए, धी सोहित जन की आद्विती तत्पश्चात् केला तथा नारियल की आहुति सम्पन्न करलने से साधक अन्न, शर्करा, धान्य एवं बर्षीकरण शक्ति से सिद्ध होता है।

साधना सामग्री न्यौक्तावर- २७०/- करता है, उसके जीवन में कष्ट, संकट आ हो नहीं सकते।

### 3-हरिदा गणपति अनुष्ठान

जीवन में जिसके पास आङ्गूष्ठण शक्ति है, अपने शत्रुओं को लहज़ सरल देव है।

गणपति उपने भक्तों पर निरन्तर कृपा दृष्टि प्रदान करने वाले

तो यह है।

ପ୍ରାଚୀ ମହିଳା କୌଣସି

तत्र-यंत्र विज्ञान '42' ४०

स्वाधीन करने की थामता है, वही व्यक्ति पूर्ण सफल रहता है, हरिद्वा गणपति, गणपति साधना का सर्व श्रेष्ठ स्वरूप है।

ਵਿਨਿਧੀ ਅ

ॐ अस्य श्री हरिद्रागणनाथक मन्त्रस्य मदन कापि:  
अनुष्टुप् छन्दः हरिद्रागणनाथको देवता  
ममार्भाष्टसिद्धये जपे विनियोगः।

ਅੰਗਨਿਆਸ

कु हु गं गली हवाय नमः ।  
 हरिद्रागणपतये शिरसे स्वाहा ।  
 वरवरव शिखाये वषट ।  
 सर्वजनहृदयं कवचाय हु ।  
 स्तम्भय स्तम्भय नेत्रत्रयाय वौषट ।  
 क्वाहायस्त्राय फट ।

# शिष्यार्थक छात्री

- ★ मैं परब्रह्म गुरु का स्मरण करता हूं, परब्रह्म गुरु का भजन करता हूं, मैं परब्रह्म गुरु के संबंध में कहता हूं और परब्रह्म श्री गुरु को नमस्कार करता हूं जो ऐसा चितन सखता है वही श्रेष्ठ शिष्य है।
- ★ न मुझे मंत्र का ज्ञान है, न तंत्र का, न ध्यान का और न ही कि यज्ञ-अनुष्ठान का, है गुणदेव। मुझे तो खेल आपका छी नाम स्मरण है, यही ज्ञान है, यही देतना है।
- ★ न तो मेरी कोई गावा है, न पिता, न बंधु न माता, न पुत्र न पुत्री और न ही कोई व्यापारिगत इच्छा है गुरु देव गुजे तो बरा आपका ही नाम स्मरण है बरा एक आप ही मेरे अपलो हैं।
- ★ गुरु जो बढ़कर न शास्त्र है, न तपस्या, न मंत्र और न ही व्यजाहि लोक। गुरु जो बढ़कर न देखी है, न देव ही गुरु जो बढ़कर है और न ही मोक्ष या मंत्र जप। एक मात्र गुरुदेव ही उचित है।
- ★ शीर्ष फो शीध गही होता अपनी पूर्णता का, और इसी तरह शिष्य को भी अपनी पूर्णता फो भाव गही होता, गुरु फो फार्थ गाँव अपनी पूर्णता का गाव गही होता, गुरु का कार्य गाँव उसे पूर्णता का शीध फूवा ही होता है।
- ★ गुरु और गुरु कार्य को त्यागने वाले को कहीं शरण नहीं मिलती, इसलिए अपनी सामर्थ्य अनुसार गुरु कार्यों में भी पूर्ण मनोभाव से सहयोगी बना रहे।
- ★ गुरु के पास बैठे रहने मात्र से साधक के हृदय में ज्ञान का प्रकाश होने लगता है, जिसको ब्रह्म प्रकाश कहा गया है, जिससे मनके सामर्थ्य प्रकार के भ्रम व चिंताएं दूरतः ही भाग जाती हैं। अतः शिष्य को चाहिए कि वह गुरु की निकटता के लिए निरंतर प्रयत्न करें। जिस तरह एक दीपक से दूसरा दीपक पास लाने मात्र से ही जल उठता है, उसी प्रकार गुरु के सानिन्देश मात्र से ही शिष्य का अंतरब्रह्म प्रकाशित हो जाता है, और उसका कल्याण हो जाता है।
- ★ शिष्य को जित्य एक नियमित अभ्यास पर नियमित संख्या में गुरु मंत्र का आधना रूप में जप अवश्य ही करना चाहिए।

# गुरु द्वायी

■ अगर द्वायी गुरु के प्रति शहदा नहीं है तो ब्यर्थ है अगर तुमसे रोता करने की क्षमता नहीं है तब भी ब्यर्थ है और बटि शहदा कर भी सके हो, रोता कर भी सके हो तो एहराल नहीं कर सके हो गुरु कर।

■ और यदि आप शहदा देते हैं, रोता करते हैं तो गुरु उस ऋण के अपने उपर नहीं रख सकता, कोई भी गुरु शिष्य का ऋणी नहीं होता चाहता। परंतु गुरु की यह विवशता होती है कि शिष्य को तब तक वह पूर्णता नहीं दे सकता, जब तक कि उसका अहम पूरी तरह से गल नहीं जाता। तब तक सेवा के उस ऋण को गुरु को धारण करना पड़ता है, न चाहते हुए भी शिष्य के ही कल्याण के लिए गुरु को ऋण देना पड़ता है।

■ इशानिए कहता हूं कि तुम जली बन जाओ, दयों प्रेम की कल्पना, प्रेम की आवना नहीं जानती है। नदी इस बात को नहीं मानती कि यह पहाड़ है, पठार है, चट्टान है, वह बस आगे की ओर गतिशील होती है। उसका लक्ष्य, उसका चिंतन, उसकी धारणा एक ही है कि मुझे अपने अस्तित्व को मिटा कर समुद्र में जाकर लीन हो जाना है।



■ इसी प्रकार शिष्य जितना गुरु में लीन होता है, उनसे एकाकार होता है, उतना ही गुरु उसे आगे धकेलता रहता है। यह शिष्य पर निर्भर करता है कि वह सर्वं को पूर्ण रूप से समर्पित करता है या अधूरा समर्पित करता है।

■ अब से विशेष बनने की क्रिया केवल शुरू जानता है, मनुष्य से देवता बनाने की क्रिया केवल शुरू जानता है। गुणाधार से राहसार तक पहुंचाने की क्रिया केवल शुरू जानता है और उसी के लिए जीवन का आधार केवल और केवल शुरू ही होता है।

■ तुम कहते हो कि हम शिष्य हैं जबकि साथक के अन्ते की स्टेज शिष्यता है। शिष्यता प्राप्त करने के लिए तुम ही ठोकर लगाना अनिवार्य है क्योंकि जब ठोकर लगेगी तभी तुम शोह लिंग से जरूरी हो।

■ तुम्हें कभी जिदगी में लोकर लगे, मैं तो ऐसा चाहता हूँ कि जल्दी ही लगे। ऐसा तुम्हें ऐहसास हो सके कि तुम्हारी जिदगी का कुछ उद्देश्य, कुछ लक्ष्य है और तुम उस उद्देश्य के पद पर निश्चीय हो सको।

■ स्थूल जगत में जो कुछ हम देखना चाहते हैं या और जो कुछ हम देखते हैं और जिनको देखने से हम प्रसन्नता होती है, वह प्रसन्नता क्षणिक है।

# तांत्रिक षट्कम

## तन्त्र की ये छ महाप्रधान

तन्त्र शास्त्र का कोई भी विद्वान् ठो अथवा उत्तम हो, तो तांत्रिक कर्मों को विशेष रक्षा दिया जाया है और वह भी दूसरों को दिया है तिन व्यावाहर लोग इनमें से शास्त्रज्ञों को तीन शास्त्र जागते हैं जो कि अचित नहीं हैं। असक्तरे ज्ञान से जी पुस्तकों में इन विद्याओं का विस्त्र प्रकार से विवरण दिया जाया है उसमें इस ज्ञान के प्रति ज्ञान और जी अधिक फल जाया है। तन्त्र का वात्यर्थ है कि 'तन्त्रते ज्ञान नहीं इति शास्त्रम्' असार्ति जिस शास्त्र के पठन पाठन जाया अनुगमन में ज्ञान की वृद्धि होती है उस शास्त्र का नाम तन्त्र है।

जिस प्रकार ब्रह्म से बैद्यों की उत्पत्ति हुई, उसी प्रकार तन्त्र के रचयिता शश्वान शिव हैं और आदिगुरु शिव ने गुरु शिष्य परमपरा द्वारा जिस 'श्रुति' कहा जाता है उसी से तन्त्र का विस्तार हुआ, और तन्त्र विलान में ही मन्त्र समाप्ति है, तन्त्र शारत्र के केवल अध्ययन से इसके सम्पूर्ण रहन्यों का जन्म प्राप्त नहीं हो सकता, बल्कि आचरण और कर्म से ही इसका सम्पूर्ण बोध हो पाता है।

तन्त्र शास्त्र में केवल शक्ति को ही प्रमुख स्थान दिया जाया है। जिस प्रकार शिव की शक्ति कुण्डली जब शिव से पृथक लो जाती है तो शिव भी शब बन जाते हैं, अतः शिव दूजा का मूल स्वप्न शिव शक्ति को ही पूजा है, और मनुष्यति में वेदों के

सम्बन्ध में अधिकार केवल कुछ विशेष व्यक्तियों को ही बताया जाया है, जबकि तन्त्र के सम्बन्ध में किसी प्रकार का जाति-भेद नहीं है।

तन्त्र विद्या में प्रवीणता के लिए संसार त्याग अर्थात् संन्यास धारण करने की आवश्यकता नहीं है, संसार में रह कर ही परमपद प्राप्त हो सकता है, जिनको यदि पव्य प्रदर्शक अधिति गुरु नहीं मिलते हैं, उनके लिए इस भार्ग पर चरना बड़ा ही कठिन होता है, लेकिन गुरु प्राप्त हो जाते हैं उनके लिए इस कलियुग में यह तन्त्र ही सबसे सहज भार्ग है।

तन्त्र की जिन छ विद्याओं का उल्लेख कर रहे हैं वे निम्नलिखित हैं-



(अभिचार) कृत्या और पुष्ट शब्दों का निराकरण करना। 'शान्ति कर्म' कहा जाता है।

#### १-वश्य कर्म

(वशीकरण)

वश्यं जनानां सर्वेषां वात्सल्यं छद्-  
गतं स्मृतम्। (सांख्यायन तन्त्र)

वश्यं जनानां सर्वेषां  
विधेयत्वमुदीरितम्। (उद्दीश तन्त्र)

अथात् जिसे सभी जीवों (स्त्री-पुरुषों)  
की वश में किया जाता है और सबके  
हतय में आपने प्रति वात्सल्य (प्रेम) पैदा  
किया जाता है उसे वशीकरण कहते हैं।  
स्त्री-पुरुष वशीकरण, राज-वशीकरण,  
आज्ञापण, मौहन आदि वश्य-कर्म के भेद  
हैं।

#### २-स्तम्भन

स्तम्भनं रोधनं पुत्र! सर्व-कर्म  
सुनिश्चितम्।

(सांख्यायन तन्त्र)  
प्रवृत्ति-रोधः सर्वेषां स्तम्भनं  
समुदाहतम्।

(उद्दीश तन्त्र)

अथात् सभी कार्यों और सभी प्राणियों  
की गति को रोक देना ही 'स्तम्भन' है। मनुष्य स्तम्भन,  
बुद्धि स्तम्भन, भूम्य स्तम्भन, आसन स्तम्भन, अग्नि स्तम्भन  
आदि 'स्तम्भन' भवते हैं।

#### ३-विद्वेषण

मित्रस्य कलहीत्पत्तिविद्वेषणमुवाहतम्।

(सांख्यायन तन्त्र)

स्तिनग्धानां द्वेष-जननं मिथो विद्वेषणतम्।

(उद्दीश तन्त्र)

अथात् मिथो तथा धनेष्ट सम्बन्धियों से बैर करा देना  
'विद्वेषण' कहलाता है।

#### ४-उच्चाठन

बलं बुद्धि-भ्रमेणोक्तमुच्चाठनमिदं भुवि।

(सांख्यायन तन्त्र)

शान्ति-वश्य-स्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटने तथा।  
मारणानि प्रशंसन्ति षट् कर्माणि मनीषिणः॥  
अथात् १-शन्ति, २-वश्य(वशीकरण), ३-स्तम्भन, ४-  
विद्वेषण, ५-उच्चाठन और ६-मारण। ये षट्कर्म ऋषियों द्वारा  
कहे गये हैं।

(उद्दीश तन्त्र, सांख्यायन तन्त्र)

अब इन कर्मों का लक्षण है-

#### १-शान्ति कर्म

नाना रोगः कृतिप्रेश्व नाना चेष्टा क्रमेण च। विष-  
भूत प्रयोगेषु निराशः शान्तिशीरिता॥  
रोग-कृत्या यहादीनां निराशः शान्तिरीतिता।  
अथात् नाना प्रकार के रोग, नाना प्रकार की चेष्टाओं  
(क्रियाओं, विधियों) से निपत्ति विष, भूत आदि प्रयोगों

उच्चाटन स्वदेशादेभूशनं परिकीर्तिम् ।

(उडीश तन्त्र)

अर्थात् बत्त और बुद्धि की भूमित कर देने तथा किसी को उसके स्थान से दूर कर देने को 'उच्चाटन' कहा जाता है। ध्रामण और उन्मानीकरण आदि 'उच्चाटन' के भेद हैं।

## ६-भारण

प्राणितां प्राण-हरणं मारणं समुदाहतम् ।

(सांख्यकर्तन्त्र, उडीश तन्त्र)

अर्थात् शत्रु को भयनक कष्ट देना, कुट्टम विच्छेदन, रोगों की उत्पत्ति, पीड़ा हत्यादि 'मारण' कर्म के भेद हैं।

इन छः कर्मों में गान्ति कर्म के बहुत अपने गुरु और इष्ट की पूजा, जप, साधना से ही सिद्ध हो जाता है, लेकिन शेष पाच के लिए विशेष पद्धति आवश्यक है।

उडीश तन्त्र के अनुसार वशीकरण से सम्बन्ध शेष है, सम्बन्ध से मोहन और मोहन से विद्वेषण तथा विद्वेषण से उच्चाटन और अनन्त में उच्चाटन से शेष मारण तन्त्र है। मारण तन्त्र से अधिक प्रभावशाली कोई तन्त्र नहीं है।

ये सभी प्रयोग प्रकृति के सामान्य नियमों के विपरीत हैं और इन विपरीत नियमों को अपने अनुकूल कर देने भिन्न करने हेतु विशेष साधना आवश्यक है। लेकिन वनावेय तन्त्र के अनुसार जीवन में कभी ऐसे अवसर आ हो जाते हैं जब व्यक्ति हाँ लरह से गरेशान हो जाता है तो उसे ये पांच कर्म करने ही पड़ते हैं।

वे परिस्थितियों इस प्रकार हैं - यदि किसी ने उसका घर, जर्मीन, पुज, धन, स्त्री का हरण कर लिया हो, प्रणां पर संकट आ गया हो तो ऐसे दुष्ट को दण्ड देने के लिए ये तात्त्विक प्रयोग अवश्य सम्पन्न करने चाहिए। लेकिन किसी भी स्थिति में व्यक्ति आनंदाने के उद्देश्य से हन प्रयोगों को नहीं ही होता है।

## हानि से कैसे बचें

तात्त्विक कर्म करने से पहले साधक को कुछ विशेष साधनानियों रखनी आवश्यक है, जब प्रथम तो उसको यह निष्ठा जेना है कि परिस्थिति भसी आ ही गई है कि उसे ये विशेष तात्त्विक प्रयोग करने ही पड़ेगे, तभी वह ये प्रयोग करें।

तंत्र साधना को उज ताल हेय दूषि से दैखा जाता है और तांत्रिक छिरा गवे कालों के लिए ही प्रयोग में लाई जाती है। ऐसा सामान्यायन वा विश्वास बनाता जाता है। जबकि वास्तव में तंत्र एक महाविज्ञान है, तंत्र का लात्पर्य अपनी विद्वान का विद्वान वर जीवन में आने वाली वाधाओं से मुक्ति प्राप्त करना है। तंत्र का लात्पर्य शिव और शक्ति से दाक्षाटकार है। तंत्र का लात्पर्य कुण्डलिली शरिक वा जागरण है जो भीतर सुषुप्त अवस्था में है। सद्गुरु वेद लक्षण करने के लिए जहम से कोई महान वाही होता वह अपने जीवन में अपने कर्ताओं से और द्वान से ही महान होता है।

क्योंकि जहाँ साधक का इष्ट बत्ती होता है और वह गुरु की शरण में होता है तो उसकी रक्षा अवश्य ही होती है और उसे किसी भी प्रकार की हानि नहीं उठानी पड़ती है। तापश्चात् मन्त्र सिद्ध करने के लिए उस विशेष साधन का प्रश्नरण प्रयोग आवश्यक है। पुरश्चरण विधान के सम्बन्ध में पविका के इसी अंक में विवरण दिया गया है। उस विधान से पुरश्चरण का मन्त्र को सिद्ध करें और जब मन्त्र सिद्ध हो जाये तो वह संकल्प लेकर विशेष अनुष्ठान सम्पन्न करें।

उडीश तन्त्र में मण्डान शिव ने कहा कि यिस प्रकार चन्द्रमा के बिना रथि, सूर्य के बिना दिल तथा राजा के बिना राज्य रुना है उसी प्रकार बिना गुरु कृपा के मन्त्र सिद्ध नहीं हो सकता। गुरु आज्ञा से ही इन प्रयोगों में प्रवृत्त हों। गुरु का ही इस तन्त्र पर पूर्ण अधिकार होता है।

वास्तव में साधक को इष्ट पूजा तथा गुरु पूजा तो नियमित रूप से अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। क्योंकि यह तो साधक के लिए एक प्रकार से "इन्डियोरेस" (बीमा) है जो कि विपरित परिस्थितियों में उसके लिए रक्षा कबच बनाकर खड़े हो जाते हैं।

पविका के अंग वे अंकों में उपरोक्त तात्त्विक कर्मों के सम्बन्ध में कुछ विशेष सामग्री ही जायेगी, जिनसे साधक अवश्य ही करे और इष्ट साधन के साथ गुरु साधना भी आवश्यक है, लाप उठाएं।

# लक्ष्य प्राप्ति, शत्रुओं पर सफलता, विजय

एवं

## वरिद्रता दूर करने का दुर्लभ प्रयोग

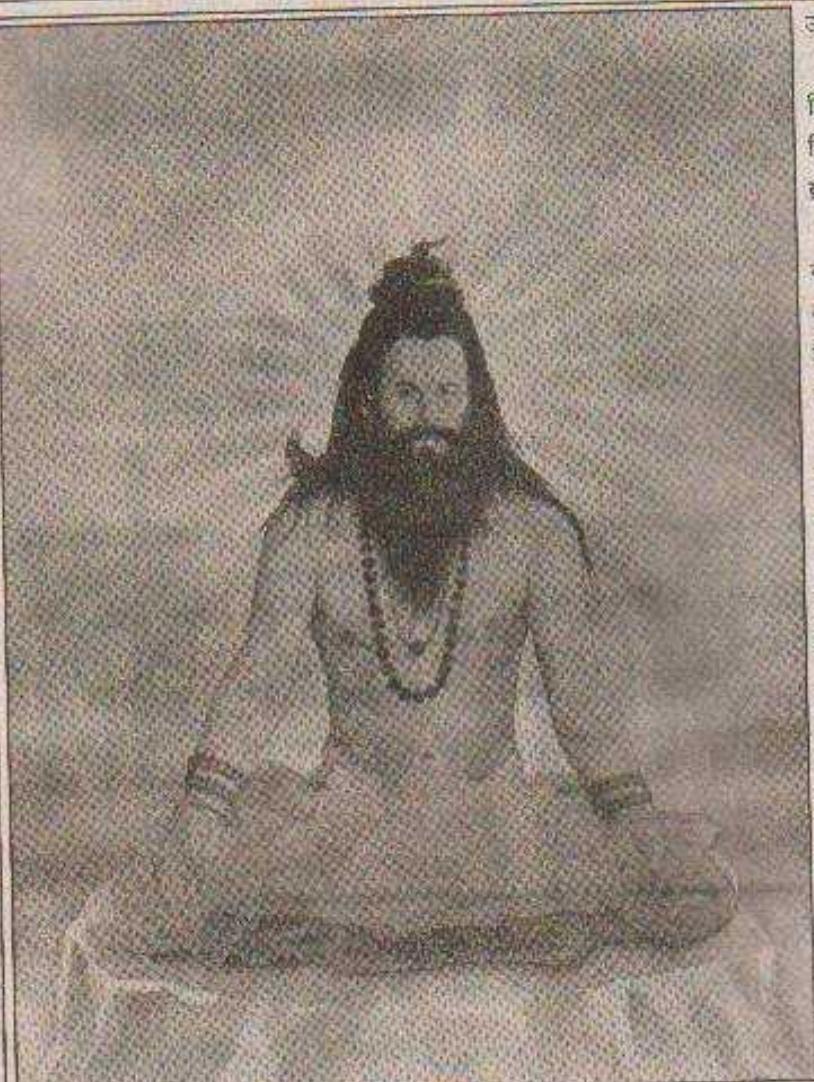
# आसुरी महाकल्प तन्त्र

तन्त्र के आदि रचियता मनवान द्वित्र हैं, और जिनमें मनवान द्वित्र की तपश्चया, मृत्यु पूर्ण मनोयोग को शम्पङ्ग की, उनमें मनवान द्वित्र के जो मांगा गए प्राप्त हुआ, परमदेव द्वित्र ने तांत्रिक शाधनाओं के रूपमयों को अपने विशेष भक्तों के लिए बार-बार स्पष्ट किया, उनके मत्त, अमृत, राक्षस, वेव, मानव लभी थे।

आसुरी महाकल्प तन्त्र में सम्मोहन, वशीकरण, शशुनाश, मानसिक पीड़ा शान्ति, रोग शान्ति, अलक्ष्मी अर्थात् वरिद्रता दूर करने के सर्वश्रेष्ठ तन्त्र प्रयोग हैं।

शक्ति पर किसी का एकाधिकार नहीं है, जो शक्ति प्राप्त करने की इच्छा रखता है, और जो उसके लिए सही तरीके से ग्राहण करता है, उसे शक्ति प्राप्त हो कर रहनी है, और यदि अपने जाधना तत्त्व को निरन्तर बनायें रखें, तथा शक्ति का स्फूर्ति द्वित्रा में उपयोग करें, तो यह शक्ति तत्त्व निश्चित रूप से निरन्तर बना रहता है, शक्ति केवल सही रूप से विनाश और साधना से ही प्राप्त हो सकती है।

इसरे प्राचीन ग्रन्थों में बड़े-बड़े असुरों, राक्षसों का वर्णन आता है, जिन्होंने पूरी पृथ्वी पर अपना आसुरी स्वापित किया, यहाँ तक कि देवताओं को भी परास्त किया, उसका



कारण उनकी शिव तपस्या, शिव-पति और लक्ष्मि में दृढ़ता ही, उनकी साधनाओं का मूल मार्ग तन्त्र ही था।

भगवान शिव द्वारा रचित 'आसुरी भहाकल्प तन्त्र' विशेष प्रकार का तन्त्र है, जिसमें मन्त्र तन्त्र तथा यन्त्र तीनों का प्रयोग हुआ है, और इस कारण यह शीघ्र फलदायक है, 'आसुरी भहाकल्प तन्त्र' आज से हमारे वर्ष पहले नितना खुब था, उतनहो आज भी खुब एवं विशिष्ट सिद्धिदायक है, इसमें न तो कोई विशेष प्रकार की अप्राप्य साधना सामग्री है, और न ही जटिलता, इस साधना में साधक को इच्छा शक्ति की तीव्रता, समर्पण विशेष रूप से आवश्यक है, वैसे भी उन साधकों को तन्त्र-साधना करनी ही नहीं याहिए जिन्हें थोड़ी बहुत झंका, अश्रद्धा हो अथवा मानसिक रूप से

उद्देश्य ही गलत हो।

'तारार्णव तन्त्र' तथा 'आशन तन्त्र विलास' ग्रन्थ में लिखा है कि -  
किं कुर्यान्तुष्टिः कृदः किं कुर्यान्प्रवाऽषिलः।  
कृदः कालोऽपि किं कुर्यावासुरी चेन्प्रसिता॥

अर्थात् उस साधक का कृद्ध नृपति कृष्ण करेगा, राघी कृद्ध शत्रु भी करा करेगे, कृद्ध काल भी कृष्ण करेगा, जिसने आसुरी महाकल्प को सिद्धि की है।

यह साधना शत्रुनाश का सबसे प्रभावशाली प्रयोग है, साथ ही इसके माध्यम से वशीकरण, सम्प्रोहन भी सम्पन्न किया जा सकता है, इसके अतिरिक्त रोग-शान्ति, रोग-नाश, मानसिक पीड़ा, शान्ति तथा इलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता नाश का भी विशेष साधना कर्त्तव्य है।

इस साधना के कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी परिपालना पूर्ण रूप से आवश्यक है -

- यह साधना केवल कृष्ण पक्ष की अच्छी से कृष्ण पक्ष की अमावस्या के बीच ही सम्पन्न की जा सकती है।

साधक जो अपना साधना उद्देश्य

गुरु रखना चाहिए, अपने गुरु के अलावा अन्य किसी को इस सम्बन्ध में जानकारी न दें।

साधना रात्रि के प्रथम पहर बीत जाने के पश्चात् सम्पन्न करनी चाहिए, और यदि रघान एकान्त हो, तो विशेष अच्छा है, साधना के दोरान कोई भी साधना कथा में प्रवेश न करे।

आसुरी भहाकल्प की सभी साधनाओं में काले वस्त्रों का ही उपयोग किया जाता है।

इस साधना में साधक अपने सामने गुरु यन्त्र चित्र तथा प्रयोग विशेष में जाने वाली साधना सामग्री के अलावा कुछ किसी देवी-देवता का चित्र अथवा यन्त्र स्थापित नहीं करे।

भगवान शिव द्वारा रचित 'आसुरी महाकल्प तन्त्र' विशेष प्रकार का तन्त्र है, जिसमें मन्त्र तन्त्र तथा बन्ना तीर्त्तों का प्रयोग हुआ है, और इस कारण यह शीघ्र कलदाराक है, 'आसुरी महाकल्प तन्त्र' आब से हजारों वर्ष पहले जितना खरा था, उतनाहीं आज भी खरा एवं विशिष्ट सिद्धियायक है, हसमें न तो कोई विशेष प्रकार की अपर्याप्ति लाइना सामग्री है, और वही जटिलता, इस लाइना में साधक की इच्छा शक्ति की तीव्रता, समर्पण विशेष रूप से आवश्यक है, वेसे भी उन साधकों को तन्त्र-लाइना करनी ही नहीं चाहिए तिन्हें थोड़ी बहुत शंका, अन्द्रा ही अथवा मानविक रूप से उद्देश्य ही जलत हो।

'तारार्चि तन्त्र' तथा 'आगम तत्व विलास' ग्रन्थ में लिखा है कि -

किं कुर्याद्बुपतिः कुद्धः किं कुर्यूरिपुवोऽस्मिन्नाः ।

क्रद्धः कालोऽपि किं कुर्यादासुरी चेदुपासिता ॥

अथात् उस साधक का क्रद्ध वृपति क्या करेगा, सभी कुद शत्रु भी क्या करेगे,  
कुद काल भी क्या करेगा, जिसके आसुरी महाकल्प की सिद्धि की है।

इस साधन के सभी प्रयोग अभीष्ट सम्मोहन, वशीकरण, शकुनाश, रोगनाश, अनन्हीन नाश हेतु जलग-अलग संज्ञा में मन्त्र जप आवश्यक है, उससे अधिक संख्या में मन्त्र जप किया ना सकता है, लेकिन कम नहीं। प्रतिदिन मन्त्र जप की भाग्यि के पश्चात् 'होम' (हवन) अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

एक बार एक उद्देश्य अर्थात् गंकल्प की पूर्ण हेतु साधन सम्पन्न की जा सकती है, सभी उद्देश्यों का संकल्प एक साथ नहीं लेना चाहिए।

### संकल्प

प्रत्येक दिन साधना प्रारम्भ करने से पहले साधक अपने जल में जल ले कर निम्न संकल्प करे -

अस्यु आसुरीमन्त्रस्य अंगिरा ऋषिः विशद्धन्तः आसुरी देवता ओ वीजं स्वाहा शक्तिः, हु कीलकं, ममार्भीष्ट सिद्धिर्यं जप विनिवोगः।

### साधना सामग्री

इन विशेष साधनाओं में साधना सामग्री एक समान है लेकिन अन्तिम दिन हवन जलग-अलग सामग्री से सम्पन्न किया जाता है, मूल रूप से ताप पात्र में जल, आसुरी महाकल्प महामन्त्र, राई सरसों, काले तिल, रूपी नीम के

पते आवश्यक हैं, इनके अतिरिक्त सम्मोहन साधन में आसुरी सम्मोहन गुटिका, वशीकरण हेतु वशीकरण गुटिका, ग्रदु शनि के लिए शब्दुहन्ता गुटिका, रोग शनि के लिए मानस गुटिका, दारिद्रय नाश हेतु तारा गुटिका का प्रयोग आवश्यक है।

### साधना-विधान

अपने भाग्ये एक बड़ी अवकाश का ब्रागोट (चीको) बिड़ा कर उस पर काला कपड़ा चिठ्ठाएं, मण्ड में एक ताप पात्र में आसुरी महा कल्प महामन्त्र, स्थापित करे, उसके ऊपर तीन लाइनों में रात-भात नीम के पते रखें, पहली लाइन में राह की सात हेस्तियों बनाएं, दूसरी में तिल की और तीसरी में सरसों की ढोरियां बनाएं, एक जल पात्र अपने पास जलग रखें और एक अन्य खाली ताप पात्र में रखें।

सर्वप्रथम पात्र में से जल लेकर संकल्प करने के पश्चात् पुनः बाएं हाथ में जल ले कर द्वाएं हाथ से सभी सामग्री पर जल छिड़के, अपने शरीर के अंग, हृदय, रिश, नेत्र, मस्तक, उदर तथा कानों पर जल अवश्य लगाएं।

अब सर्व प्रथम गुस का ध्यान कर अपना संकल्प देखाएं, तथा शिव पूजन सम्पन्न करे, तिल कायं हेतु साधना की जा रही है, उससे सम्बन्धित विशेष मन्त्र सिद्ध प्राप्त प्रसिद्धता

नुरुब्रह्मा गुरुविंशतिः गुरुर्लदतो महेश्वरः ।  
गुरुरैव परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरुर्वे नामः ॥

अश्वान्-मण्डलाकारं त्याप्तं येन चराचरम् ।  
तत्-पदं दक्षिणं येन तस्मै श्रीगुरुर्वे नामः ॥

अश्वान्-तिमिराक्षयरथं ह्यावौक्तनं शताक्तया ।  
वस्तुरुद्धमीतिं येन तस्मै श्रीगुरुर्वे नामः ॥

स्थावरं जंगमं त्याप्तं येन कृत्वान् चराचरम् ।  
तत्-पदं दक्षिणं येन तस्मै श्रीगुरुर्वे नामः ॥

विद्-जपेण परि-त्याप्तं शैलोत्तमं स-चराचरं ।  
तत्-पदं दक्षिणं येन तस्मै श्रीगुरुर्वे नामः ॥

गुटिका अपने सामने स्थापित कर उसके ऊपर काजल लगाए, गुरु पूजन तथा शिव पूजन की अन्य सामग्री, अर्थात् कुंकुम, अंडार, गुलाल, केसर, चावल, पुष्प से सम्पन्न किया जाना। यहाँ आठ दिन में इसका अन्तिम अंडार करना चाहिए।

अब ग्रन्थ द्वारा पर आसुरी गन्ध जिसमें राह, पुष्प, चन्दन, प्रियंगु, नागकेसर, मेनसिन, तंगर, सम्मिलित होता है, और इन सब को मिला कर महीन पासा जाता है, इस आसुरी गन्ध को इन २१ देशों पर तथा आसुरी महाकल्प यंत्र पर चढ़ाएं और सभी सामग्री को भूप विखाएं, अब साधक बीर मुद्दा में बैठ कर आसुरी महाकल्प मन्त्र का उच्चारण जप प्राप्तम् करें, ११० अंडार का यह मन्त्र अल्पतम् महत्वपूर्ण है,

यहि साधक इसे याद न कर सके, तो एक कागज पर बड़े केवल 'तांत्रोक्त तारादिक माला' से सम्पन्न करें, इस मन्त्र का पुरुष्वरण दूसरे हजार मन्त्रों का होता है, अर्थात् ८ दिन में इस हजार गंत्र जप आवश्यक है, अपनी मन्त्र संख्या का विभाजन करी अनुसार कर न।

### तारादिक आसुरी मन्त्र

ॐ कदुक कदुकपत्रे सुभगे आसुरि रसे रक्तवाससे अथवर्णस्य दुष्ठिते अधोर अधोरकम्भकारिके अमुकस्य गति दह वह उपविष्टस्य गुरु दह वह सुमस्य मनो दह वह प्रबृद्धस्य इवर्य दह दह हन इन पच पच तावद तावत्पच यावन्मे वशमायाति

### हुं फट् स्वाधा।

इन तीव्र मन्त्र का उच्चारण धोरे-धरे और गुद्ध रूप से करना चाहिए, तथा एक माला जप होने के पश्चात् जिस मिठ्ठी के पात्र में धूप रखा हुआ है, उसमें सामने रखे हुए तिल, राई और सरसों में से धोड़ी-योड़ी सामग्री हवन में डाल दें तथा प्रत्येक दिन के मन्त्र जप के पश्चात् भम्पूर्ण तिल, भल्हों, राई हवन में समर्पित कर दें, प्रतिदिन नये नीम के पसे तथा नह राई, सरसों, तिल आवश्यक है, इस प्रकार आठ दिन बाद पूर्णाहुति सम्पन्न करनी चाहिए, उसके पहले यहि दस हजार मन्त्र जप में जितने मन्त्र कम रह गये हों, उनमें मन्त्रों का जप कर लेना चाहिए।

अब इस विशेष तांत्रोक्त पूजा का अन्तिम अध्याय सम्पन्न करना है, और इस अन्तिम चरण में विधि-विधान सहित, हवन सम्पन्न किया जाता है, नित्य की तरफ पहले पूजा सम्पन्न कर लें, तत्पश्चात् एक लोहे के हवन पात्र की व्यवस्था कर उसे साफ कर उत्त पर चारों ओर स्वरितक बनाकर अप्नि प्रज्वलिन करें, वेत्री का ध्यान कर प्रार्थना करें कि मेरी आठ दिन की तपस्या सफल हो, और मेरा कार्य सिद्ध हो।

आसुरी मन्त्र में अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग प्रियंगु, नागकेसर, मेनसिन, तंगर, सम्मिलित होता है, और इन सब को मिला कर महीन पासा जाता है, इस आसुरी गन्ध को इन २१ देशों पर तथा आसुरी महाकल्प यंत्र पर चढ़ाएं और सभी सामग्री को भूप विखाएं, अब साधक बीर मुद्दा में बैठ कर आसुरी महाकल्प मन्त्र का उच्चारण जप प्राप्तम् करें, ११० अंडार का यह मन्त्र अल्पतम् महत्वपूर्ण है, इस हेतु धी और राई मिला कर एक सौ आठ बार आहुति देनी चाहिए।

इस प्रकार मन्त्र मिठ्ठी होने पर अन्य प्रकार के कार्यों के लिए आगे प्रयोग करना चाहिए।

शत्रु बाधा से पूर्ण शान्ति हेतु कड़वा तेल, नीम के पते, अश्रो में लिखु कर अपने सामने रख दें, तथा इसका जप नवा राई तीनों मिला कर हवन करने से प्रबल शत्रु केवल 'तांत्रोक्त तारादिक माला' से सम्पन्न करें, इस मन्त्र का का नाश हो जाता है, प्रस्त्रेक बार मन्त्र जप उच्चारण कर हवन कुण्ड में आहुति देनी चाहिए, इस प्रकार १०८ आहुति सम्पन्न करनी चाहिए।

### साधना सामग्री न्यौदावर

आसुरी महाकल्प यंत्र २४०/-, तारादिक माला १५०/-

आसुरी लग्मोहन गुटिका १२०/-, वशीकरण गुटिका १२०/-

शत्रुहन्ता गुटिका -३५०/-, मानस गुटिका -१०/-

तारा गुटिका -१३०/-

# जीवन के पांच प्रधान सुख

## पांच साधनाओं से पांच साधनाएँ

जिन्हें सम्पन्न करा  
प्रत्येक साधक के लिए आवश्यक ही है

साधना के रूप में पांच साधनाएं मात्र महत्वपूर्ण भारी गई हैं जो ग्रीवा के पांच महत्वपूर्ण पक्षों से सम्बन्धित हैं, ताकि वाचना-वाचनी प्राप्ति हो, विद्यालयी साधन-शृगुणों के लिए, शृगुण-प्रति प्रियोग हो, वशीव वायवा-वशीकरण मिले हों तथा ग्रीवा में ग्रेन आकर्षण, अभिमान मुला हेतु-जर्मीनी साधना।

साधना के लेवर की ये पांच साधनाएं जिन्हें सम्पन्न करना प्रत्येक साधक का एक प्रकार से कर्तव्य ही है, क्योंकि इन साधनाओं में जो सिद्धियां प्राप्त होती हैं उसके माध्यम से ही जीवन में श्रेष्ठता एवं पूर्णता आ सकती है और जब पूर्ण गुरुदेव वरदान ख्वर्लप ये साधनाएं प्रदान कर रहे हैं तो क्यों नहीं इन्हें सम्पन्न किया जाए।

इन पांच साधनाओं की कुछ विशेषताएं हैं—

१. ये साधनाएं अस्थन सरल हैं और कोई भी शृहन्त्र युद्ध या स्त्री सम्पन्न कर सकता है।

२. इनमें कम से कम साधना स्थानों का प्रयोग होता है।

३. ये कम से कम छिना में सम्पन्न हो सकती हैं।

४. यदि पुरी विष्णु से इन साधनाओं को सम्पन्न किया जाए तो निष्ठय ही नकलता प्राप्त होती है।

५. इन साधनाओं को सम्पन्न करने समय किसी विशेष

माणिक्यक की आवश्यकता नहीं होती।

६. ये साधनाएं आप अपने घर पर बेठकर भी सम्पन्न कर सकते हैं, यहाँ तक कि आप अपना इनिक व्यायार या नौकरी करते हुए भी इन साधनाओं को कर सकते हैं।

७. इनसे सम्बन्धित मन्त्र जप दिन या रात्रि में कभी भी कर सकते हैं।

८. इन साधनाओं से किसी प्रकार के मन्त्र जप से विपरीत प्रभाव नहीं होता।

बास्तव में भी ये साधनाएं आज के जीवन के चमत्कार हैं, आश्वर्य है और उन्हें आप एक साथ नहीं तो धीरे धीरे कर सकते हैं, यह अंक आप संभाल कर रखें और समय मिलने पर इनमें से कोई न कोई साधना अवश्य सम्पन्न करते रहें।

## १- सम्पूर्ण लक्ष्मी सिद्धि- तारा साधना

यह दस महाविद्याओं में से एक प्रमुख महाविद्या और संसार की अद्वितीय धनदायक वेदी है, हजारों वर्षों से क्षण मुनि और हमारे पूर्वज तारा साधना सम्पन्न करते आये हैं, क्योंकि निष्ठापूर्वक की गई इस साधना में सफलता प्राप्त होती है और मनोवृच्छित वरदान प्राप्त होता है।

इसके साथ ही साथ इस साधना को सम्पन्न करने पर महाविद्या सिद्ध हो जाती है और भौतिक शृङ्खला से जीवन में वह जो कुछ भी चाहता है, उसे प्राप्त हो जाता है।

### साधना रहस्य

इस साधना को किसी भी महीने में प्रारम्भ की जा सकती है, भौतिक रविवार की रात्रि से यह साधना प्रारम्भ की जाय तो ज्यादा अनुकूल रहती है तथा शोध सफलता प्राप्त होती है। इसमें निम्न उपकरणों की आवश्यकता विशेष रूप से पड़ती है-

१- जलपात्र, २- कुंकुम (रोली), ३- अक्षत, ४- आधारीटर चौकोर लाल वस्त्र, ५- मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त 'तारा यन्त्र एवं चित्र', ६- दो तोला गन्धक का चूर्ण, ७- 'तारा वत्सनाथ'।

### साधना विधि

रविवार की रात्रि को स्नान कर लाल धोती पहन कर लाल आसन पर वक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाय,

‘जनवरी’ 2003 मंव-तैत्र-यव विज्ञान 56’



सम्मने लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा दें और सम्मने 'तारा यन्त्र एवं चित्र' स्थापित कर दें, फिर साप्ते गन्धक की सात ढेरियां बना दें, चौथी ढेरी पर तेल का दीपक स्थापित कर दें, इस दीपक के सम्मने ही 'तारा वत्सनाथ' को स्थापित कर दें और उसके आगे जपयात्र कुंकुम अग्रवत्ती रखें दें।

सर्वप्रथम जल से यन्त्र चित्र को थोकर रख दें, अद्धन चढ़ा दें, फिर तारा वत्सनाथ को जल से थोकर चौल कर उसके आगे काजन पर किसी भी शताका से कुंकुम के द्वारा निम्न मन्त्र लिखे-

“ॐ तारा तृष्णी स्वाहा”।

इसके बाद दीपक व अग्रवत्ती जला दें तथा 'भूजे की माला' से मन्त्र जप प्रारम्भ करें, इनमें निम्न २३ माला मन्त्र जप अनिवार्य है तथा यह मात्र छ. दिनों की साधना है, यह साधना नित्य रविवार में गन्धन की जाती है, जब छठे दिन भगवती तारा के प्रत्यक्ष दर्शन हो तो उसे हाथ जोड़ कर

को अवश्य ही सम्पन्न करें।

साधना लाखरी-२५०/-

मुक्तिक्रम संस्कृत क्रम

## २- शत्रु एवं बाला निवारण हेतु बगलामुखी सिद्धि

आज का जीवन अन्यथिक असुरक्षित और भयप्रद बन गया है नमाज में जल्दी से ज्यादा छेष, छल, हिसा और शत्रुता का ब्रातावरण बन गया है फलभ्वस्त्रप यदि व्यक्ति शान्ति पूर्वक रहना चाहे भी तब भी समझ नहीं होता।

यह साधना शत्रुओं को परारन करने उन्हें समाप्त करने तथा लड़ाई डागडे, मुक्तमें आदि में पूर्ण सफलता देने में विशेष रूप से भव्यता है, यही नहीं उपर्युक्त यदि शत्रानक कोई संकट आ गया है तब भी वह साधना सम्पन्न करने पर वह संकट समाप्त हो जाता है।

जीवन की सुरक्षा और शत्रुओं पर नियम प्रश्नार करने और उन्हें समाप्त करने की दृष्टि से यह आपने आपमें अद्वितीय साधना है प्रत्येक साधक को यह साधना आपने जीवन में अवश्य सम्पन्न करना चाहिए इससे जहाँ एक और महाविद्या तो सिद्ध होती है, जहाँ दूसरी और व्यक्ति शत्रुओं की तरफ से निश्चेन्न हो जाता है, यदि कोई व्यापार में

ब्राताव बन रहा हो या बास अथवा आपसिर नुकसान पहुँचने की कोशिश कर रहा हो या किसी ने आप पर मुक्तमा कर दिया हो अथवा आपको प्राणों का भय हो या आप किसी भी दृष्टि से असुरक्षित अनुभव कर रहे हो तो यह साधना सर्वश्रेष्ठ साधना है, यदि निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न की जाय तो हाथों हाथ फल प्राप्त होता है, तथा जीवन में पूर्ण अध्ययना प्राप्त होती है।

### साधना रहस्य

किसी भी महोने के मंगलवार से रात्रि को यह साधना प्राप्ति को जा सकती है, इसमें निम्न उपकरण होने चाहिए-

१-जलपात्र, २-कुंकुम (रोली), ३-चावल, ४-आधानीटर चौकोर पीला वर्ण, ५-मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त 'बगलामुखी यन्त्र व चित्र', 'हरिग्रा इसराज'।

### साधना विधि

मंगलवार की रात्रि को स्नान कर दक्षिण दिशा की ओर



जीवन  
उत्तीर्ण बगलामुखी सिद्धि विधि विवरण  
प्रकार विवरण

प्रार्थना करें कि वह भीतिक जीवन से सन्तुलित सभी इच्छाएं पूरी करे और नित्य स्वर्ण प्रदान करे।

इसके बाद तारा बन्त्र चित्र पूजा स्वान में रख दें और 'तारा बन्त्सनाथ' को उसी लाल वस्त्र में लपेट कर घर के किसी सुरक्षित स्थान में रख दें, इस प्रकार करने से यह साधना सिद्ध हो जाती है तथा जीवन में वह सब कुछ प्राप्त होता है जो साधक को इच्छा होती है।

इनमें निम्न गोपनीय मन्त्र वा प्रयोग किया जाता है -

### मन्त्र

॥ ओ ऐ के ल ही ऐ ताराये सिद्धि वेहि वेहि ॐ ऐ के ल ही ऐ नमः ॥

Om Aim Ka La Hreem Aim Tarayey Sidhi Dehi  
Dehi Om Aim Ka La Hreem Aim Namah

वस्तुतः यह साधना आपने आपमें चमत्कार हो है और जो इसे सिद्ध कर लेता है उसके जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता, प्रत्येक साधक को चाहिए कि वह साधना

मुह कर आसन पर बैठ जा, साधक पीली धोती हो पहने और वज्रोपवीत को पीले रंग में रंग कर गले ने धारण कर ले फिर सामने पीले वस्त्र पर 'बगलामुखी चंच-चित्र' स्थापित कर दें और उसके सामने ही 'हरिद्राहंसराज' स्थापित कर दें, तत्पञ्चांश अशरबनी और दोषक लगा ले, इसमें शुद्ध धो का ही दोषक लगाया जासा चाहिए, साधना में यदि 'हल्दी की माला' का प्रयोग करे तो स्थान उचित रहता है।

नवप्रथम जल से यन्त्र चित्र को धोकर केरार लगावें और फिर हरिद्रा हंसराज के आगे काशव घर निम्न मन्त्र दिया सलाह की अलाका से या किसी निनके से केसर के द्वारा अंजित करें-

"ॐ बीताम्बरा देव्ये नमः"।

फिर मन्त्र जप प्रारम्भ करें, इसमें ज्यारह दिनों में सवालाख मन्त्र जप करने होते हैं, इस प्रकार १२५ मालाएं नित्य मन्त्र जप करना चाहिए।

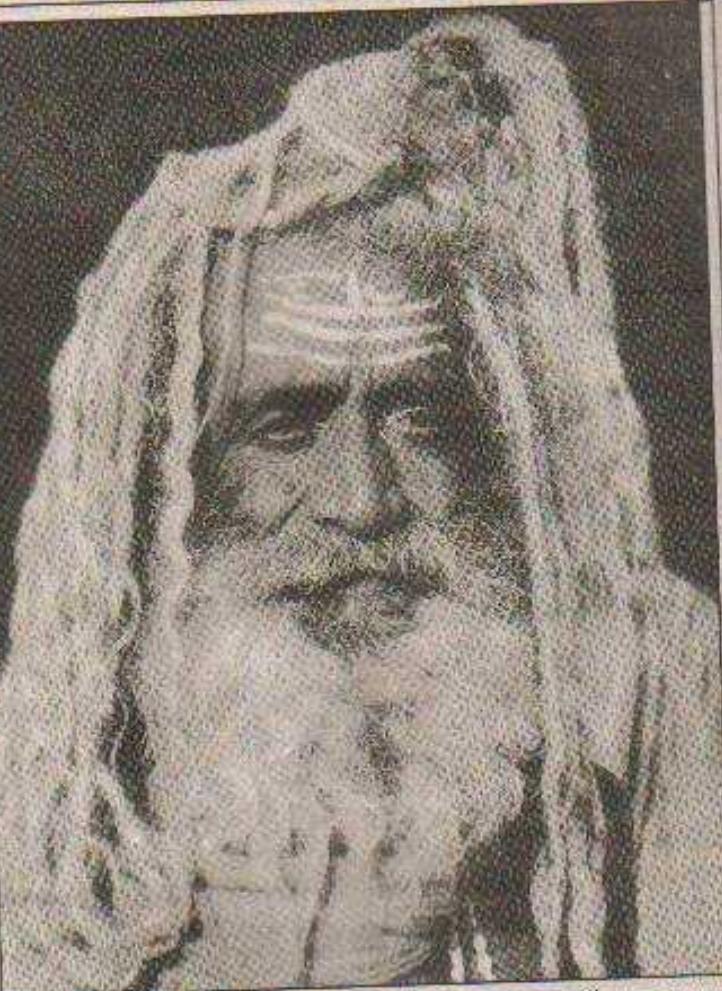
### मूल्य

ॐ हो बगलामुखी (अमुक) शत्रुणां  
नाशय मर्दय हो फट॥

Om Hieem Baglamukhi (Amuk)  
Shatrunam Nashay Marday Hieem  
Phat

यह मन्त्र छोटा भा है पर अपने आप में अन्यथिक महत्वपूर्ण है, निष्ठापूर्वक इस साधना को सम्पन्न करना चाहिए और साथ ही साथ ज्यारह दिनों तक पूर्ण

हेठ और भज को एक तर्फ में लाईबा ढी साधना कठा भया है। जब हेठ और भज की तरफ बन जाती है, तो कायी में तीव्रता आने वाली है, और जीवन में उत्ताह भी नियंत्र बना रहता है। साधनाएं देवताओं को प्रक्षम करवे के लिए जहाँ अपितु उठें अपने जीवन में उत्ताह के लिए हैं। जिसमें वे इच्छाएं पूर्ण हो जाके। जिनको अपने करते से जीवन में मधुरता आ सके। यदि जीवन में मधुरता है तो सारा जगत् भावा बोह होते हुए और अद्वद तरह है और प्रति हिन एक जीविता का स्वार होता रहता है।



बहुवर्य का पालन करना चाहिए, इस मन्त्र में अमुक शब्द के रूपान पर शान्त के नाम का उल्लेख करना चाहिए।

जब ज्यारह दिन में मन्त्र जप पूरा हो जाय तो उस हरिद्रा हंसराज को भंगल में जाकर लकड़िया जला कर उसमें उसे जला देना चाहिए।

इस प्रकार करने पर तुरन्त मनोवांछित कार्य लिदि हो जाती है और जीवन में उम जो कुछ चाहने हैं वैसा ही जाता है, वास्तव में ही यह साधना अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण और शोध सिद्धिवायक है।

साधना सामग्री - ₹१०/-

कृष्णकृष्णकृष्ण

### ३-कार्य सिद्धि साधना-भूतु साधना

इससा विश्वास भूत-प्रेतों के प्रति कुछ भी ही परन्तु यह सत्य है कि निस प्रकार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जातियां होती हैं, उसी प्रकार मनुष्य और देवता के जलावा भूत-प्रेत आदि जातियां भी होती हैं, और ये भी मनुष्य की



तरह से सुख-दुःख प्यार घृणा आदि अनुभव करते हैं, जिस प्रकार एक मनुष्य से सामान्यतः भय नहीं होता उसी प्रकार मनुष्य को भूत जाति से भय नहीं हो सकता, जिस प्रकार मनुष्य अपनी सामर्थ्य के बल पर दूसरे मनुष्य को नीकर रख कर उससे कार्य करा सकता है, उसी प्रकार कोई व्यक्ति साधना कर भूत को नीकर के रूप में रख सकता है और उससे मनोवाञ्छित कार्य सम्पन्न करा सकता है।

यह बात भी इब सिद्ध हो चुकी है कि भूत-प्रेत किसी भी प्रकार से कोई हानि नहीं पहुंचाते, वह क्रोधित भी होते हैं तो भी कोई तकलीफ नहीं देते, मनुष्य से ज्यादा सेवा करते हैं, चौबीसों घण्टे आज्ञा पालन में तत्पर रहते हैं तथा वे राज्य कार्य कर देते हैं जो कि मनुष्य के लिए स्वाभाविक रूप से असंभव होता है।

भूत त्रि-आयामी होने के कारण लगभग अदृश्य होने रहते हैं, पर जिसमें भूत सिद्ध किया हुआ होता है, उसे वह स्पष्ट दिखाऊँ देता है, ये अत्यधिक बलशाली होते हैं, हवा की तरह

एक स्वान से दूसरे स्वान पर जा सकते हैं, इन लिए ये कठिन से कठिन कार्य भी कर सकते हैं।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकते हैं और इस साधना से किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती।

### साधना रहस्य

इस साधना को किसी भी महीने के कृष्ण पक्ष के रविवार को रात्रि से प्रात्मम की जा सकती है, इसमें निम्न उपवरण होने चाहिए-

१-आधा नीटर जाला बल्व, २-गन्ध रिद्ध प्रणप्रतिष्ठा युक्त 'भूत डामर यन्त्र', ३-तेल का दीपक, ४-बड़हल का टुकड़ा।

### साधना विधि

रविवार की रात्रि को बिना स्नान किये काली धोती पहन कर काले आलन पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर मुँह कर बैठ जाएं सामने काला बल्व बिछा दें और उस पर 'भूत डामर यन्त्र' को रख दें, इसके सामने ही 'बड़हल का टुकड़ा रथापत कर उसके ऊंगे निम्न मन्त्र काली स्थानी से छोड़-छोटे अंधारों में लिख दें-

"ॐ भूताय वशं करि करि स्वाहा"।

इसके बाद तेल का दीपक लगाकर फिर 'सर्प अस्थियों की माला या मुंग की माला से निम्न मन्त्र जप करें -

॥ ॐ शमशान भूताय वशं करि

मम आज्ञा पालय पालय फट् ॥

Om Shamshan Bhutayey Washam Kari Mam

Agya Palay Palay Phat

इस मन्त्र की नित्य १०१ माला मन्त्र जप अविवार्य है, मात्र ११ विन तक मन्त्र जप करने पर ११ वें विन भूत सामने प्रत्यक्ष होता है तथा आज्ञा मांगता है तब साधक उसे आज्ञा दें कि मैं जो भी कार्य करूँगा तुझे पूरा करना है, तब वह भूत बचन देकर चला जाता है और इसके बावजूद भी यह साधक उपराक्त मन्त्र का तीन बार उच्चारण करता है तो वह भूत उसकी आँखों के सामने प्रत्यक्ष हो जाता है, और तुरन्त आज्ञा पालन करता है।

साधना पूर्ण होने पर बड़हल के टुकड़े की ताबीज में भर कर अपनी बांह पर बांध लेना चाहिए तथा 'भूत डामर यन्त्र'

होम नारायण दत्त श्रीमाती



## अप्सरा साधना

को काले कपड़े में लपट कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख देना चाहिए।

निश्चय हो यह साधना अत्यधिक महत्वपूर्ण है तथा गायत्री उपसक अथवा सौभृत्य साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साधना समय- २००/-

कृष्णकृष्ण

## ४-सर्व प्रभावकारी सम्मोहिनी वशीकरण साधना

आज के युग में वशीकरण साधना एक अनिवार्य साधना बन गई है, क्योंकि चारों तरफ नफरत छेष और धोखा बढ़ गया है, प्रेमी-प्रेमिका को धोखा दे देता है, भाई-भाई भी दुश्मनी कर लेता है तथा अकारण ही शत्रु ऐसा होते रहते हैं, अधिकारी बन नाराज रहता है, हमारे पास काम करने वाले विश्वास पत्र नहीं रहते हैं, पाठीनर की तरफ से धोखा होने की

रक्षाकरण रहती है, इन सभी विधियों में वशीकरण प्रयोग अपने आपमें एक आश्चर्यजनक प्रयोग है, यह प्रयोग अभी तक गोपनीय रहा है, पर इस प्रयोग से पत्थर जैसे कठोर द्वय को भी अपने वडा में किया जाता है, और जीवन पर उससे मनोवाञ्छित कार्य सम्पन्न कराया जा सकता है।

इस साधना को पुरुष या स्त्री कोई भी कर सकता है तथा इससे कोई अद्वित नहीं होता है।

### साधना रहस्य

इस साधना में निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है-

१-जलपात्र, २-कुंकुम, ३-अदात, ४-काजल की डिल्ली, ५-वशीकरण तारीज, ६-रत्नजोत।

### साधना विधि

किसी भी शुद्धवार की रात्रि को स्नान कर सफेद धोती पहन कर सफेद आसन पर पूर्व की ओर मुह कर बैठ जाय, सामने सफेद बल्ज बिठा दें और उस पर 'वशीकरण तारीज' तथा उसके सामने 'रत्नजोत' स्थापित कर दें, फिर घन्त की स्नान करकर उस पर कुंकुम की बिन्दी लगावें तथा अहसत बढ़ावें बाव में रत्नजोत के आगे केसर से उस व्यक्ति या स्त्री का नाम लिखे जिसे वश में करना हो, यदि बहुत लोगों को एक स्थान अपने अधीन करना हो तो उस पर 'सर्वजन' शब्द लिखें।

इसके बाद तेल का दीया लगा दे और 'स्फटिक भाला' से निम्न मन्त्र की नित्य १०१ भाला जप करें, यह पांच विन की साधना है, और साधना सम्पन्न होने पर यह नारीज को लाल या पीले धारे में पिरो कर बांह पर धोंध लें तथा रत्नजोत को सफेद कपड़े में लपेट कर किसी स्थान पर रख दें।

### मन्त्र

॥ ओ क्री क्री क्रीं (अमुक) वश्व करि करि मम  
आजा पालय पालय फट॥  
Om Kreem Kreem Kreem (Amuk) Washaw Kari  
Kari Mam Agya Palay Palay Phat

इसमें 'अमुक' शब्द के म्यान पर उसका नाम उच्चारण करें जिसे वश में करना हो अथवा आप 'सर्वजन' का उच्चारण भी कर सकते हैं।

वासनव में ही यह साधना आज के युग में अत्यधिक उपयोगी और महत्वपूर्ण है, तथा इस साधना से किसी पत्थर दिल

साधना के मार्ग में निष्कर्मणिता अथवा  
कुछ नहीं करना बहुत बड़ी लाशा है।

निरंतर ब्राह्म स्वप्न से भी कर्म करते रहना  
चाहिए अन्यथा चेतना अंग्रेज लोकों में  
लौटने लगती है।

मन विषयों में रमने लगता है।

कार्य नहीं करने से अद्वेतन अप्सरा सी  
आने लगती है।

अतएव साधना के मार्ग में

ब्राह्म और आनन्दिक कर्मों में संतुलन  
आवश्यक है।

साधना तो कर्म का आश्राम है प्रथोजन  
नहीं इसे समझो और कर्म में गुड़ जाओ।

व्यक्ति को भी अपने अधीन कर उससे मनोविज्ञान कार्य सम्पन्न  
कराये जा सकते हैं।

साधना समयी-३००/-

\*\*\*\*\*

## ५- सौन्दर्य सुख प्रेम की पूर्णता हेतु उर्वशी साधना

रस्मा उर्वशी और मेनका जीवन की अप्सराएं रही हैं,  
और प्रत्येक देवता इन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं,  
यदि इन अप्सराओं को देवता प्राप्त करने के  
इच्छुक रहे हैं तो मनुष्य भी इन्हें प्रेमिका रूप में प्राप्त कर  
सकते हैं।

इस साधना को सिद्ध में कोई दोष या डायि नहीं है, तथा  
जप अप्सराओं में श्रेष्ठ उर्वशी सिद्ध होकर वश में हो जाती है,  
तो वह प्रेमिका की तरह मनोरंजन करती है, तथा संसार की  
दुर्लभ वस्तुएं और पश्चात् मैट्र रखस्य लाकर देती है, जीवन  
भर यह अप्सरा साधक के अनुकूल बनी रहती है, वास्तव में  
ही यह साधना जीवन की श्रेष्ठ एवं मधुर साधना है, तथा  
प्रत्येक साधक को इस सिद्धि के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए।

## साधना रहस्य

यह साधनाकिसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ हो जा सकती है,  
जिसमें निम्न उपकरणों की विशेष रूप से आवश्यकता रहती है -

१- जलपात्र, २-केसर, ३-पुष्प, ४-आधा मीठर चीकोर

पीला बस्त्र, ५-मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा 'उर्वशी यन्त्र', ६-  
'सोनवल्ली'।

## साधना विधि

किसी भी शुक्रवार की रात्रि को साधक स्नान कर पीले  
आसन पर उत्तर की ओर मुह कर बैठ जाए तथा सामने  
पीला बस्त्र बिछा कर उस पर 'उर्वशी यन्त्र' स्थापित कर दें  
तथा सामने पांच गुलाब के पुष्प रख दें, फिर पांच  
धो के दीपक लगा दें और अगरबत्ती प्रज्वलित कर दें,  
फिर उसके सामने 'सोनवल्ली' रख दें और उस पर केसर  
से तीन बिन्दियां लगा लें और मध्य में निम्न शब्द अंकित  
करें -

"ॐ उर्वशी प्रियवशं करि हुं"।

इस मन्त्र के नीचे केसर से अपना नाम लिख लें फिर  
साधक पीली धोती पहन कर पीले आसन पर उत्तर की ओर  
मुह कर 'स्फटिक माला' से निम्न मन्त्र की १०१ नाला मन्त्र  
जप करें।

## मन्त्र

॥ ॐ हीं उर्वशी मम प्रिय मम

चिन्तानुरंजन करि करि फट ॥

Om Hreem Urwashee Mam Priya Mam  
Chintanuranjan Kari Kari Phat

यह मात्र सात दिन की साधना है और सातवें दिन अत्यधिक  
सुन्दर वस्त्र पहिना जीवन भर से बनी हुई उर्वशी प्रत्यक्ष  
उपस्थित होकर साधक के पास बैठ जाती है और कहती है  
कि तुमने मुझे साधना से अपने वश में किया है मैं जीवन भर  
आप जो भी आज्ञा देंगे उसका पालन करूँगी।

तब पहले से ही लाया हुआ गुलाब के पुष्पों का हार उसके  
गले में पहिना देना चाहिए, इस प्रकार यह साधना सिद्ध हो  
जाती है और जाव में जब कभी उपरोक्त मन्त्र तीन बार  
उच्चारण किया जाता है तो वह प्रत्यक्ष उपस्थित होती है तथा  
साधक जैसी आज्ञा देता है वह पूरा करती है।

साधना समाप्त होने पर उर्वशी मन्त्र धारों में पिरोकर अपने  
गले में धारण कर लेना चाहिए सोनवल्ली को परीते कपड़े में  
लपेट कर घर में किसी स्थान पर रख देना चाहिए, इसमें  
उर्वशी जीवन भर वश में बनी रहती है।

साधना समयी-३१०/-

ये पांचों साधनाएं आज के युग की आश्चर्य हैं और प्रत्येक  
साधक को अपने जीवन में इन साधनाओं को सम्पन्न करनी  
चाहिए और सभी दृष्टियों से जीवन को पूर्णता देनी  
चाहिए।

\*\*\*\*\*

# रामाया हूँ

राधक, गढ़वा, तथा सर्वेजन रामान्य के लिए सद्बय का वह रूप यह प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यष्टि के जीवन में उभटि का कारण होता है तथा उन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए उच्चति का मर्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

मीठे दी गई रामाया में समय को शेष रूप में प्रस्तुत किया गया है जीवन के लिए आवश्यक ऐसी भी कार्य के लिये, वाहे दह व्यापर से सम्बन्धित हो, जोकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो जथा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस शेषतम समय का उपयोग कर सकते हैं और रामलाला का प्राणशर ८५-६: जापके भूष्य में अकित हो जायेगा।

**ब्रह्म मुहूर्त और समय प्रातः ४.२४ बजे तक ही रहता है।**

वार / दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार ( जनवरी 19-26) ( फरवरी 2-9-16)	दिन ०६.०० से १०.०० तक रात्रि ०६.४४ से ०७.३६ तक ०८.२४ से १०.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक
सोमवार ( जनवरी 20-27) ( फरवरी 3-10-17)	दिन ०६.०० से ०७.३० तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
मंगलवार ( जनवरी 21-28) ( फरवरी 4-11-18)	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.०० से १२.२४ तक ०४.३० से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.००, १२.२४ से ०२.००, ०३.३६ से ०६.०० तक
बुधवार ( जनवरी 22-29) ( फरवरी 5-12)	दिन ०७.३६ से ०९.१२ तक ११.३६ से १२.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक रात्रि ०६.४८ से १०.४८ तक ०२.०० से ०६.०० तक
गुरुवार ( जनवरी 23-30) ( फरवरी 6-13)	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०४.२४ से ०६.०० तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक
शुक्रवार ( जनवरी 24-31) ( फरवरी 7-14)	दिन ०६.४८ से १०.३० तक ०४.२४ से ०५.१२ तक रात्रि ०८.२४ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक
शनिवार ( जनवरी 25) ( फरवरी 1-8-15)	दिन १०.३० से १२.२४ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक रात्रि ०६.२४ से १३.४८ तक ०२.०० से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक



# यह हमने नहीं बिपाहिए है कहा है

जिसी भी ऋषि को प्रश्न करने से वह प्रत्येक व्यक्ति के मन में खल्क-अखल्क की मस्तक रहती है तो यह कार्य सफल होना या नहीं सफलता इन द्वारा या नहीं करना तो उपरिकृत नहीं हो जायेगी। परन्तु यह नहीं दिन का प्राप्ति प्रकार से होगा दिन की स्थिति पर यह त्वय के अधिकारित होना चाहिए। जिससे उसके प्रत्येक दिन उसके अनुरूप एवं अनेक उपर्युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपर्युक्त कार्यकों सभी उपर्युक्त हैं, जो वराहमिहिर ने विशेष प्रकाशित कर्त्ता से सकलित हैं, जिन्हें वहाँ विवेक दित्ति के अनुसार प्रस्तुत किया गया है। इसके लिये उपर्युक्त करने पर आपका दूषण दिव दूषण सकलतादारपत्र का बनेगा।

## कालवरी

१. कल्पीएं हीं ॐ फट का २ बार उच्चारण करके कार्य पर जाएं। १५. काले कुत्ते को रोटी डालने तथा भगवान् भैरव का ध्यान करें।
२. गायत्री मंत्र बोलते हुए प्रान् सूर्य को जल अपित करें। १६. प्रातः काल हीं आविद्याय स्वाहा मंत्र का ७ बार जप करते हुए सूर्य भगवान को जल चढाएं।
३. शिव रक्षा शुभिका (५०/-) को दिन भर अपने पास रखें तथा सांय काल जल में प्रवाहित करें। विद्वांसे रक्षा होंगी। १७. शिव मुद्रिका (२००/-) को धारण करें। जीवन में सफलता प्राप्त होंगी।
४. प्रातः काल पांच बार हनुमान बाण का पाठ करें तथा हनुमान १८. ॐ हीं हंसः स्वं स्वः मंत्र का ११ बार जप करें। लाभ होगा।
५. प्रातः काल २१ बार गं बीज का उच्चारण करते हुए अदात भगवान् गणपति को अपित करें। १९. ऐं श्री हीं कल्पी मंत्र का ४३ बार जप करें। आर्थिक हानि से बचाव होगा।
६. गुरु मंत्र का जप करके ५ बार निम्न मंत्र का पाठ करें। ज्ञान विज्ञान सहित लभ्यते गुरु भक्तिः गुरुः परतरं नास्ति ध्येयः स गुरु मार्गिणिः। २०. गुरु मंत्र की २१ माला जप करें।
७. संजीवन गुटिका (३०/-) का प्रान् को पंचोपचार पूजन कर किसी शिव मंदिर में अपित कर दें। घर में रोश समाप्त होंगे। २१. गुरु जन्म दिवस के रूप में निखिलेश्वरानन्द सन्दर्भ का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संवर्जन न।
८. तेल के दीपक में लौंग डालकर हनुमान की आरती संपन्न करें। अनिष्ट टलेगा। २२. पीपल के वृक्ष की जड़ में तेल का दीपक लगा दें। फिर घर वापस आ जाएं एवं पीछे गुड़ कर न देखें। अनिष्ट टलेगा।
९. सूर्य तेजस (६०/-) का पूजन कर सूर्योदय के समय पूर्व दिशा में फेंक दें। लाभ होगा। २३. भगवान् शिवलिङ्ग को जल मिशित दुग्ध ॐ नमः शिवाय मंत्र के साथ अपित करें।
१०. शिवलिङ्ग पर ब्रिन्द त्रय चढ़ाते हुए ५ बार ॐ तत्पुरुषाय विद्यमहे महादेवाय धीमहि, तत्त्वो रुद्रः प्रयोदयात् का जप करें। २४. एक गोमती चक्र (५०/-) को पूजा स्थान में स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन करें। तत्पुरुषात् किसी मंदिर में चढ़ जै।
११. हनुमान चालीसा का पाठ करके हीं घर से निकलें २५. भगवान् गणपति को लड़ू का भीज लगाकर प्रसाद सभी परिवार के सदस्यों में वितरित करें।
१२. पांच लौंग पूजा स्थान में कपूर के साथ जलाएं। फिर भस्म से तिळक करके कार्य पर जाएं। २६. प्रातः दैनिक पूजन के बाद निखिलेश्वरानन्द आरती संपन्न करें।
१३. भगवान् विष्णु को तुलसी दल अपित करें। २७. भगवती दुर्गा के चित्र के समक्षा पांच बनियों का धी का दीपक जलाएं।
१४. ॐ हीं दुर्गायै नमः मंत्र का १०८ बार जप करें शुभ होगा। चढ़ा आएं। २८. एक तांत्रोक्त नारियल (१००/-) पर सिद्धर, मौली, अदात अपित कर पूजन करें। फिर हनुमान के मंदिर में

पुरश्चरण के बिना सिद्धि के से संभव है

# पुरश्चरण विधान

## चार विशेष अनुष्ठान

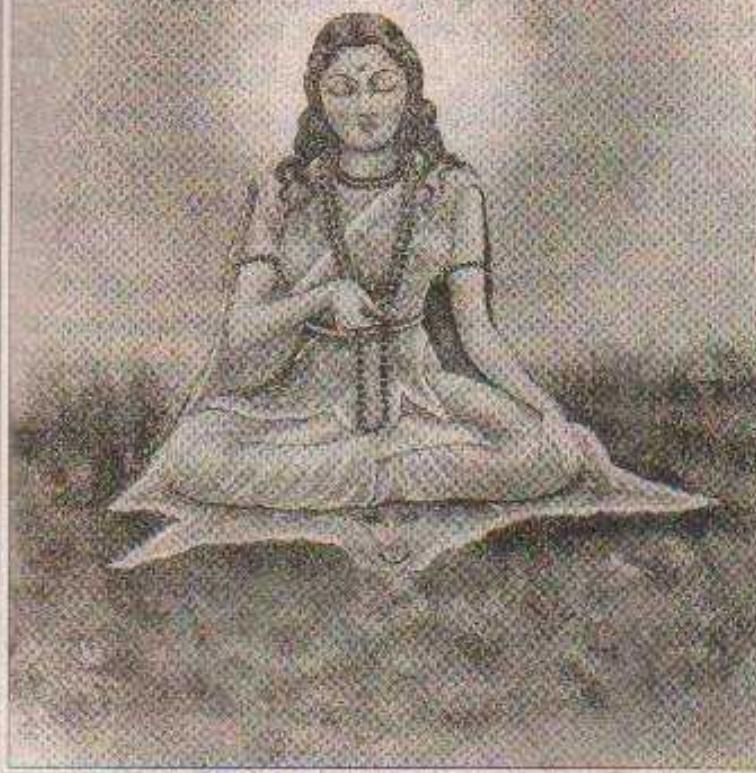
जब तक पुरश्चरण सम्पन्न नहीं किया जाता, तब तक मन्त्र सिद्ध नहीं होता, प्रस्तुत तेज में कुछ विशेष प्रयोग हैं, और इनमें सफलता का मूल रहस्य पहले पुरश्चरण, तपश्चात् आवश्यक प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, पुरश्चरण द्वारा साधक देवता को ज्ञायत करता है, यह पुरश्चरण किया प्रत्येक विशेष प्रयोग से पहले अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए।

साधना का यह नियम है कि या तो कोई मन्त्र न प्रयोग अनुष्ठान हाथ में ही न लो और यदि अनुष्ठान प्रारम्भ कर देते हों तो किर उसे विधिविधान सहित पूरा करो। जिस प्रकार हम अपनी नाभारिक गतिविधियों में भी नियम ले चलते हैं, तभी जीवन सूचारू रूप से चल सकता है (भोजन, शौच आदि उद्बन्न और रात्रि के अलग-अलग कार्य हैं) और सही समय

पर सही कार्य सम्पन्न करने से ही अनुकूलता मिलती है, इसी प्रकार साधनात्मक अनुष्ठान का भी कुछ विशेष नियम तथा समय रहता है, जिसे मुहूर्त कहा जाता है, उसी समय सम्पन्न करना चाहिए।

### पुरश्चरण विधान

पुरश्चरण विधान में मन्त्र को चेतन्य किया जाता है, आपन



की पूजा होती है, आधार शक्ति की पूजा होती है, दीपक को साक्षी रखकर मन्त्र अनुष्ठान का सकलम लिया जाता है, भूत शुद्धि दृश्यादि कियाएं सम्पन्न की जाती हैं, जिसमें साधना में साधक गुद्ध होकर अनुष्ठान सम्पन्न करता है, मूल रूप से पुरश्चरण विधान किसी शुभ मुहूर्त में सम्पन्न करना चाहिए इसके लिए जब गुरु पूज्य नक्षत्र हो, ग्रहण थोग हो, दीपावली अवधि होती का समय हो, नवरात्रि हो अथवा कोई अन्य मुहूर्त हो तभी पुरश्चरण किया सम्पन्न की जाती है।

### विद्यान

जिस देवता की पूजा करनी हो, उसका वित्र अपने सामने लगाएं नया साथ ही गुरु वित्र भी स्थापित करें, अपना आसन सामने रखें और उस बैठ कर सामने दीपक जलाएं, साधक

यह किया रखना कर शुद्ध वस्त्र पुरश्चरण कर के ही करें, अपने सामने ताम्र पात्र में जल और आचमनी अवश्य रखें अब दीपक प्रस्तुति कर निम्न मन्त्रों से इक-एक बार आचमन करें आचमन किया में साधक ताम्र पात्र में आडगनी छारा दाहिने हाथ से जल लेकर अपने बाएं हाथ में लेते हुए उसे ग्रहण करता है-

ॐ भूः आत्म तत्त्वाय स्वाहा ।

ॐ भूवः विश्वतत्त्वाय स्वाहा ।

ॐ स्वः शिवतत्त्वाय स्वाहा ।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वतत्त्वाय स्वाहा ।

अब साथ थो ले इसके बाढ़ हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र तीन बार पढ़े आसन शुद्धि करें-

### आसन शुद्धि मन्त्र

पृथिवीति मन्त्रस्य मेस्तपुष्ट ऋषिः

कृमो देवता सुतलं छन्दः आसन

पवित्रीकरणे विनियोगः ।

अब साधक अपने आसन के सामने एक चिकोण बनाएं और उस चिकोण पर गन्ध, पूज्य, अष्टात, कुकुम अपित करें तथा हाथ में जल लेकर “ॐ आधारशक्ति कमलासनाय नमः” कह कर उपरें करें तथा अपनी आधार शक्ति पृथिवी से निम्न प्रार्थना करें-

ॐ पृथ्वी त्वया भूता लोका देवि त्वं विष्णुना भूता

त्वं च भारत्य मा देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

तत्पश्चात् अपने बाएं हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ की उंगलियों से जल से सभी दिशाओं में छोटे मारे और भूत शुद्धि मन्त्र पढ़े -

अप सर्पन्तु ते भूता ये भूता भूवि संस्थिता ।

ये भूता विघ्न कर्ताररस्ते गच्छन्तु शिवाजया ॥

अब भैरव पूजन करना है, हर अनुष्ठान में भैरव पूजन आवश्यक है, यदि भैरव की मूर्ति हो तो उसे स्थापित करें अथवा मानसिक रूप से ध्यान करने हुए भैरव की निम्न मन्त्र से प्रार्थना करें -

तीक्ष्ण वंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोप म।  
ग्रेवाय नमस्तभ्य अनुजां दातुर्महसि ॥

अब अपने बाएँ पैर से जमीन पर तीन बार प्रढार करें  
तत्पश्चात् शैरव को गन्ध, पृष्ठ, अक्षत चढ़ाएं तथा दीपक  
को ढेखते हए निम्न मन्त्र बोलें-

के कर्म साक्षिण दीप देवतायै नमः ।  
अब दीपक की गन्ध, पुण्य अक्षत चढाय नथा प्रार्थना करें-  
भो! दीप! ब्रह्म रूपस्त्वं ज्योतिषां प्रभुरव्ययः ।

यावत्कर्म समाप्तिः स्यात्तावत् त्वं सुस्थिरो भव।

अब साधक अपने कार्य की पूर्ति हेतु जो साधना कर रहा है, उसका सकल्प ले। संकल्प का विधान है कि अपने दाहिने हाथ में जल लेकर अपना नाम, पिता का नाम, अपना शोत्र, मन्त्र का नाम, कामना तथा मुहूर्त का उच्चारण अवश्य करें। नीचे एक उदाहरण स्पष्ट किया जा रहा है -

अमृकस्य पुत्र अमृक गोत्रोत्पत्तः अमृक गार्भाद्वं अमृक  
मन्त्रस्य अमृक कामना शिळवर्ण अमृक तिथो अमृक संख्याक  
मन्त्र नपथ अहे करिज्ये ।

पेस्ता कह जल सूमि पर छोड़ दें। अब साधना में जो माला  
प्रयोग में ले रहे हैं, उसे न्यान करा कर गन्ध, पुष्प, अक्षत,  
धूप एवं पजन करे विर माल्स को हाथ छोड़ने हुए निम्न प्रार्थना  
करें-

माले माले महामाये सर्वं शक्तिं स्वरूपिणी ।

चतुर्वर्गस्त्वयि न्यरुतस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥

उब माला को सामने रख दें तथा जो विशेष अनुष्ठान करता है, वह प्राप्ति-भ करें।

पुरुषचरण प्रक्रिया सम्पन्न करने से मन्त्र जप वशोश ही पूर्ण रहता है, यदि अनुष्ठान मेंचर लालू मन्त्र जप का विधान है तो यदि साधक पुरुषचरण किया सम्पन्न कर ले तो उसे उत्तम दृग्गति वालीस छजार ही मन्त्र जप करना पड़ता है।

आगे चार विशेष प्रयोग किये जा रहे हैं, जो कि साधक पुरुषरण की किया सम्पन्न कर अवश्य ही सम्पन्न करें तो तत्काल सफलता मिलती है। इन मन्त्रों का प्रयोग केवल पुरुषरण के पश्चात् ही किया जाता है और विशेष नियम यह है कि इन चारों अनुष्ठानों को सम्पन्न करते समय अर्थात् जितने दिन अनुष्ठान चले उन्ने दिन साधक दिन में एक बार घोड़न करें भूमि पर अथवा तख्ता पर शायद करें, कोध पर निवासन रखें ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें, किसी दूसरे का

## ੧-ਦੀਗ ਏਕ ਅਪਮੂਲਿਆ ਨਿਵਾਰਣ

ଅନୁଷ୍ଠାନ

किली पुराने शिव मन्दिर में जा कर पहले गणेश जी की ओर फिर शिव जी की पूजा करें, सत्प्रश्नात् घर आ कर गणेश तथा शिव दोनों का पूजन करें, गणेश पूजा में “ॐ गं गणपतयै नमः” मन्त्र की एक माला का जप करें, अपने सामने तीन मधुरुपेण स्तुताक्ष तथा ग्यारह हकीक फल्खर स्थापित करें, इनके चारों ओर मिन्टर से एक धेरा बना दें, मध्य में शिवलिंग स्थापित कर हाथ में जल लेकर महावेव पूजन का निम्न विनियोग पढ़ें, तथा अंगन्यास और हृदय-न्यास करें -

विनियोग

ॐ अश्य श्री मृत्युञ्जय सदाशिवो देवता अमुक  
गोत्रोत्पन्नस्य अमुक शर्मणो मम समस्त रोग  
निरसन-पर्वकं अपमत्य निवारणायै जपे विनियोगः ।

कह कर छाथ का जल भूमि पर ढोढ़ दें, पुनः शाङ्खन्यस  
सम्पन्न करे-

करन्यान

ॐ अंगष्ठाभ्यां नमः

ज तर्जनीभ्या नमः

सः सद्यमाभ्यां नमः

सं अनामिकाभ्यां तमः

प्रालय क्वनिष्ठिकामां नमः

अंगन्यास

ॐ हृदयचार्य नमः

जं शिरसे स्वाहा

सः शिखायै वषट्

मां कवचाय है

मात्रा त्रैवत्तिराय वीर्यद

प्राचीन ग्रन्थों का संग्रह

६४८

स्फुटित नविन सर्वथं मीलि बल्डेन्दु-रेखा

च्यवदमृत रसाद्व चन्द्र बन्धके-नेत्रम् ।  
स्व-कर-लसित मुद्रा पाश वेदाक्ष माल  
स्फटिक रक्त मुक्ता गौरमीशं नमामि ॥

### मन्त्र

॥ॐ जू सः मां पालय पालय ॥

इस मन्त्र का सबा लाख जप का अनुष्ठान करना  
चाहिए और प्रतिदिन पांच हजार मन्त्र जप  
आवश्यक है। मन्त्र जप अनुष्ठान के  
पश्चात् पुनः अंगन्यास तथा  
हृदयन्यास करें। अब हाथ  
में जल लेकर --  
“अमेन मल्कृतेन जपेन  
श्री अमृत मृत्युञ्जय  
प्रीयताम्” कह  
कर जल भूमि पर  
छोड़ दें। दस  
अक्षर की यह  
विद्या मृत्यु को  
भी मारने वाली  
कहीं गई है और  
जो साधक मन्त्र  
जप अनुष्ठान के  
पश्चात् इसका  
दशांश हवन कर  
लेता है तो उसे  
पूर्णतया आरोग्यता प्राप्त  
होती है, अपमृत्यु दोष  
निवारण होता है। साधना के  
पश्चात मधुरस्येण स्नान तथा शक्तिक  
पत्थर शिव मन्दिर में जा कर अर्पित कर दें।

साधना सामग्री - ११०/-

अनुष्ठान अदूरा ही छोड़ देते हैं। यह इतना रहे कि जो व्यक्ति  
भूत-प्रेत बाधा से पीड़ित है, उसी व्यक्ति के मुख से भूत  
अलग वाणी बोलता है।

यह प्रयोग रविवार के दिन सम्पन्न करना चाहिए, साधक  
स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर भूत-प्रेत बाधा से शसित  
व्यक्ति को अपने सामने बिठाले, अब अपने सामने एक  
लकड़ी के बाजार पर पीला बल्ट बिठो कर उस पर १०८

काजल की बिन्दियाँ लगाएं, प्रत्येक

बिन्दी पर एक एक सरसों की ढेरी

बनाएं सबसे आगे झारह

देखियों पर ज्याहत

ताजोत पल रखें, ये त

देखियों पर एक-एक

सुपारी रखें,

देखियों के मध्य

में भूत-प्रेत

निवृति वन्त्र

स्थापित करें,

अब इसके

चारों ओर

पानी की

सात प्रदक्षिणा

दें तथा निम्न

मन्त्र का १०८

बार काली

हकीक माला से

उच्चारण करें, मन्त्र

जप से महले भूत-प्रेत

निवृति यन्त्र (ताबीज) का

गन्ध अक्षत से पूर्वन करें और

यन्त्र के नीचे मानवत्र पर निम्न मन्त्र

लिख कर रखें।

### मन्त्र

॥ ही ही शूताय वश्ये फट ॥

जब १०८ बार मन्त्र जप हो जाय तो अपने सामने बाधा  
शसित व्यक्ति पर सामने रखी हुई सरलों में से दाने उठा कर  
उपरोक्त मन्त्र पढ़ते हुए उस पर सरलों फेंकें, यह कार्य २१  
बार करें, ऐसा करने पर भूत बाधा शसित व्यक्ति के मुख से

### २-भूत-प्रेत बाधा निवारण अनुष्ठान

पुरश्वरण के पश्चात् यह अनुष्ठान प्रबल मानसिक शक्ति  
वाले साधक को ही सम्पन्न करना चाहिए, कमज़ोर शक्ति  
वाले साधक इस अनुष्ठान में घबरा जाते हैं और जब भूत  
जाग्रत होकर बोलता है, तो वे सहन नहीं कर पाते हैं और

मृत आवेश में बोलने लगता है और जो व्रस्ति की वह मांग करे वह वस्तु उपलब्ध कराएं, फिर मृत आधा पीड़ा नहीं देता।

जृहस्य साधकों को चाहिए कि इस ताबीज को काले टोरि में पिरो कर जिस दिन श्रेष्ठ चन्द्रमा हो, उस दिन कंठ में धारण कर लें अथवा अपनी सन्तान को पहना दें तो उन्हें मृत-प्रेत, दाकिनी, शक्तिवी तथा नजर इत्यादि आधा का सामना नहीं करना पड़ता।

साधना सामग्री- ३००/-

### ३-जिह्वा कीलन एवं शत्रु विद्वेषण अनुष्ठान

साधकों को चाहिए कि जब तक कोई शत्रु उन्हें प्रत्यक्ष हानि पहुँचाने का प्रयास न करे अथवा शत्रु ने डूढ़ा मुकदमा, अथवा मानहानि न की हो, तब तक विशेष नात्रिक प्रयोगों से बचना चाहिए, यह स्थान रखें कि असत्य बोलने वाले और दुराचारी साधक किसी ही साधना करे, देवता उस पर अपनी कृपा नहीं करते।

शत्रु पीड़ा बढ़ जाय तो किसी एकान्त स्थान पर जा कर आक के पते पर चिना भस्म की स्थाई बनाकर लोहे की गलाखा में निम्न मन्त्र लिखे और सात भैरव चक्र स्थापित करें तथा पते और भैरव चक्र के चारों ओर काले तिल का धेंग बना दें।

#### मन्त्र

ॐ नमो आकाश पूरिणि पाताल पूरिणि मधु-मांस-आहार अक्षिणी अमुकस्य जिह्वां कीलय कीलय स्वाहा॥

अब इस मन्त्र का १०१ बार जप कर आक के पते को कील सहित नमीन में जड़ दें, यह प्रयोग सात दिन तक सम्पन्न करें भयंकर से भयंकर शत्रु भी परास्त हो जाता है शत्रु की बुद्धि घट हो जाती है और वह साधक की इच्छानुसार कार्य करने लगता है।

नियमित रूप से पुरश्चरण सम्पन्न कर ये चारों प्रयोग सम्पन्न करने चाहिए, पुरश्चरण के अचाव में इन साधनाओं की कोई उपयोगिता नहीं है, ये प्रयोग साधकों के लिए बरदान हैं, और उनके जीवन की समस्याओं को सहज रूप से लुलझाने में सहायक हैं।

साधना सामग्री- १४०/-

### ४-लक्ष्मी प्राप्ति अनुष्ठान

लक्ष्मी प्राप्ति के लिए तो व्यक्ति इस युग में सब कुछ करने को तैयार रहता है, सब माया लक्ष्मी की ही मानी जाती है और लक्ष्मी साधना के प्रथान देव हैं-मणिभ्रद, जो साधक मणिभ्रद देव का नियमित पूजन करता है और वह पुरश्चरण विधान के पश्चात, तो उसे आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बनते हैं। जब मणिभ्रद साधक के सामने उपस्थित होते हैं तो उनका रूप बड़ा ही उत्तम होता है, उस साधक को विचलित नहीं होना चाहिए, बड़ा ही संयम और संयम और निष्ठा आवश्यक है। इस साधना हेतु प्रधान रूप से एक नारियल जो कि बनता हो, उस पर तीन टीकी लनाएं तथा अपने घर के दूजा स्थान में जहाँ साधन करती है वह स्थान गोबर से लीप दें और लकड़ी के पद्मे पर पीला बस्त चिढ़ा कर इस नारियल को स्थापित कर उस पर “ॐ मणिभ्रदायै फट्” लिखे और इसका पंचोपचार पूजन करें। नारियल के आगे एक छोटे से ताल पात्र में तांदीन रूप मणिभ्रद यन्त्र स्थापित करें और दानों और लकड़ी की आठ शक्तियों के सदरूप आठ मणिभ्रद सिद्धि चक्र स्थापित कर इनका भी पूजन इन सब सामग्री से करें।

उब साधना में साधक भब्से पहले संकल्प लें और गुरु पूजन करें, तैरव पूजन करें जिससे साधना में कोई व्यवथान न आये, कोई डर न लगे। तत्पश्चात् नीचे लिखे गये मणिभ्रद मन्त्र का प्रतिदिन एक हजार जप करना है, यह मन्त्र जप बोलने ‘कमलगद्वा माला’ से ही सम्पन्न किया जाता है-

#### मन्त्र

ॐ नमो मणिभ्रदाय आमुध-धराय मम लक्ष्मी वांछितं पूरथ पूरथ ऐही कली ही मणिभ्रदाय नमः॥

इस प्रकार नियमित पूजन और मन्त्र जप करने से साधक को २१ दिन बाद रात्रि के कुछ विशेष समेत प्राप्त होते हैं। मैंने अनुभव किया है कि मणिभ्रद देव अपने उत्तर स्थान प्रकट होते हैं और प्रसन्न होकर साधक को लौटी, जप, सहटे इत्यादि का नम्बर भी देते हैं। २१ दिन की साधना के पश्चात् पूजा में प्रयुक्त नारियल को पीले कपड़े में बांधकर तिजोरी में रख देना चाहिए।

आप अपने दो मित्रों को पवित्रा सदस्य बनाएं तथा कार्ड के ६ पर अपने दोनों मित्र का पता लिखकर ऐने कार्ड मिलने पर ₹. ४९०/- की दी. पी. द्वारा आपको इन साधनों की मंत्र रिक्ष प्राप्त प्रतिष्ठायुक सामग्री देने वाले दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पवित्रा देजी जाएगी।

# जीवन लाइ



यो तो विद्या भी रोग के शमन हैं आज चिकित्सा विज्ञान के पास अद्भुत उत्तर है, परंतु ग्रन्ति के गार्थ्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है कि मात्री योगों का उद्भव जन्माव्य के मन से ही होता है। जब परंपरके दुष्प्रभावों को बढ़ि गति इत्यावधि कर लिया जाए, तो योग इसकी रूप से शाक्त हो जाते हैं।

## १. अपनी शारीर को बीमार करें इका अद्वितीय प्रयोग क्यै

शायद ही कोई व्यक्ति ऐसा हो, जो रोगशस्त नहीं हो, कई रोग ऐसे होते हैं, जो दीर्घकाल तक बने रहते हैं। अन्य चिकित्सा प्रणालियों का सहारा लिया तो जाता है, परंतु उनसे छुटकारा पाना बोडा मुश्किल हो जाता है... और यह दोषावस्था धीरे-धीरे रोगों को मृत्यु की ओर धकेलने लगती है, ऐसे में वह किसी चमत्कार की भावना से आड़-कूँक करता है, परं निराशा ही हाथ लगती है। यदि वह उधर-उधर मटकने की अपेक्षा इस लघु प्रयोग को आजमा कर देख ले, तो वह अपने आपको पहले से भी ज्यादा स्वस्थ अनुभव करने लगेगा।

दाहिने हाथ में जल लेकर अपना नाम व गोत्र का उच्चारण कर, यह संकल्प लो, कि मैं पूर्णतया रोगमुक्त होने के लिए यहप्रयोग सम्पन्न कर रहा हूँ, ऐसा कहकर जल को जमीन पर छोड़ दें, मन सिद्ध व प्राण प्रतिष्ठित 'रोगनाशक यंत्र' को अपने सामने स्थापित करें, कुंकुम, अक्षत, पृथग् धूप व दीप से उसका पूजन करें। उसके पश्चात १३ मिनट तक 'रोगनाशक यंत्र' को एकटक देखते हुए मन ही मन निम्न मन्त्र का उच्चारण करें—  
मंत्र  
॥ॐ कली सर्व रोग मुक्ताय फट॥

मंत्र का जप करने हुए यह भावना मन में धारण करें, कि यंत्र में से रोगनाशक मूळम व तीव्र राशिमया निकल कर मेरे भीतर प्रविष्ट हो रही है, जो मेरे रोगों का नाश करने में सहायक है और जिनसे मेरे शरीर का व्याधियों का शमन हो रहा है।

तीन दिन तक इस प्रयोग को करने से रोगी धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगेगा। यदि रोगी स्वयं इस प्रयोग को न कर सके, तो उसके नाम का संकल्प लेकर कोई भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है। तीन दिन बाद यंत्र को लाल रंग के वस्त्र में बांधकर किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री पैकेट - ₹५०/-

## २. दया आप मोटापे की ओब अद्वाक द्वी बहे हैं?

शुलशुली ब्राह्म, मोटी गर्दन, पेटपर मांस चढ़ा ही और पैर स्वयं का बोझ उठाने से मना कर रहे हीं, तो आप किस प्रकार स्वयं को आकर्षक या सुन्दर कह सकेंगे? सीनदर्य का तो प्रथम चरण ही सांचे में ढली हुई देहयष्टि होती है। फिर अपने इस मोटापे की ओर निरन्तर अग्नसर होते हुए देह पर किस प्रकार से ऐसा अंकुश लगाया जाए, जिससे निरन्तर बड़ता मोटापा न खिर्फ सक सके, बल्कि धीरे-धीरे अनावश्यक चर्बी भी छठने लगे और देह पुनः सुडौल बन सके?

ऐसा सम्भव हो सकता है इस प्रयोग के माध्यम से - शुक्रवार को प्रातः स्नान कर बालों को खोल दें। सफेद वस्त्र चिठ्ठाकर उस पर कुंकुम से स्वस्तिक की देही बना कर उस पर हिरादी का स्थापन करें। गुटिका के समझ पी का तीपक लगाएं, दीपक में एक लौंग भी ढाल दें। फिर बजासन में बैठ कर निम्न मंत्र का ३३ बार उच्चारण करें-

#### मंत्र

॥ॐ ह्री ह्री फली ॐ॥

यह प्रयोग सात दिन का है। सात दिन के उपरान्त दूध से बनी सामग्री में गुटिका डालकर उसे किसी निर्जन स्थान पर रख दें, मोटापे में कमी आएगी।

साधना सामग्री पैकेट-₹१०/-

३. अन में एकाग्रता लिमिट हो सकती है इस तब्दि की भी-

केवल बुद्धिजीवी वर्ग में आने वाले व्यक्तियों के लिए ही नहीं, किसी भी स्त्री या पुरुषों के लिए मन में एकाग्रता का होना नितांत आवश्यक स्थिति होती है, क्योंकि जिसका मन ही एकाग्र नहीं हो सकता, वह किसी कार्य को पूर्णता दे सकेगा तो कैसे? मन का बेचेन रहना एक अलग स्थिति होती है, जबकि एकाग्रता न होने की स्थिति वह होती है जहां मन में कोई चिंता न होते हुए भी वह किसी एक कार्य या विचार पर अधिक देर टिक नहीं सकता है और ऐसी ही स्थितियों के लिए एक पृथक प्रयोग का विवरण प्राप्त होता है जो इसी स्वरूप में वर्णित प्रथम प्रयोग से मिल है। यद्यपि मन का बेचेन होना और एकाग्र न होना - ये दोनों बातें सामान्य रूप से एक ही प्रतीत होती हैं, किन्तु दोनों में सूक्ष्म सा भेद होता है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए साधक के पास एक मंत्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित पंचमुखी रुद्राक्ष होना आवश्यक होता है, जिसे वह किसी भी सोमवार की प्रातः, किसी ताम्र पात्र में केसर से स्वस्तिक बनाकर उसके ऊपर स्थापित कर निम्न मंत्र का २१ बार उच्चारण करें। यह सात दिवसीय प्रयोग है।

#### मंत्र

॥ॐ रुद्राय मनसैकाशयं स्थापनं ॐ ॐ नमः॥

मंत्र जप के पश्चात आठवें दिन रुद्राक्ष को गले या दाहिनी भुजा में धारण कर लै तथा २१ दिनों तक धारण करने के पश्चात किसी शिव मंदिर में विसर्जित कर दें। चंचल बुद्धि वाले बालक के लिए उनके माता-पिता भी यह प्रयोग संकल्प करके सम्पन्न कर सकते हैं।

साधना सामग्री - ₹१०/-

#### ४. दृश्या आप विशिष्ट द्वेषीजभाव हैं?

आज कल शिक्षा और शिक्षा में भी उच्च शिक्षा प्राप्त करना कोई उत्तरी बड़ी बात नहीं रह गई है, जिसे कि आज से लगभग पचास वर्ष पूर्व थी। परंतु बड़ी-बड़ी डिगियों हासिल करने के बाद जब युवक नौकरी हेतु आवेदन करता है, तो जहां एक कुर्सी होती है, वहां कुर्सी के एक हजार दोवेंदार होते हैं। यानि प्रतियोगिता इतनी अधिक बढ़ गई है, कि एक अनार सौ बीमार वाला किससा ही गया है। उस पर भी किसी की सिफारिश काम कर जाती है, तो किसी की रिश्वत, सामान्य व्यक्ति तो बुद्ध बन जाता है।

यह तीव्र प्रयोग ऐसे सभी व्यक्तियों के लिए रोजगार के अवसर खोल देता है। किसी बुधवार के दिन अपने सामने 'विजय गणपति यंत्र' को अक्षत का आसन देकर स्थापित करें। यंत्र के ऊपर एक 'हकीक पत्थर' स्थापित करें। फिर हाथ में जल लेकर उपनी रोजगार प्राप्ति हेतु मनोकामना व्यक्त करें। इस प्रयोग को यदि साधक यह संकल्प लेते हुए करें, कि सफल होने पर श्रेष्ठ गुरु कार्य करेगा, तो निश्चित रूप से यह प्रयोग सफल होता है। यंत्र के सामने निम्न मंत्र का ११ दिन तक नित्य कम से कम बीस मिनट तक जप करें-

#### मंत्र

॥ॐ श्री ग्ली फट॥

जप समाप्ति के बाद अक्षत के जिन द्वारों से पंत को आसन दिया या, उसे चूहों अथवा चिडियों को खिला दें। ११ दिन तक ऐसा करें, उसके बाद समस्त सामग्री को जल में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री - ₹१०/-

# वक्ष्या की वाणी

ब्रेंड -

यह मास आपके लिए उत्तमाभ्युधक रहेगा, परंतु दिन भी घर के बाह्यावरण में थोड़ी कलह पैदा हो सकती है, जिससे आपको सावधान रहना है। जीविका कार्य में मनचाही उत्तमि, विद्या प्राप्ति में सफलता, या किसी प्रतियोगिना में सफलता ये इस मास के कुछ प्रमुख आकर्षण है। आपको चाहिए कि व्यर्थ समय बबंदिन करे, गमन प्रकार के मिश्रों से दूर रहे, और केवल अपने लक्ष्य की ओर ध्यान दें। अगर आप ऐसा कर पाए तो यह नव वर्ष आपके लिए अत्यंत हितकारी साबित होगा। इस मास की साधना है बुध ग्रह साधना और इस मास की अनुकूल तिथियाँ हैं ३, ६, १२, २३, २५।

वृष्टि -

आप हमेशा अपने मन में कुछ न कुछ विचार करते रहते हैं। इसी कारण से आपने विछुने ले, महिनों में अद्युत कुछ खोया भी है। जीवन को केवल सोचना नहीं अपितु जीना भी है। आपके जीवन में इस समय व्यथा का मध्य है, हो सकता है किसी पुराने परिवास में भूलकात हो जाए, जो कि की लाशपूर्ण मिल जाए। आपको चाहिए कि अप पूर्ण उत्साह के साथ जीवन को गिए और हर स्थिति का लाभ उठाए। ऐसा करेंगे तो निश्चित ही जीवन के सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाएंगी। इस मास की साधना है कमला यंत्र साधना और इस मास की अनुकूल तिथियाँ हैं, ४, १२, १६, २८।

मिथुन -

इस मास रात्र्य पक्ष में बाधाओं के आने से तनाव उत्पन्न हो सकता है। सहयोगी साथ छोड़ सकते हैं, फिर भी मांगलिक कार्यों के लिए योग बनेंगे। रुका हुआ धन वापस प्राप्त होने के योग, परस्ना आकस्मिक धन प्राप्ति की योग नहीं, अतः व्यथा के कार्यों में धन व्यय न करें। नवीन विवादों में वैर न फैसाए, यात्रा योग सामान्य ही रहेगा।

जीवन साथी से, वैदारिक भद्रभेद हो सकता, शक्ति बनाए रखें। स्वेच्छा की ओर से सूखुद सामाचार प्राप्त होने, एवं साधनात्मक दृष्टि ये ४ से १६ तारीख विशेष लाभप्रद मिल जाएंगे। इस मास की विशेष नाप्राप्ति है कुलेर साधना और अनुकूल तिथियाँ हैं ३, १२, १८, २१, २५।

कर्कि -

यह मास आपके लिए विशेष उत्साहवर्धक रहेगा। आपकी कई इच्छाएँ पूर्ण होंगी। ऐम प्रसंगों में सफलता प्राप्त होगी, फिर भी घटिया लोगों से दूर ही रहें। इस मास आपको विशेष आध्यात्मिक उत्तमि भी प्राप्त होगी, और आपका मन उन्होंने विषयों में लगा रहेगा। इस मास आप अधिकारियों से मिलकर बातचीत करके सुके हुए काम बना सकते हैं। सामाजिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी और समाज में इसी कारण से आपका मान सम्मान रहेगा। अतिथियों के आगमन से प्रसन्नता होगी, और आप शत्रु पक्ष पर अपनी प्रभुता जमा सकेंगे। वैसे तो यह मास हर प्रकार से शुभ है, परं फिर भी व्यवहा का धन व्यय न ही करें तो अच्छा है। इस मास युक्त साधना करें। विशेष तिथियाँ हैं ३, ६, १०, १७, २१ और २८।

सिंह -

जो आप कार्य करना चाहते हैं उने सज्ज बूज के साथ करें। स्थानांतरण के योग बन सकते हैं। अधिकारियों से मेल-मिलाप करके चलें। इस माह आपको सहकर्मियों से अनुकूलता प्राप्त होगी, एवं मांशलिक कार्यों में भी अनुकूलता मिलेगी। अद्वालती मामलों को लेकर संसक्रिता बरतें। घरेलू मामलों को लेर तनाव समाप्त होगा। व्यापारिक विस्तार हेतु यात्रा योग होगा। परंतु यात्रा में सावधानी बरतें। ऐम प्रसंगों में अनुकूलता रहेगी एवं व्यय के परिश्रम से स्थितियों में सुधार होगा। किसी भी प्रकार के वाद विवाद में सावधानी बरतें, क्योंकि आकस्मिक संकट से तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस मास की विशेष साधना है भैरव साधना, और अनुकूल तिथियाँ हैं ४, १०, १२, २१, २८।

कन्या -

व्यर्थ के धन व्यय से बचें रक्षास्त्र की उपेक्षा न करें, एवं खानपान पर विशेष ध्यान दें। आकस्मिक धन प्राप्ति के योग नहीं, रुका हुआ धन प्राप्त ही सकता है। फिर भी आर्थिक दृष्टि मामान्य रहेगी, मिश्रों का सहयोग कुम ही मिलेगा, शत्रुओं की ओर से सावधानी बरतें। कारोबारी मामलों में सुधार होगा, पुराने अनुबंध लाभप्रद सिद्ध होंगे। दाम्पत्य सुख में अनुकूलता होंगी। ऐम प्रसंगों के मामलों में सतक रहें। किया वायदा निभाने में अड़चने आएंगी, किसी भी प्रकार का सहयोग नहीं मिलेगा,

### रायधिक, अपने तथि पुण्य द्विपुष्कर, शिंको योग

स्वर्णीय सिद्धि योग २७ जनवरी, ५, ६ और २२ फरवरी  
सिद्धि योग २३, २६ जनवरी, ४, ६, ७, १५ फरवरी  
द्विपुष्कर योग २३ फरवरी, रविपुण्य योग ३३ जनवरी

जनवर के परिश्रम से ही अनुकूलता प्राप्त हो पायी। हो सकता है कि इस मास आपके कुछ नए संपर्क बने जो आपके लिए लाभाद्यक सिद्ध हो। इस मास की अनुकूल तिथियाँ हैं ६, ८, ११, १३, २८ और साधना है महाकाली साधना।

### तुला -

आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधानी बरतने की ज़रूरत है। अपने खानपान पर धियोग ध्यान दीजिए। विसे इस मास आपको विशेष आर्थिक लाभ होने की संभावना है। किसी को इस समय पैसा न दें, क्योंकि फिर उसके वापस भिन्नने की संभावना कम ही है। आपको चाहिए कि अपने अधिकारियों से बना कर रखें, इस मास आपको कोई विशेष सम्मान अथवा पुरस्कार भी प्राप्त हो सकता है। ऐसे प्रसंगों को लेकर चिंतिज्ञता रहेगी। यह में मार्गलिक कार्यों से वातावरण ब्रेक रहेगा। अनुकूल तिथि यह है २, ८, १३, १५, २३ एवं साधना है मार्गलिक साधना।

### बृहिंश्वक-

कोई कभी भी किसी को ऊचा नहीं उठने देता, वह बात जाठ बांधते हैं। जातय आपके लिए डितकर होगा कि आप इस अवगुण पर कानू पाएं और अगर आप पैसा कर पाएं तो निश्चिन्त हो। यह मास आपके लिए लाभाप्नद पिल्ल होगा। हर क्षेत्र में सफलता आपकी प्रतीक्षा कर रही है। चाहे वह इंटरव्यु हो या कोई प्रतियोगिता इसमें अवश्य ही सफलता मिलेगी। घर परिवार में मार्गलिक कार्य होने के भी बोग हैं। इस मास आप भूर्य जायकी साधना संपर्क करें तो ज्यादा अनुकूल रहेगा। इस मास की विशेष तिथियाँ हैं १, ८, ११, १३, २३, एवं २५ अंत्यनु -

इस मास आपको बहुत ही सनहरे अवसर प्राप्त होंगे। इन्हिन आपको चाहिए कि दृढ़ता के साथ इन अवसरों का पूर्ण लाभ उठाएं। यह मास आपको बहुत कुछ प्रदान कर जाएगा। परं किर भी ज्यादा ऊचा न उठे, जमीन पर अपनी जड़े जमाए रखें। सबको साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करें, आपको अपनी शत्रुओं की तादाद नहीं बढ़ानी है। नित्य अपने इह का ध्यान कीजिए। इस मास की विशेष साधना है मोती शंख साधना और अनुकूल तिथियाँ हैं ३, ११, १६, २५ और २९।

### मकर-

इस महिने आप पिछले महिनों का आलक्ष्य ल्याएं कर पुनः कमर कर कर अपने कर्म क्षेत्र में विशेष सकलता भी हासिल करेंगे और अपने आसपास के लोगों में सम्मान के हकदार भी

### यह मास ज्योतिष के दृष्टि से

राजनीतियाँ चाहें तो इस मास देश में शांति रहेगी और राजनीतिक दलों में नीतियों के प्रति एक विचार बदलेगा। लोगों जारी देशों में एक अशांति की लहर उठेगी जिसके ताप्त्य तेज के भाव और आरोप बढ़ेगे। मौसम के कारण प्रस्तुत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा। युद्धाली महोल पूर्ण देश में भी लगेगा।

होंगे। परं आपको एक ज्ञान का ध्यान रखना होगा कि चलते से ज्यादा काम भी रही नहीं है, क्योंकि इससे स्वास्थ्य पर प्रतीकूल असर पड़ता है, क्योंकि इससे स्वास्थ्य पर प्रतिकूल असर पड़ता है। अतः इस ओर से सावधान रहें। आध्यात्मिक क्षेत्र में इस मास आपको विशेष स्विध होगी और आपको पूर्ण बफलता प्राप्त होगी। मिलने पर्व संबंधियों से भयर संबंध स्वाप्ति होंगे। इस मास पूर्ण अनुकूलता हेतु आप पारदेशीर साधना संपर्क करें। इस मास की अनुकूल तिथियाँ हैं १, १२, १५, १६ और २३।

### कुम्भ -

पिछले महीने में जो आपने निर्णय लिए हैं उनपर आप अटल रहें। यह समय आपके प्रेम प्रसंगों को लेकर उत्पाहपूर्ण रहेगा और उनमें सफलता भी भिलेजी आर्थिक कार्यों में भी आपकी रुचि बहुत बढ़ जाएगी। पिछले कुछ महीनों से जो कार्य आप करने की सीधे रहे हैं, तो यह समय बहुत ही अच्छा है, इस समय यदि आप उस कार्य को करते हैं तो सफलता अवश्यमानी है। जो भी कार्य करना चाहते हैं स्वयं के निर्णय भी हो जाएं। नित्य नियुक्तिश्वरानंद स्तवन के 'उल्लोकों का पाठ करें। अनुकूल तिथियाँ हैं १, ८, ११, १३, १५, १७, और २१।

### मीन -

आप स्वभाव से अन्यतंत्र नहीं हैं और यही कारण है कि आप इस क्षेत्र में सफल होते हैं। इस मास आप पर गुरु की विशेष कृपा होंगी जिससे आपके बहुत समय से सोचे गए कार्य अपकलतापूर्वक संपन्न होंगे। इस मास की विशेष साधना है चंद्रशेष साधना और अनुकूल तिथियाँ हैं १, ५, १०, १५, १० और २७।

### इस मास के द्रव, पर्व एवं त्योहार

21 जनवरी माघ कृष्ण पक्ष-३	मगलवार	गणेश चतुर्थी वर
23 जनवरी माघ कृष्ण पक्ष-६	गुरुवार	गीतला वर्षी
28 जनवरी माघ कृष्ण पक्ष-११	बृंदावनवार	बृद्धिला एकादशी
१ फरवरी माघ कृष्ण पक्ष-३०	शनिवार	गीर्जी अमावस्या
६ फरवरी माघ शुक्ल पक्ष-५	गुरुवार	वरात पञ्चमी
८ फरवरी माघ शुक्ल पक्ष-७	शनिवार	नर्मदा जयनी
१३ फरवरी माघ शुक्ल पक्ष-११	गुरुवार	जया एकादशी
१६ फरवरी माघ शुक्ल पक्ष-१५	रविवार	श्री लक्ष्मी नवमी

# साधक शाक्षी हैं

बुरु कृपा से तीन जटिल  
समस्याओं का निवान

गुरुदेव जी भैरो तीन प्रमुख समस्याएं थीं १. जमोन विवाद, २. गुप्त शत्रु, ३. पुत्र प्राप्ति जिससे मैं कई बारों से परेशान था। मैंने अपने एक मित्र श्री रामकिशन जी के बताये अनुसार विनांक २२ जुलाई २००१ को गुरुदेव दिल्ली में आपनी धर्म पत्नी सहित शुभ दीक्षा प्राप्त की और पूज्य गुरुदेव के निवेश अनुसार विश्वसि साधना सम्पन्न की जिसके प्रभाव से प्रथम समस्या एक माह में, दूसरी तीन माह में, तीसरी समस्या का निवान १५ माह में हो गया हमें दिनांक १३-१०-२००२ को पुत्र रनन की प्राप्ति हुई। इस अवसर पर बाबू में जांगीर के गुरुभाईयों के साथ रत्नपुर में लगभग २० गुरुभाईयों के साथ विनांक १४-१२-२००२ को गुरुपूजन एवं यज्ञ सम्पन्न किया गया और मेरा परिवार गुरुदेव का सदैव आभारी रहेंगे ऐसे ही कृपा बनाएं रखें।

अशोक तम्बोली  
महामाता प्रोविजन स्टोर्स,  
रत्नपुर जिला बिलासपुर

## गुरुकृपा महान्

गुरु त्रिमूर्ति को कोटि कोटि प्रणाम गुरुदेव जी मैंने सन १९९५ से गुरु दीक्षा ली है। समय पर मैं कई शिविरों में धारा लिया तथा नित्य गुरु मंत्र का नियमित नाप करता रहा, उच्चके बहुत ही शुभ परिणाम निकले। सन १९९७ की बात है, मैं जोधपुर में होनी शिविर में लौटा था। कि अचानक किसी कार्य ने मुझे बोटर सायकल हाँसे होन्डा से रापपुर जाना पड़ा। बापसी में रात्रि को लौटना पड़ा शाम का वक्त

था ६.३० वा ७ बजे के आसपास का समय था हम दो लोग बोटर सायकल में थे, मैं गुरु मंत्र का जाप करते हुए गाड़ी चला रहा था, कि अचानक एक दूकानेज लाईट के साथ मेरे सामने से गुगरा, जिसके रोशनी से आंखों के ऊपर अधेरा छा गया और गाड़ी सड़क के किनारे उत्तर गई, उबड़ खाबड़ किनारे के कारण हम दोनों आदमी बही गिर पड़े। हमें कुछ भी नहीं हआ गाड़ी की एक खरोंच तक नहीं आई। मैं मन ही मन गुरुदेव को बाल किया और उन्हें अपने बचाव के लिये धन्यवाद अर्पित किया।

एक बार की बात है, सन १८ की मैं और मेरे गुरु भाई प्रताप स्टड साहू हम लोग गुरु चर्चा करते हुये, सरावपानी से बसना की ओर आ रहे थे, कि उसी बक्त एक जंगली लोमही दोडते हुये हमारे सामने तेजी से मड़क से पार हुई। मैंने गाड़ी धीमा किया ही था कि उसी बक्त दूसरी लोमही उसके पीछे दोडते हुयी मेरे होन्डा बोटर सायकल के सामने चक्के से टकरा गई उसकी टक्कर इतनी तेज थी कि हम दोनों गिर पड़े, उस बक्त रोड खाली था, हम लोग चीच रोड पर गिर पड़े। लेकिन चमत्कार देखिए हम बेकल मामूली चीट लगी और गाड़ी को कुछ नहीं हुआ देखने वाले बता रहे थे कि ऐसे एक्सीडेन्ट में हाथ पांव दृट जाते हैं। लेकिन हमें कुछ ऐसा अनहोनी नहीं दूरी ऐसे मूज्या गुरुदेव निरिल को कोटि कोटि प्रणाम जो हर बक्त शिष्यों की नम्रत करते हैं।

लेकिन बासव में जिसके गुरु प्रभु निरिल होते हैं उसे काल मी नहीं दू सकता है।

राजेश साव  
बसना, जिला महापालपुर,  
छत्तीसगढ़

## गुरु कृपा से पुत्र की प्राप्ति

हमारे घर में चार भाईयों में अभी तक अठ लड़कियों के पश्चात गुरु कृपा ने मुझे बस वक्त पुत्र प्राप्त हुआ है, इसके पहले मुझे भी थी लड़कियों थी इसलिए अभी-अभी मैंने लड़का प्राप्त होने पर एक वर्ष पूर्ण होने के पूर्व सबा लाख गुरु मंत्र का जप और भारह निखिल स्वचन पूर्ण करने का संकल्प किया और गुरुदेव ने मेरी पुकार सुनकर मेरी कामना पूर्ण की इसलिये मैं आभारी हूं पुत्र जन्म १२ अक्टूबर २००२ को हुआ बालक पूर्ण स्वस्थ और समकालीन बच्चों में तेज विकसित हो रहा है।

मेरी दोषों सन २००० में गुरु जन्मोत्सव नागपुर शिविर में होने के अलादा मैं कोई उत्तिरिक्त दीक्षा नहीं कर सका किंतु भी गुरुदेव ने कृपा की ओर मैं कृत्य हुआ, अगे भी गुरुदेव की कृपा बनी रही हो तो ही अध्यात्मिक और आर्थिक प्रगति के रास्ते पर चल सकूँगा यहीं मेरा विश्वास है। हमने पुत्र का नामकरण निखिल ही किया यहीं सब गुरु भाईयों की हच्छा भी थी। अभी हमने गुरु पूर्णिमा से मैंने सबा लाख गुरु मंत्र का निखान गुरु किया है जो अभी जारी है।

अनिल केशव केंद्र

हनुमन नगर, नागपुर

## बगलामुखी मंत्र का चमत्कार

गुरुदेव जी आपके मुद्रा से प्राप्त मंत्र चमत्कार करने वाले हैं उन मंत्रों का प्रयोग कर हमें भी कृपा प्राप्त होती है गुरुदेव जी मैंने कई बार बगलामुखी मंत्र का चमत्कार केवा एवं उसी मंत्र से कई लोग पीड़ा से मुक्त होते रहा। बगलामुखी मंत्र एक विशेष शक्ति है। जिसकी सिद्धि कर ली जाव तो किसी भी सेव में विजय श्री होती है। मैं आपका किस शब्द से धन्यवाद करूँ कि आपने हमारे द्वय तुच्छ जीवन में ऐसी बड़ी बड़ी साधना एवं सिद्धियों से अवगत कराया मेरे पालेस में एक आवासी सब जगह हो आया और कई जानकार लोग उस पर मृत बताई कुछ ने तो हजारों की पुजा अटाई। लेकिन उसे कहां से आलाम नहीं लगा। अन्त उसने मुझे ये बताई थे मेरे सामने रोने लगा। और उसने कहा मुझे बचा ले मैंने उसको कहा कि तू रो मत मेरे सदगुरु जी मुझे एक मंत्र दे रखा है, तू उसका चमत्कार केवल मैंने उसे बगलामुखी मंत्र माला से को एक पीथल के पत्ते पर लिखकर बगलामुखी मंत्र माला से तीन बार अभिमंत्रित कर बाहर दिया और मैंने कहा अब तू चिन्ता मत करना वो आवासी वो तीन दिन के अन्तर स्वस्थ हो गया सदगुरु जी ये आपकी ही मुझ पर कृपा है आपकी ही

ही शक्ति ही कार्य करती है।

प्रकाश निखिल  
राजस्थान ग. प्र.

## गुरु कृपा से दुर्घटना टली

पूज्य गुरुदेव जी ने दुर्घटना का दूष्य स्वचन में दिखाकर अनहोनी टाल दी। मैं नित्य गुरु पूजन करता हूं। विंगट चार वर्षों से साधक परिवार से जुड़ा हूं। एक दिन मैं सोकेट से बैंकल व्हायस घर आ रहा था तो स्वचन में देखे दृश्य की तरह ही एक टक नें रघन रघन से सामने से फैरी तरफ आने लगी। मैं सचेत कर्दमों से धोरे धोरे चल रहा था भूल खाली थी पर जैसे ही टक मेरे एकदम समीप आया तो मेरे पांछे से टक और मेरे बीच में से एक साधकल सवार तेज रघन रघन से अनानक सामने आ गया उसी वक्त पूज्य गुरुदेव की कृपा से मेरे कथम स्वतः ही सक गए थे, मेरे कथम सकते ही वह साधकल सवार मेरे सीमे से गाढ़ खाना हुआ लड़खड़ाया और अगे निकल गया अगर गुरु कृपा से मेरे कथम नहीं सकते, तो मैं व साधकल सवार गुरुम गुरुम गुरुम गुरुम होकर टक की चेष्ट में आ जाता। ये सारा दृश्य स्वचन में एक दिन पूर्ण दिखाकर व ऐन वक्त में मेरे कदम रोक कर मेरी आपसे जो प्राण रक्षा की इसके लिए आपको कोटि कोटि नमन।

ओंकार सिंह सोनकर  
गुरुदेवही, तुम

## गुरु मंत्र और गुरु कृपा से पुत्र प्राप्ति

मैंने वापी गुजरात में १८ में गुरुदेवा ली है, और कायाकल्प दीक्षा भी ली है। मेरी उम्र करीब ४० वर्ष है, लेकिन मुझे पुत्र प्राप्ति मेरा सौभाग्य नहीं था। डॉक्टर ने जान्च कर बताया था कि आपके वीर्यरक्त में शुक्राणु कम हैं और आप पुत्र प्राप्ति नहीं कर सकते, मैं सदा निराश हताश और दुखी रहा था, गुरु भाईयों ने बताया कि आप चिंता न करो, गुरुदेव है उनकी कृपा न्यारी है, मैं गुरु चरणों में समर्पित होता रहा, उस समय जनवरी २००२ को २३ तारीख गुरु जन्मोत्सव दिवस पर अभिमंत्रित जल गुरु मंत्र कर मैं और मेरी पन्नी दोनों ही पीते रहे और आपकी कृपा से जो प्राप्ति होने वाली थी वह ही गई और आप हम खुशी से शूम रहे हैं, मेरे घर दिव्य बालक का जन्म हुआ है आपकी कृपा सेविनक २६/१०/२००२ को हुआ। मैं पुत्र प्राप्ति की संकल्पना में २१ परिका सदृश्य बनाने वाला हूं। शुभाशीवाद की कामना के साथ जय मुख्य

नारायण भाई  
पद्मासन, गुजरात

# श्रीविवेक-स्तोत्र



धरापोऽन्तिन-गरुद-त्योम-मखे शोऽन्दूक-मृत्ये ।  
सर्व-भूतान्तरस्थाय, शंकराय नमो नमः ॥१॥

\*\*\*\*\*

श्रुत्यन्तःकृत-वासाय, श्रुतये श्रुति-जन्मने ।  
अतीचिद्रयाय महसे, शाश्वताय नमो नमः ॥२॥

\*\*\*\*\*

स्थूल-सूक्ष्म-तिभागाभ्यामनिर्देश्याय शब्दवे ।  
भवाय-भव-सम्भूत दुःख-हन्त्रे नमोऽस्तु ते ॥३॥

\*\*\*\*\*

तक-मागादि-भूताय, तपसां फल-दायिने ।  
चतुर्वर्ण-वदान्याय सर्वज्ञाय नमो नमः ॥४॥

\*\*\*\*\*

आदि-मद्यान्त-शूद्र्याय, निरश्ताशोष-भीतये ।  
योगि-द्येयाय महते, निर्जुणाय नमो नमः ॥५॥

\*\*\*\*\*

विश्वात्मनेऽविचिन्त्याय, विलसन्नन्द-मौलये ।  
कन्दर्प-दर्प-नाशाय, काल-हन्त्रे नमोऽस्तु ते ॥६॥

\*\*\*\*\*

तिषाशनाय विहश्व-वृष-स्कन्धमुपेनुषे ।  
सरिद्-धाम-समाबहु-कपदयि नमो नमः ॥७॥

शुद्धाय शुद्ध-भावाय, शुद्धानामन्तरात्मने ।  
पुशब्दकाय पूर्णायि, पुण्य-नामने नमो नमः ॥८॥

तुष्टाय निज-भक्तानां, शुक्ल-मुक्ति-प्रदायिने ।  
विवाससेऽनिवासाय विश्व-शास्त्रे नमो नमः ॥९॥

त्रिगूर्तं गूल-भूताय, त्रिनेत्राय दिशमभवे ।  
त्रि-धामानां धाम-रूपाय, जन्मान्तराय नमो नमः ॥१०॥

देवासरु-शिरो-रत्न-किरणारुपितांघ ये ।  
कान्ताय निज-कग्निये, दत्ताद्वयि नमो नमः ॥११॥

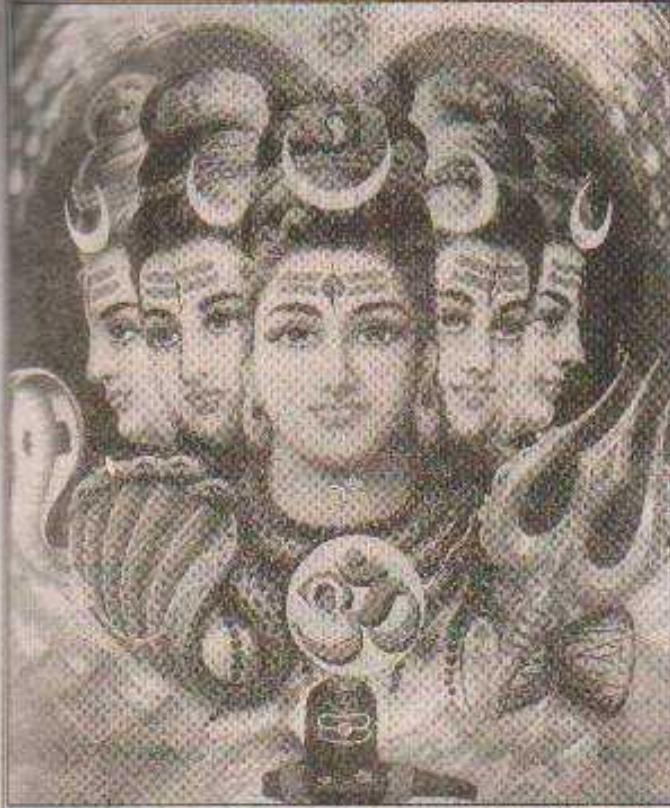
॥ फल-श्रुति ॥

स्तोत्रेणानेन पूजायां, प्रीणयेजजगतः पतिम् ।  
भक्ति-गुक्तिप्रदं भक्त्या, सर्वाङ्गं परमेश्वरग् ॥१॥

तस्यासाध्य क्रिशुवने, न किञ्चिदपि वर्तते ।  
ऐहिकं किं फलं तत्र, मुक्तिरेव करे स्थिता ॥२॥

॥ श्रीशिव-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

पत्रिका के अनले पृष्ठ ७८ में प्रकाशित गुन्युंजय माला मंत्र का जप साधक को आवश्यक रूप में बनाया गया है। अपने पूजा स्थान में बैठकर शुरू पूजन कर अपने दीनों हाथों में प्रार्थना के रूप में हाथ फैलाकर उसमें शक्ताक्ष माला रखा हो और सामने एक कमाल घर लगे अक्षरों में यह तिथोष मंत्र पढ़ते रहें। मंत्र जप करते समय माला के मञ्जकों पर छाया केरते रहें। उस समय एक विशेष प्रकार की ऊर्जा का आह्वान होता है तथा माला आपके लिए वैतर्य हो जाती है। इस शक्ताक्ष माला को आप शादेत धारण कर सकते हैं तथा तिसी ऊर्ज्य द्वारा उपहार में बही दें। शरीर में कोई सोना बहुत्यादि होने पर माला हाथ में लेकर इस मंत्र का जप आवश्यक करें।



अर्थ- १ द्वितीय (पृथ्वी), अप (जल), ३ अग्नि, ४ वायु, ५ आकाश, ६ यजेश्वर (यजमान), ७ सोन (चन्द्र), और ८ मूर्य - ये आठ जिनकी मूर्तियाँ हैं, सभी प्राणियों के हृदय में जो विश्वमान हैं, उन्होंने शंकर को बारम्बार प्रणाम ॥१॥

श्रुति (वेद) में जिनका निवास है, जो साक्षात् श्रुति है, जिनके जन्म का विवरण वेवल श्रुति में ही विख्याइ देता है अर्थात् अन्य किसी के प्रत्यक्ष नहीं होता, जो हन्त्रियों से अदृश्य, नित्य तेज़,- स्वरूप है, उन्हीं शंकर को बारम्बार प्रणाम ॥२॥

जिनहें रथ्यूल या सूक्ष्म रूपों में विभक्त कर निरूपित करना सम्भव नहीं है, जिनसे मंगल-लाभ होता है, सारा प्रवच जिनसे उत्पन्न होने के कारण जो 'यज्ञ' कहलाते हैं, जो ग्रन्थ (गंसार) के दुख को दूर करते हैं, उन्हीं आप शंकर को प्रणाम ॥३॥

जो तक्क-मार्ज के आदि है अर्थात् नक्क-वितक्क द्वारा जिन्हें प्राप्त नहीं कर सकते, जो तपस्या का फल उत्तेह है, लोगों को जो चतुर्वर्ग (धर्म-अर्थ-क्राम-मोक्ष) प्रदान करते हैं, उन्हीं सर्वज्ञ शिव को बारम्बार प्रणाम ॥४॥

जो आदि, मध्य और अन्त से रहिन हैं, जो समस्त भयों को दूर करते हैं, जोगियों के द्वारा जिनका ध्यान किया जाता है, तीनों जूँगों (मध्य, रज, तम) से परे, उन्हीं महो-पुरुष शंकर को बारम्बार प्रणाम ॥५॥

जो रामी प्राणियों की आत्मा है, जिन्हें ध्यान द्वारा पाना कठिन है, जिनके मस्तक पर चन्द्रमा मुकुट के समान शोभायमान है, जिन्होंने कामदेव के गवे को चूर-चूर कर दिया, उन्हीं आप मृत्युनय शिव को प्रणाम ॥६॥

अमृत-मन्थन के समय निकले विश्व का भक्षण कर जिन्होंने विश्व की रक्षा की, जो बुध (बैल) के कन्थ पर बेटकर विहार करते हैं, जिनके जटा-जूट में गंगा नदी विराजमान है, उन्होंने शंकर को बारम्बार प्रणाम ॥७॥

जो शुद्ध (परमात्मा) है, जिनका भाव शुद्ध है, जो निष्पाप व्यक्तियों की उन्नतरात्मा में विद्यमान है, जिन्होंने तिपुरस्तुर का नड़ा किया, उन्हीं पुण्य नामबाले पूर्ण ब्रह्म शंकर को बारम्बार प्रणाम ॥८॥

जो अपने भक्तों के प्रति प्रसन्न रहते हैं, जो मोक्ष और मोक्ष प्रदान करते हैं, जो 'विवासा' अर्थात् दिग्मवर (नग्न) है, जिनका निवास स्थान निश्चिन नहीं है, उन्हीं विश्व-शास्क शंकर को बारम्बार प्रणाम ॥९॥

जो ब्रह्मा-विष्णु-नारेश इस विग्रही के मूल वारण है, जिनके तीन नेत्र हैं, जिनसे लोगों का सर्व-प्रथम मंगल होता है, स्वर्ग-मर्त्य-पाताल इन तीन धारों के जो 'धारा' अर्थात् आश्रय है, जो विभुति-मय है, जो मोक्ष देकर पुनर्जन्म का निवारण करते हैं - उन्हीं शंकर को बारम्बार प्रणाम ॥१०॥

जिनके दोनों चरण देवीं और देवतों के शिरो-रन्धनों की किरणों द्वारा रंगित हैं, अपनी पर्णी को जिन्होंने अपनी आधी रेत अपित कर रखी है, उन्हीं सुन्दर स्वरूप वाले शंकर को बारम्बार प्रणाम ॥११॥

### ॥ फल-हुति ॥

जो व्यक्ति पूजा के समय भुजि-मुक्ति-दावक सर्वज्ञ जगत्-पति परमेश्वर को ऊपर स्तव द्वारा प्रसन्न करते हैं, उन्हें इस त्रिभुति में लोही भी कार्य असाध्य नहीं रहता। ऐहिक अर्थात् मासारिक फल उनके लिए तुच्छ हो जाते हैं और मोक्ष उनके हाथों में रहता है॥१२॥

# सहस्राक्षर-मृत्युजय माला मंत्र

निः शुल्क उपहार



# शत्रुबाधा निवारण यंत्र

व्यक्ति जब उड़ाति की ओर अग्रसर होता है, तो उसकी उड़ाति से प्रतिष्ठा से इच्छग्रिस्त हो कर कुछ उसके मिन्द ही उसके शमु बन जाते हैं और उसे राहयोग देने के स्थान पर वे ही उसी उड़ाति के मार्ग को अवरुद्ध करने के लिए प्रथासरत हो जाते हैं, ऐसे शत्रुओं से निपटना अत्यधिक कठिन होता है ऐसी ही परिस्थितियों से निपटने के लिए यह 'शत्रु बाधा निवारण यंत्र' आपके जीवन के समस्त प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष शत्रुओं को परारत करने में शक्ति होगा, वहीं इस यंत्र के माध्यम से आप अपने समस्त मनोकामनाओं की भी पूर्ति करने में सक्षम होंगे, निश्चय ही यह यंत्र आपके जीवन के लिए अत्यन्त अनुकूलता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा, आपको मात्र इसे पूजन स्थान में स्थापित करने के बाद नित्य यंत्र का सिर्फ सांकेति पूजन करें और कुंकुम, अक्षत, पुष्प इसको अपित्त करना है और तीन माह पश्चात इसे नदी में प्रवाहित कर दें।

## जीवन का सर्वश्रेष्ठदान - 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, बाह्यणों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

## आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्ट कार्ड क्रमांक ३) भेज दें, कि 'मैं अपने एक परिचित को पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाना चाहता हूं एवं २० पूर्व पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'शत्रुबाधा निवारण यंत्र' ३००/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क ३००/- + डाक व्यय १०/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आमे पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छुटने के बाद मुझे १० पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक छारा भेज दें एवं मेरे पित्र को एक वर्ष तक पत्रिका भेजने रहें। आपका पत्र आमे पर हम ३००/- + डाक व्यय १०/- = ३१०/- की बी. पी. पी. से 'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'शत्रुबाधा निवारण यंत्र' भिजवा देंगे, निससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके। आपको बीम पत्रिका भेजकर आपके पित्र को यदस्य बना दिया जायेगा।

## सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली यार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफोन - 0291 - 2432010

# गुरु वार्षि पिंडली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं  
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध वैतन्य दिव्य भूमि

## पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए  
यह योजना प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत  
विशेष दिवसों पर विली 'सिद्धाश्रम'  
में पूज्य गुरुवेच के निर्भेन में ये साधनाएं  
पूरी विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई  
जाती हैं, जो कि उस दिन शाम ६ से ८  
बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि श्रद्धा  
व विश्वास ही, तो उसी दिन से  
साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने  
लगता है।

शनिवार 22-2-2003

### बोढ़ा योगिनी प्रयोग

यह प्रयोग तो अपने आप में अद्वितीय प्रयोग है इसे सिद्ध करने की प्रत्येक  
साधक के मन में इच्छा रहती ही है। बोढ़ा योगिनी साधना सम्पन्न करना अपने  
आप में तंत्र की ऊंचाईयों की ओर कठम बढ़ना है, एक ही प्रयास में तंत्र की  
प्रत्येक जटि को अपने जीवन में उतार लेने की क्रिया सम्पन्न करना है, मरण, मोहन,  
बड़ीकरण, उच्चाटन आदि के साथ-साथ बादुगमन, जल गमन, धोज में पूर्णता,  
अदृश्य होने की क्षमता आदि अनेक अलौकिक शक्तियों की प्राप्त करना, अद्वितीयता  
व श्रेष्ठता को प्राप्त करने की क्रिया सम्पन्न करना है। जिसने भी यह अद्भुत और  
अद्वितीय साधना सम्पन्न कर ली, उसके जीवन के शब्दकोश में फिर असम्मव  
जैसा कोई शब्द रह हो नहीं सकता.... एक दुर्जन्म और सर्वथा गोपनीय प्रयोग....  
और इसे प्रत्येक साधक साधिका सिद्ध कर सकता है।

शनिवार 23-2-2003

### व्यापार वृद्धि कार्य सिद्धि प्रयोग

क्या आप व्यापारी है और आपके अशक प्रयासों के  
उपरान्त भी आपके व्यापार में मनवाही वृद्धि नहीं हो पा  
रही है या किसी व्यापारिक क्लार्ट में ब्राह्मा आ रही है और  
कार्य सिद्ध नहीं हो रहा है उक्तवा आप व्यापार करना  
चाहते हैं, परंतु अनुकूल स्थितियां नहीं बन पा रही हैं, तो  
आपको निश्चय ही इस साधना में भाग लेना चाहिए,  
जिससे कि आपका मनोवृद्धित सिद्ध हो जाए.... आप  
व्यापार करते हैं तो केन आपको कामद नहीं होता है और  
बल्कि आपको वाटा हो जाता है तथा आपके व्यापार को  
किसी ने बांध दिया है इसलिए आप एक बार अवश्य ही  
इस प्रयोग को सम्पन्न बरे फिर देखें कि आपके व्यापार में  
वृद्धि होती है या नहीं, साधना के द्वारा ही आप आपने  
व्यापार में प्रसिद्ध हासिल कर सकते हैं और आगे बढ़  
सकते हैं। इसलिए आप कार्य सिद्धि प्रयोग को एक बार  
अवश्य ही करें।

शोमवार 24-2-2003

### शिव सिद्धि प्रयोग

यह संसार भी विष का सागर ही है, जो छल, झूठ,  
कपट, हिंसा, व्यापिचार, मस्त्यस्त्री विष की चूड़ों से भरा  
हुआ है। प्रत्येक मानव को चाहे अन्याह इनका पान करना  
ही पड़ता है और इसमें उलझ कर उत्साह, उमंग व जीवन  
का अर्थ भूलकर गृह्णु पथ पर अग्रसर हो जाता है।

इस दुर्जन्म संसार में रह कर भी व्यक्ति उत्साह, उमंग  
युक्त हो जाके इसके लिए जीवन में नृत्य, आनन्द व प्रवाल  
की एक मात्र प्रयोग यहीं तो मर्जनी है, यहीं तो उच्चता,  
श्रेष्ठता दिव्यता, तेजरिंद्रिता और सम्पूर्णता है जो आप पा  
सकते हैं।

इस प्रयोग को सम्पन्न कर भगवान शिव की कृपा प्राप्त  
कर और युक्त भी शिव ही है इसलिए इस शिव प्रयोग को  
अवश्य ही सम्पन्न करें।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे।

८. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को 'जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं, मत्र तत्त्व यथा विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य कलाकार फिल्मी युग्मधर्म में सम्पर्क होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क सभवि 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विजेता एवं विजेता द्वारा प्रतिष्ठित सामर्थ्य 'वय पत्रिका, भारत' आपको निःशुल्क प्रवान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका संस्करण नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा उपने किसी एक निवारण के लिए पत्रिका वाणिज्यिक अधिकारी द्वारा कर दिया गया किसी साधनों में भाग ले सकते हैं।

३. परिवार सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को अवृ परम्परा को इस प्रबन्धनाधनात्मक जान धारा दे जाएंकर एक पुनीत एवं प्रशंसनीय कार्य करते हैं। यह आपके प्रयास से एक परिवार में अच्छा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनागत चिन्तन आ पाता है, तो यह आपके जीवन को सांख्यना का ही प्रतीक देता है। उपरोक्त प्रयोग तो निश्चल है और यह कुभा होता ही करतान स्वरूप साधक के त्रास होता है। उपरोक्त को न्योडाकर रखी जो जर्ख के नराज में नहीं नोल सकते।

— ग्रन्थालय वै दीक्षा व साधना का महत्त्व

गार्डी ने बाहर आना ते, जिमेंटिन ने भेद जा किया जाए तो अपि उनमें से तो है, उपरोक्त विषयवाची होता है यदि तब्दी के विज्ञार लड़े, उसमें भी अधिक रमण टट, और उसमें भी अधिक प्रवर्तन म करे, तो औपर पर्याप्त भी यह दिमालय में किया जाए, तो औपर भी बहु गुना श्रेष्ठ होता है। उन रास्तों पर यह लेना है यहाँ स्थापित गुरु चरणों में बैठकर साइन-सम्पर्क करे औपर यह उल्लेख उपरोक्त आश्रम अवयनी गुरुभग्न में ही गठ रखन्धन प्राप्त करें, तो उसमें बड़ा लोभान्वय नहीं करूँ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे सदान होते हैं, जहा विद्य अकिया का बास मरेव रहता हो। जो सदान होते हैं, वे चक्रम रूप से अद्वा सशरीर प्रहित अपने धार में अवश्यक रहते हुए प्राणक भानविषय का सूखम रूप में सचानन करते हो रहते हैं। उसलिए यहि विद्या गुरुधाम में प्रदूष कर गुरु से सधान, पत्र एवं दीशा प्राप्त करता है। और यह जगत् का स्पृश्य कर उक्त भाजा के साथा नायम करता है। तो उसक सीमापात्रे वेवना भी बोका करते हैं।

लीर्ख इन पुस्तकों हैं यह शिष्य अवयव साधक के लिए सभी तीरों में भी पाठन नहीं गुणात्मक होता है, तो व्यक्ति सामग्री के दबावों का इन्होंने कहता है।

शक्तिपात्र यत्कृ गीत्याएं

## छिक्षमस्ता महाविद्या दीक्षा

अत्यन्ती डिव्हम्बरा ऐ कटे  
सिंह फैंडे खाकर अद्यपि माज भैं  
केव वार संचार उज्जवल दौता  
हैं, परंतु व्यष्ट अत्यन्त उष्णकोटि  
की मण्डिगा दीपा हैं।

१३ देखा यात्रा की तो कोरा भारतीय देश  
में स्थानीय लोकगीतों की एक ऐसी विविधता  
नामांकन के अधीन है, जिसके बाहर के बाहर  
वा. जो गीतों की तरफा करना चाहिए, तो उनमें  
से इन गीतों की तरफा करना चाहिए जो विविधता  
नहीं है।

१५ यह वह जागी है कि यह विषय बहुत  
स्थूल वाला वास्तव में है, जोन ने अपने पास  
कर लिया है, विषयिक वह अपनी वार्ता वाली  
प्रणाली के द्वारा उपलब्ध हो जाएगी।

यदि शृंगारी हो, जैसे हुए काल्पनिक लिलाव जाति हो, या केवल प्रकाश का अपेक्षित उभय कोई रंग प्रसरण हो तो यह नीति उचित प्रक्रिया है। इस विकल्प द्वारा आवश्यक तैयार सुनुठता एवं होती है, आर्थिक उत्तरवाच समाप्त हो जाती है, जबकि दूसरी तरफ विकल्प का उपयोग अपर्याप्त बन जाता है। इस साधन द्वारा उत्तरकालीन की सहजता होती है जबकि कामी की विषय प्रतिक्रिया जहाँ पड़ती है।

सम्पर्क: विलासग्राम, 306, कोहाट एनक्सेल, पॉलमपुरा, तड़का (विलास) 34, फ़ोन: 011-27182248, ईमेल: फ़ैक्य: 011-27196700

# MAGNETIC PERSONA

Personality is a strange word. None would debate the point that it is a strong personality that can take one to the highest echelons of success. But what does one mean by a strong personality?

Does it mean being six foot tall? Does it mean being handsome and physically attractive? Or does it mean being rich and affluent? Without doubt beauty, looks and wealth are forces to reckon with but it is also a fact that personality is something more than all these. Mahatma Gandhi was hardly five foot five inches tall and weighed not more than forty five kgs. and yet he had the entire British regime in India on its toes. Napoleon was a pygmy when compared with his generals and yet the authority that he commanded sent shivers through the most brave men.

So it is not necessary to be physically beautiful to possess a strong persona. Lord Krishna was said to be dark complexioned and yet the magnetic attraction that one felt in his presence was something beyond this world.

To succeed in this world it is necessary to possess a magnetic and attractive persona. You might not be born with this virtue but through the power of Mantras you could instil a divine in yourself that could make others feel overawed in your presence. The divine energy in Mantras could instil a unique confidence and radiance in you making you star of every gath-

ering and the centre of attraction everywhere.

Presented here is a Sadhana based on a very such Mantra that is powerful and unfailing. In fact this Sadhana was devised by Guru Sandeepan and given to Lord Krishna. It was by virtue of this Mantra that Lord Krishna was able to virtually hypnotise and influence everyone who came into his contact. Whatever field you are in, this Sadhana could come in handy for it could fill you with charm and magnetism and endow you with a divine persona that could not just steal young hearts but also overawe all and sundry.

In the night of a Friday after 10 P.M. have a bath and wear fresh yellow clothes. Sit facing North on a yellow worship mat. Cover a wooden seat with yellow cloth and on it in a copper plate place a *Sammohan Vashikaran Yantra*. Then worship the Yantra with vermillion, rose petals and rice grains. Light a ghee lamp. Thereafter chant 11 rounds of the following Mantra with *Sammohan rosary*.

*Om Sudarshanaay Vidmahe  
Mahaajwaalaay Dheemahi Tannashchakrash  
Prachodayaat.*

This is a very powerful Sadhana and within three four days its effect would manifest and the changing attitude of the people around you, you could know that the Mantra is working its charm. Repeat this Sadhana for six consecutive Fridays for best results.

Sadhana Articles - 300/-

# BUSINESS TAKE OFF!

Making it big in the business line is the dream of every businessman today. We get into business, start a factory, launch a store with but one aim and that is to earn more and more money. Most of the time there is a lack of planning and there is no proper strategy how one would go about expanding one's venture. All we think of is how to just earn enough to make two ends meet or to get comforts that life offers.

If we look at the spiritual side we shall find that the mistake we make is in running after money and it too keeps drawing us on like the proverbial carrot tempting a donkey.

If we just cared to stop for a moment and meditate on the real purpose of life then money would start chasing us. Meditation or Sadhana makes one's thoughts more creative and one's personality stronger and as a result one is able to make amazing level of success in any field that one enters – even business!

There are so many examples of enterprising men and women in the field of business and most of them had a sudden spark of idea and on its basis they were able to achieve even the impossible. Invariably all of them were people with strong inner-self and an indomitable spirit. Such a very spirit can be had through Sadhanas and powerful Mantras.

Not everyone is blessed with a natural inherent acumen for business. One might try all one wants and one's efforts might even be honest and sincere yet one never seems to arrive. But despairing can take one nowhere. However if one tried this wonderful Sadhana one would witness almost miraculous changes which would herald an era of success in one's life.

It is not necessary that some Sadhana has to be long and tough in order to manifest big results.

In a moment something could click within your mind and you would have started on the path of success not just in the national sphere but in the international market as well. This unique Sadhana if tried with faith and belief could bring you the desired success in business by virtue of increased intelligence, eloquence and a stronger personality.

**On the fifth day of the bright fortnight of any lunar month or on a Monday.** Early morning have a bath and wear fresh clothes. Cover a wooden seat with yellow cloth. On it place some of the books or documents related to your business. Also place a *picture of Saraswati* the Goddess of wisdom and intelligence. In a plate take yellow flowers and on it place *Vartali Saraswati Yantra*. Light a ghee lamp. Offer flowers and vermillion on the Yantra. Pray to the Guru for success in Sadhana. Then meditating on the form of the Goddess chant thus.

*Shavaasanaam Sarpabhooshaam Kartreem  
Chaapi Kapaalakam Chashake Trishoolam  
Cha Dadhateem Cha Chatushkareih,  
Mundmaala Dharaatryakshaam Bhaje  
Vaartaa Sarasvateem.*

Then with a *Mannimala (Manni rosary)* chant five rounds of the following Mantra.

*Om Hreem Shreem Ayeim Vaagvaadini  
Bhagwati Arhanmukh Nivaasini Saraswati  
Mamaasye Prakaasham Kuru Kuru Swaahaa  
Ayeim Namah.*

After the Sadhana place the Yantra and the rosary along with your account books or business documents in a safe place. Daily do chant this Mantra just 11 times. When going out for some important task take the Yantra in the pocket and wear the rosary around the neck.

**Sadhana Articles – 330/-**

# HAPPY FAMILY LIFE

Many times in spite of the best of intentions and efforts a person is not able to enjoy a happy family life. He might try all he can but his home continues to lack true joy and peace.

No doubt money and wealth are important for family life but if these are not accompanied by peace and contentment then life seems useless. There are many homes which are affluent, which can boast of all worldly comforts and modern amenities and in which there seems nothing lacking at least on the surface. But if one cared to prod deeper then one would come up with a virtual hell in which quarrels, fights, jealousy and mutual hatred rule the roost.

There should be several reasons for such lack of peace and joy. Some of them are haunting of the house by evil spirits, malefic effect of planets, curse of some ancestor or the negative atmosphere all around. In such situations one might try all one likes but the type of atmosphere that one dreams of at home never actually materializes. Then it seems that one would be better off in hell. Many are even forced to take the drastic steps like leaving home, fighting frequently and even committing suicide.

The science of Sadhanas encompasses all problems of human life and there is no problem for which there is no solution in it, provided of course one has faith and devotion. There are wonderful Sadhanas through which all negative forces could be banished and peace and happiness made to reign in the house. In fact if one

is facing such a situation then it is a must to try this Sadhana because in the long run the most badly affected are the children. And not just this several future generations could have to suffer.

For negating all evil forces and making the family life happy and contented try this wonderful Sadhana.

This Sadhana should be started in the night of a **Friday** after 9 P.M.. Have a bath and wear fresh yellow clothes. Cover a wooden seat with yellow cloth. On it draw a triangle with vermillion. In it place a *Grihasth Sukh Prapti Yantra*. Sit on a yellow mat facing North. At the three corners of the triangle place three mustard oil lamps. Make a mark of sandalwood paste on Yantra and offer rice grains and flowers. Then light incense.

Next join both palms and meditate on divine form of the Guru and also offer prayers to Lord Ganesh. Then with *rock crystal (Sfatik)* rosary chant five rounds of this Mantra.

*Om Shreem Hreem Grihasth Sukham Dehi Rishikeshaa Namah*

Next place a betel nut in a plate on the right side of the Yantra and offer vermillion, flowers and rice grains on it. Then offer rice grains eleven times on the betel nut chanting *Om Rishikeshaa Namah* each time. Do this for eleven days. After eleven days of Sadhana drop Yantra and rosary in a river or pond.

Sadhana articles - 360-

# NULLIFY EFFECT OF KETU

Every moment a person is affected by the planets and the radiations coming from them. And this is why he has to go through ups and downs in life, through happiness and sorrows, through joy and problems from time to time. In fact life seems to be nothing but a wild roller coaster ride.

No doubt planets do have effect on human life but through the use of Tantra, Mantra, gems etc. the disastrous effect of malefic planets can be reduced to a great extent and the effect of benefic planets magnified.

Ketu is known as a shadow planet and in the West it is called Dragon's tail. In astrology it is considered to be a planet that could bring upheavals. It is the Lord of Pisces and is exalted in Gemini. In the natal chart it is always in the opposite house to Rahu (Dragon's head). Its Dasa is of 7 years.

From Ketu one can know about fearful dreams, accidents, danger from water, imprisonment, death, leprosy, ill feelings, mental derangement etc. With benefic planets like Moon, Mercury, Venus and Jupiter it brings good results while with malefic planets like Rahu, Mars, Sun and Saturn it brings bad results.

If Ketu is not properly situated in the natal chart or its Dasa is going on then it could cause worries and tension and also failure. To reverse this effect or reduce the effect one could try the following small but powerful Sadhana with amazing results. Through this Sadhana one very

quickly gains favourable results and as a result this planet could be appeased.

In fact it is believed that if one is facing any problem to which there seems to be no solution or some adverse situation out of which there is no way out then one should be sure that Ketu is wreaking havoc in one's natal chart. There could be mental disturbance due to malefic moon too but in the case of Ketu there is some secret worry and there is danger of loss of face and respect. Court cases, quarrels with neighbours without any particular reason and disturbance in life are caused by Ketu.

This Sadhana should be tried on a Friday early in the morning. It is a single day Sadhana but quick acting, powerful and unfailing. Have a bath and wear fresh clothes. On a wooden seat make a mound of black sesame seeds and on it place a *Ketu Mahayantra*. Then with a *Blue Hakeek rosary* chant five rounds of the following Mantra.

***Ketave Ayeim Sou Swaahaa.***

After the Sadhana drop the Yantra and rosary in river or pond. This is a very powerful Sadhana for removal of problems and obstacles in life which otherwise seem impossible to overcome. One thing that the Sadhak should remember is that he should not reveal this Sadhana to anyone or talk about it with anyone. Soon after the completion of this Sadhana you shall be amazed by the results that shall come your way.

**Sadhana articles – 300/-**

**19 जनवरी-2003**

## भुवनेश्वरी साधना शिविर

शिविर रथल : बैतड़ सम्प्रग्रह प्रदेश काशर रस्टोर

कॉलोनी रोड चिंचवड गांव, पुणे (महाराष्ट्र)  
जायपुर रिहायर साधक ग्रिनर पिपट दिनबंद शहर,  
पुणे (महाराष्ट्र)।

श्री वसन पाठि -020-4017401, 09823024516 ○ श्री सुरचंद्र  
कुमार-020-5534347 ○ श्री हरिचन्द्र लक्ष्म मेठा सातारा-  
02378-85511 ○ श्री अशोक भागवत-निनाडी-020-7640919 ○  
श्री दत्तात्रेय कविस्कृत-चिंचवड-020-7492031 ○ श्री बालस्याम्ब-  
चिंचवडी-○ श्री लक्ष्मेना वात्सल्य मुंबई (आईआरएस)-022-  
4160213 ○ श्री जानेश्वर हारपुठे श्री राजु साठे- ○ सी.डॉ.  
शिल्पा थोकरे- ○ श्री बाला भावेश नेवाले-चिंचवडी-  
09823183183775 ○ श्री विजय सुवर्ण श्री अक्षन पाठि- ○  
श्री शिवाजी शिंगटे मेठा सातारा-02378-85212 ○ श्री अनिल  
खटवकर मेठा सातारा-02378-85208 ○ श्री विलस पवार मेठा  
सातारा- ○ श्री बाजी राव नाथव-020-7479715 ○ श्री  
विजय जाघव-020-7456769 ○ विजय थोडके (अध्यक्षनगर)-  
0241-429546 ○ श्री एकनाथ कदम (पांचगणी)

**25-26 जनवरी-2003**

## सर्वसिद्धि साधना शिविर

शिविर रथल : बैतड़ इंस्टीट्यूट (सेन्ट्रल रेलवे)

माटुगा वैक्षण के दर, टी. ए. कॉरिया गार्ड,

माटुगा रोड (पूर्व), मुंबई-400095

आयोजक : श्री जगेश सिंह-24309678, 24313992 ○ श्री  
चंद्र टप्परमलानी-24929090 ○ श्री अशोक माई-24313992  
○ श्री हरिश्वर पांडे-28856080 ○ श्री एकनाथ गण-  
28886094 ○ श्री आन्माप्रसाद-95250-2401999 ○ श्री  
विनी भाई-22094098 ○ श्री कृष्ण गोडा-28412860 ○  
श्री तुलसी महारो-22828072 ○ श्री बबनगी-28413280 ○ श्री  
प्रह्लाद सावने-09820602315 ○ श्री एम.पी. लोखडे-  
24121325 ○ श्री संजय सिंह-95251-2546595 ○ श्री अरविंद  
मिश्रा-28856080

**2-3 अप्रैल -2003**

## तैत्र नवरात्रि निखिल दुर्गा शक्ति साधना शिविर

शिविर रथल : आई.टी.आई.

सामुदायिक स्ताररथ्य केन्द्र

राय बरेली (उत्तर प्रदेश)

एन.सी.सिंह-0535-201089 ○ आर.पी.सिंह-0535-  
203671 ○ राजवीर सिंह, कानपुर-0512-612016 ○ लिनिन  
पंचारिया-453453 ○ प्रदीप एवं राजत्रहादुर यादव  
○ पुल्लन एवं मुकेश रस्तोगी ○ देवता वीन 0535-  
309757 ○ शम कुमार ○ जगद्वामा सिंह 205330 ○  
रामचन्द्र नील 212503 ○ ए.पी.सक्षेना 87208 ○ सी.  
जे. यादव 201609 श. नील सिंह, लखनऊ-0522-372010 ○  
रामेन्द्र प्रसाद-207009 ○ एन.के.सिंह एवं के.के.सिंह,  
○ आर.पी.सरोज, भरोड 05414-501042 गोपेश्वर गुरा,  
हेलगढ़ 05244-922045 ○ एस.पी.विष्णु, उन्नाव, मध्यप्रदेश  
यादव, गौरखपुर, राजकुमार रस्तोगी, लख्नीपुर खड़ीपी-05872-  
57568 ○ रम सिंह राठीर, सीनपुर 05862-43239 माधवी  
तिवारी, कल्की चिंचकूट 05198-350119 रामकृष्ण लिखिल,  
शाहजहापुर 05842-26381

**28 फरवरी 1 मार्च-2003**

## महाशिवरात्रि साधना शिविर

शिविर भूल : तर्पिदा उद्यगम कोटे दीर्घ आर कट्ट

जिला शहडोल (मध्य प्रदेश)

आयोजक : आरसीसी सिंह (बिलासपुर)-07818-33343 ○  
विनेश सेनी रायपुर-0771-2652028 ○ श्री हरिजोग शंखवार  
07652-241443 ○ श्री कौशिक श्रीवास्तव 07652-  
240817 ○ श्री आर.आर.साहु (बिलासपुर) 07752-224444  
○ श्री वेद प्रकाश श्रीवास-07757-233823 (pp) ○ श्री  
नारायण आटवाणी 07757-233019 ○ श्री सदाशा चन्द्रा-  
233236 (pp) ○ श्री आर.के.सोना-07759-221012 ○ श्री  
के.के.विवारी (रायपुर)-0771-2242680 ○ श्री लोकेश  
राठीर-बिलासपुर, श्री मदनपुर सेठ खरसिया, संयंज सोन  
कांकिर-07868-22777 ○ श्रीमती सुनीता शर्मा, श्रीमती  
केढ़ी चन्द्रवंशी-धमतरी-07722-232384, के.वरश्यामकर  
(ई.ई.)-धमतरी, श्री सेवाराम वर्मा मिलतरा-07721-64348  
○ श्रूव चन्द्राकर 0788-2333718 ○ संतोष सोनी-चापा-  
07819-245845 ○ विनोद-श्री सी.पी. श्रीवास्तव-07658-  
64589 ○ श्री के.के.चन्द्रा (अभ्य) 07757-267017 ○  
कट्टनी-श्री एस.पी. सिंह-श्री शिवचरण-श्री महेन्द्र उद्धेश-  
श्री बीबी सिंह-श्री जगदीश गुप्ता-श्री बीहान

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81  
With Registrar Newspapers of India  
Posting Date 23-24 every Month

A.H.W

Postal No. RJ/WR/19/65/2002  
License to Post without Pre Payment  
License No. RJ/WR/PP04/2002



## ग्राहु फलवरी में दीक्षा के लिए नियमित विशेष विवर

पूज्य गुरुदेव निम्न नियमित दिवसों पर साधकों से मिलेंगे  
व दीक्षा प्रदान करें। इच्छुक साधक नियमित दिवसों  
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।  
नियमित दिवसों पर गृह दीक्षारं प्रातः 11 बजे से 1 बजे के  
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएगी।

दिनांक  
7-8-9 फरवरी  
स्थान  
शुभद्वाम (जोधपुर)

दिनांक  
22-23-24 फरवरी  
स्थान  
सिलाश्रम (बिल्ली)

वर्ष - 23

अंक - 1

संपर्क :  
प्रय-त्रय-यत्र विद्यान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, डॉलीपे नम्बर-0291-2432010  
सिलाश्रम 306, कोहाट गन्धनेव पीतमपुरा, नव बिल्ली-34, फोन : 011-27182248, डॉली पे नम्बर 11-27196700



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

